₹ 25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जनवरी 2021

- **ख़ूबियत (पालनहारिता) की व्यवस्था**
  -मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
- **परमेश्वर एक है-अनेक नहीं**
  -पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

- **अपराध मुक्त समाज के लिए इस्लामी जीवन व्यवस्था ज़रूरी**
  -ज़हीर ललितपुरी

Millennium Public School

Azad Colony, Pabra Road, Hazaribagh, Jharkhand
Affiliated to CBSE New Delhi. **Affiliation No :** 3430377



CURRICUCLUM

The school has classes from I to class VIII. It is an outstanding Co-Education English medium School, Follows C.B.S.E. curriculum and the syllabus prescribed by N.C.E.R.T. upto VIII.

Physical Education and computer education are considered an integral part of space education of the boys and girs apart from this drawing, dance & Songs are taught as extra activities to sharp their talents.

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 30 अंक 7 जनवरी 2021

उसने (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए दीन का वही तरीका मुकर्रर किया है जिसका हुक्म उसने नूह को दिया था और जिसे (ऐ मुहम्मद स.) अब तुम्हारी ओर हमने वह्य के जरिये से भेजा है और जिसकी हिदायत हम इब्राहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ कि कायम करो इस दीन को और इसमें विभाजित न हो जाओ। । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

वैचारिकी

नियम है सबके लिए समान

लाल बहादुर शास्त्री
जब थे देश के रेल मंत्री
बात यह उसी समय की
प्रासंगिक है आज भी
उनके जीवन का आधार
साद जीवन उच्च विचार
नियमों का पालन करते थे
यही अपेक्षा रखते सबसे
जनरल बोगी के यात्री
सच्चे थे वे जनप्रतिनिधि
बनारस से दिल्ली जाने को
ट्रेन पकड़नी थी उनको
स्टेशन आने में लेकिन
मंत्री जी को हुआ विलंब
लेकिन जब स्टेशन आये
गाड़ी खड़ी देख चकराये
सिगनल तो हो चुका था क्लियर
पर गाड़ी भी खड़ी वहीं पर
यात्रीगण बैठे परेशान
बूढ़े बच्चे और जवान
शास्त्री जी भी बैठ गये जब
भागा-भागा गार्ड आया तब
बोला मुझे मिल गयी थी ख़बर
करना है सर आपको सफ़र
झंडी नहीं दिखायी मैंने
रोके रखी गाड़ी मैंने
सुनकर गार्ड की बातें सारी
शास्त्री जी ने नज़र घुमा ली
गार्ड बहुत ख़ुश था मन ही मन
अब तो पक्का है परमोशन
पर अगले दिन जब वह स्टेशन आया
उसने ख़ुद को पद-मुक्त पाया
काम में जो बेईमानी की थी
उसकी उसे यह सज़ा मिली थी
एक व्यक्ति की प्रतीक्षा में
सैकड़ों को डाला था कष्ट में
नियम है सबके लिए समान
मंत्री हो या आम इन्सान
है ज़रूरत बहुत आज भी
शास्त्री जी जैसे नेता की
उन्होंने बढ़ाया देश का सम्मान
''जय जवान जय किसान''।

● **मुशर्रफ़ अली**

क़ुरआन ज्योति

“या अय्युहन्नासु क़द जाअतकुम मौइज़तुन मिर्रब्बिकुम व शिफ़ाउल लिमा फ़िस्सुदूर वहुदव्वं वरहमतुल लिल मुउमिनीन ।”

ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक ऐसी चीज़ आ गयी जो उपदेश है, दिल की समस्त बीमारियों के लिए उपचार है और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो (उस पर) विश्वास रखते हैं । (10:57)

इस आयत में अल्लाह समस्त मानवजाति को संबोधित करके क़ुरआन का परिचय करा रहा है और घोषणा कर रहा है कि अल्लाह की दयालुता के पात्र वही लोग हैं, जो इस पर अर्थात् अल्लाह की उतारी हुई किताब पर विश्वास रखते हैं और इसके अनुसार अपने जीवन को ढालते हैं ।

यहां पर क़ुरआन की क्रमशः चार विशेषताएं बतायी गयी हैं । पहली विशेषता है ''मौइज़ह'' अर्थात् उपदेश या वे बातें जिनसे हृदय में नर्मी आये । सांसारिक चकाचौंध में जब मनुष्य ईश्वर से दूर हो जाता है तो उसके दिल सख़्त हो जाते हैं । ऐसी हालत में अच्छी से अच्छी बात भी दिल में नहीं उतरती, जिस तरह भूमि अगर कठोर हो जाए तो पानी उस पर से बह जाता है, भूमि उसे सोख नहीं पाती । ऐसी भूमि बंजर हो जाती है, जिस पर एक घास भी नहीं उगती । इसलिए सबसे पहले हृदय को नर्म करने की ज़रूरत है । क़ुरआन को समझ कर पढ़ने से हृदय की कठोरता दूर होती है ।

दूसरी विशेषता बतायी गयी ''शिफ़ा'' हृदय के रोगों के लिए । हृदय का सबसे बड़ा रोग संसार प्रेम है । इसी रोग के कारण घमंड, ईर्ष्या आदि कई रोग जन्म लेते हैं । क़ुरआन हृदय के इन रोगों का उपचार है ।

तीसरी विशेषता बतायी गयी है ''हुदा'' अर्थात् मार्गदर्शन । जब हृदय की कठोरता दूर हो जाती है और क़ुरआन का संदेश उसमें उतरने लगता है तो हृदय रोगों से मुक्त हो जाता है और वह ईश्वरीय मार्गदर्शन का पालन करने लगता है ।

चौथी विशेषता है, ''रहमत'' अर्थात् दयालुता, जो ईश्वरीय मार्गदर्शन के पालन का अनिवार्य परिणाम है । उपयुक्त तीनों चरण से गुज़रने के बाद मनुष्य ईश्वर की दयालुता का पात्र बन जाता है । हमें इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए क़ुरआन का अध्ययन करना चाहिए ।

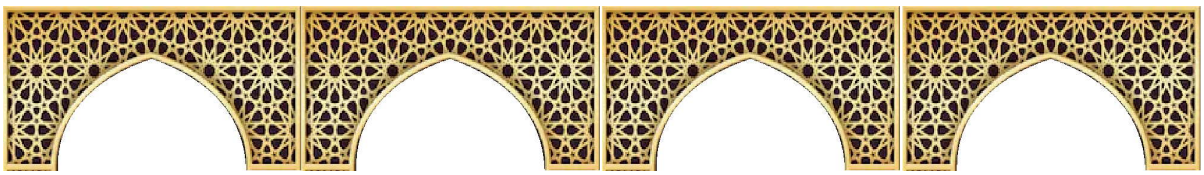

हदीस मंजरी

“अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का कथन है कि, क़ुरआन में पांच प्रकार के विषय हैं–हलाल, हराम, महकम, मुताशाबह, इमसाल । तो तुम हलाल को हलाल समझो, हराम को हराम समझो, महकम पर अमल करो, मुताशाबह पर विश्वास रखो और इमसाल से सीख लो ।” (हदीस)



हलाल अर्थात् वैद्य और हराम अर्थात् वर्जित । हलाल चीज़ों को अपनाना चाहिए और हराम से बचना चाहिए । हलाल और हराम ठहराने का अधिकार केवल ईश्वर के पास है । ईश्वर ने जिसे हलाल ठहरा दिया उसे हराम करना गुनाह है और और इसी तरह हराम चीज़ को भी किसी हाल में हलाल नहीं किया जा सकता ।

महकम क़ुरआन की उन आयतों को कहते हैं जिनका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है । जैसे मौलिक आस्था की बातें, सत्य क्या है और असत्य किसे कहते हैं, भलाई क्या है और बुराई क्या है । इनके अलावा वे सारी बातें जिनका संबंध हमारे सामाजिक जीवन से है ।

मुताशाबह वे आयतें हैं, जिनमें कही गयी बातों तक मानव बुद्धि की पहुंच अभी नहीं है, इसलिए उन्हें पूरी तरह समझ पाना संभव नहीं है । जैसे मौत के बाद के जीवन का वर्णन, आख़िरत में पेश आने वाली बातें आदि । ये वे बातें हैं, जिनको पूरी तरह समझना ईमान लाने के लिए ज़रूरी नहीं है ।

इमसाल से आशय है उदाहरण और पिछली क़ौमों के वृत्तांत जो क़ुरआन में बयान किये गये हैं ताकि पढ़ने वाला उनसे सीख ले सके ।



कहां क्या है ?

नियम है सबके लिए समान (वैचारिकी)	–मुशर्रफ़ अली	3
क़ुरआन ज्योति		4
हदीस मंजरी		5
कब हल होंगी ये समस्याएं? (संपादकीय)		7
रबूबियत (पालनहारिता) की व्यवस्था (आस्था)	–मौलाना अबुल कलाम आज़ाद	9
जब मदीना मुहम्मद (सल्ल॰) का शहर बना (जीवन आदर्श)	–डॉ॰ मुहम्मद हमीदुल्लाह	15
हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम (जीवन आदर्श)	–संपादन प्रभाग	19
क़ुरआन पढ़कर हुई उपास्य की पहचान (चेतना)		24
परमेश्वर एक है–अनेक नहीं (उद्गार)	–पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य	25
रसूल (सल्ल॰) की छवि सहाबियात की दृष्टि में	–नुज़हत यासमीन	27
नबी (सल्ल॰) के सच्चे साथियों का बलिदान	–संपादन प्रभाग	30
सांप्रदायिक सौहार्द के उदाहरण	–ख़ालिदा हुसैन	31
अपराध मुक्त समाज के लिए इस्लामी जीवन व्यवस्था ज़रूरी	–ज़हीर ललितपुरी	33
अंतरधार्मिक विवाह : धर्म, समाज और क़ानून की दृष्टि में	–गुलज़ार सहराई	37
पिता का अशीर्वाद (कहानी)	–प्रवीण कुमार सहगल	43
गिरगिट का सपना (कहानी)	–मोहन राकेश	45
ईसाइयत : क्या सचमुच ईसा (अलैहि॰) का धर्म है?	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	47
बालवीथी		49

संपादकीय

कब हल होंगी ये समस्याएं ?

हमारा देश चौतरफ़ा समस्याओं से घिरा हुआ है । ग़रीबी, बेरोज़गारी, महंगाई, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं ने आम आदमी की मुश्किलें बहुत बढ़ा दी हैं । आख़िर इन समस्याओं का मूल कारण क्या है ? इन्सान की विकृत मानसिकता, नैतिक पतन के साथ ही पूंजीवाद और पूंजीवादी स्वार्थपरक मानसिकता ही इसका मूल कारण है । सामान्य तौर पर आज की हालत को देखते हुए कहा जा सकता है कि देश की व्यवस्थापिका और कार्यपालिका हर हाल में अपने खाने-कमाने में मशग़ूल है । जनता मूकदर्शक की भूमिका निभा रही है । उसके हाथ में अमलन कुछ नहीं ! वोटों की जो ताक़त है, वह भी विशेषकर अब नोटों तले दब जाती है । ज़ाहिर है, बिना पूंजीवाद का दामन थामे लूट-खसोट संभव नहीं है ! अतएव आज सामान्य रूप से देखा जा रहा है कि देश को पूंजीवादी साम्राज्यवाद की आग में झोंकने का काम सत्ताधारी वर्ग और प्रतिपक्षी दोनों कर रहे हैं । देश के राजनीतिक दल इस घिनौने काम में बुरी तरह पारंगत हो चुके हैं । सभी जानते हैं कि ये ही देश की व्यवस्थापिका का निर्माण करते हैं । फिर ये कार्यपालिका में अपने जैसी मानसिकता रखने वालों का प्रोत्साहन एवं संवर्धन करते हैं, जिसके नतीजे में अधिकारियों और कर्मचारियों का पूरा गिरोह रिश्वतख़ोरी, कामचोरी और भ्रष्टता में बेख़ौफ़ तरीक़े से लिप्त हो जाता है !!

फिर हालत यह भी हो सकती है कि हर छोटे-बड़े सभी कामों और सौदों में छोटी रक़म से लेकर अरबों- खरबों की धनराशि कमीशन या रिश्वत का दौर चल जाता है ! ताज़ा हालत यह है कि प्रधानमंत्री कार्यालय ने केन्द्रीय मंत्रियों के ख़िलाफ़ प्राप्त कथित भ्रष्टाचार की शिकायतों के ब्योरे साझा करने से साफ़ इन्कार कर दिया है । पी॰एम॰ओ॰ ने कहा कि इस तरह की सूचना मुहैया कराना जटिल क़वायद हो सकती है । पी॰एम॰ओ॰ का यह बयान ऐसे समय में आया है, जब देश की प्रमुख जांच एजेंसी केन्द्रीय जांच ब्यूरो के एक वरिष्ठ अधिकारी ने केन्द्रीय कोयला एवं खनन राज्य मंत्री हरिभाई पार्थीभाई चौधरी के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं । हमारे देश को बड़े-बड़े घोटाले करने का श्रेय और गर्व प्राप्त है ! इन घोटालों के अनगिनत नाम हैं । वर्तमान में राफेल कांड घूम रहा है । राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, बोफ़ोर्स, चारा घोटाला, ताबूत और हेलीकाप्टर-ख़रीद घोटाला आदि ऐसे कांड एवं 'आमालनामे' हैं, जो देश के कर्णधारों के चाल-चलन को पूरी तरह उजागर करते रहे हैं । केन्द्र और राज्य सरकारों का यही हाल है । एक छोटे-से क्लर्क के पास से करोड़ों की काली कमाई निकलती है ! सरकारी कार्यालय यहां तक कि छोटी अदालतें, रजिस्ट्रार ऑफ़िस आदि भ्रष्टाचार के 'जीवंत' केन्द्र बने हुए हैं । हालत इतनी बदतर है कि किसी को भी अपना काम कराने के लिए रिश्वत देने के अलावा कोई विकल्प शेष नहीं है । रिश्वत न दो तो अधिकारी-कर्मचारी काम नहीं करते ! पिछले दिनों टी॰वी॰ पर एक विज्ञापन चला, वह भी एकतरफ़ा, कि जनता का ही क़सूर है कि वह रिश्वत देती है !! एक शब्द इस पर नहीं आया कि अधिकारी-कर्मचारी रिश्वत क्यों लेते हैं !!! आज रिश्वत को इस प्रकार संस्थागत रूप दे दिया गया है कि ग़रीबों को तो सिरे

से उनका जायज़ हक़ रिश्वत, पक्षपात और प्रदूषित मानसिकता के कारण नहीं मिलता । सांप्रदायिकता और फासीवाद का भयानक झूठ किसी फैक्ट्री के सदृश उत्पादित किया जा रहा है ! विशेषकर हिन्दुओं और मुसलमानों को छद्म मुद्दों में फंसाकर लड़ाया जा रहा है । इतिहास के पृष्ठ बताते हैं कि देश की आज़ादी के लिए जो लड़ाई हिन्दू-मुसलमान और अन्य लोगों ने मिलकर लड़ी थी, उनमें आज दूरी पायी जाती है । सांप्रदायिक तनावों में जो लगातार वृद्धि हो रही है, वह भी दूरी, ग़लतफ़हमी और बदगुमानी का कूपरिणाम है । इस सूरतेहाल में सांप्रदायिक और फासीवादी तत्वों को अपना काम करने का 'सुअवसर' प्राप्त होता है । ये तत्व देश की सत्ता-राजनीति पर क़ाबिज़ होकर अंग्रेज़ों की 'फूट डालो, राज करो' की नीति को पूरी तरह अपना रखा है । इनकी पहुंच पुलिस, प्रशासन, मीडिया और न्यायपालिका तक है, जिस कारण देश के अल्पसंख्यक और कमज़ोर वर्गों को अपने भौतिक एवं आस्थागत अस्तित्व को बचाना बहुत कठिन हो गया है । वास्तव में नागरिक और मानवीय अधिकारों की पामाली हमारे देश में एक बड़ी समस्या बनी हुई है । यह अन्यायपूर्ण स्थिति ज़रूर बदलनी चाहिए । ज़रूरत इस बात की है कि शांति प्रिय, न्याय प्रिय और देश व समाज हितैषी हर व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करे, मौलिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों को अपनाए एवं देश को भ्रष्टाचार सहित अन्य समस्याओं के हल तथा चरित्रहीन व मलिन राजनीति से देश को पाक करने के लिए आगे आए ।



रबूबियत (पालनहारिता) की व्यवस्था

✍ **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद**

रबूबियत (पालनहारिता) से आशय है पालन-पोषण और देख-रेख की एक सक्रिय और अनवरत व्यवस्था । एक अस्तित्व को उसकी पूर्णता एवं परिपक्वता के लिए समय-समय पर जैसी भी आवश्यकताएं पड़ें उन सबकी पूर्ति की व्यवस्था होती रहे । साथ ही ज़रूरी है कि यह सब कुछ प्रेम और स्नेह के साथ हो, क्योंकि जो काम प्रेम और स्नेह की भावना से ख़ाली होगा रबूबियत नहीं हो सकता । रबूबियत का एक अशुद्ध-सा नमूना हम उस पालन-पोषण में देख सकते हैं, जिसका जोश मां के स्वभाव में उतार दिया गया है ।

अत: अल्लाह के 'रब्बुल-आलमीन' होने का अर्थ यह हुआ कि जिस प्रकार उसके रचयिता होने ने सृष्टि और उसकी हर वस्तु का निर्माण किया उसी तरह उसकी रबूबियत ने प्रत्येक जीव के पोषण की व्यवस्था भी कर दी है और यह पोषण की व्यवस्था एक ऐसे विचित्र तंत्र के साथ है कि प्रत्येक जीव को जीवन और जीवित रहने के लिए जो कुछ दरकार था वह सब मिल रहा है और इस प्रकार मिल रहा है कि हरेक स्थिति की सुविधा है, हर आवश्यकता का ध्यान रखा जा रहा है, हर परिवर्तन का निरीक्षण हो रहा है और हर न्यूनता एवं अधिकता नियंत्रण में आ चुकी है ।

रबूबियत यह है कि हम देखते हैं कि दुनिया में लाभदायक चीज़ों की मौजूदगी के साथ उनके दान और वितरण की भी एक प्रणाली मौजूद है और प्रकृति केवल देती ही नहीं, बल्कि जो कुछ देती है एक निर्धारित व्यवस्था और एक नियंत्रित क्रम और अनुपात के साथ देती है । इसी का परिणाम है कि हम देखते हैं कि प्रत्येक जीव को जीवन और जीवित रहने के लिए जिस-जिस चीज़ की, जिस-जिस समय और जितनी-जितनी मात्रा में आवश्यकता थी, ठीक-ठीक उसी प्रकार उन्हीं समयों में और उसी मात्रा में उसे मिल रही है और इसी नियम एवं नियंत्रण से संपूर्ण जीवन व्यवस्था चल रही है ।

उदाहरणार्थ जीवन के लिए पानी और तरलता की आवश्यकता है । हम देखते हैं कि पानी के पर्याप्त स्रोत हर तरफ़ मौजूद हैं । एक विशेष क्रम और एक विशेष निर्धारित व्यवस्था के साथ दुनिया में पानी के बनने और वितरण की एक विशेष व्यवस्था पायी जाती है और प्रकृति केवल पानी बनाती ही नहीं बल्कि एक विशेष क्रम और अनुपात के साथ बनाती है और एक विशेष मात्रा के साथ बांटती रहती है । तो यही रबूबियत है ।

यही कारण है कि क़ुरआन ने जगह-जगह पर चीज़ों की मात्रा और परिमाण का उल्लेख किया है अर्थात् इस सच्चाई की ओर संकेत किया है कि प्रकृति जो कुछ देती है एक विशेष परिमाण के साथ देती है और यह परिमाण एक विशेष क़ानून के तहत ठहराया हुआ है ।

यह करुणा और तत्वदर्शिता थी, जिसने पानी पैदा किया, मगर यह रबूबियत है जो उसे इस तरह काम में लायी कि पोषण और रखवाली की सभी आवश्यकताएं पूरी हो गयीं ।

फिर इन सच्चाइयों पर भी विचार करो कि जीवन के लिए जिन चीज़ों की सबसे अधिक आवश्यकता थी सबसे ज़्यादा मात्रा में उन्हें ही पैदा किया गया है और जिनकी आवश्यकता विशेष अवस्थाओं एवं आवश्यकताओं के लिए थी उनमें ही विशेषता और स्थानीयता पायी जाती है । हवा सबसे अधिक आवश्यक थी, क्योंकि पानी और आहार के बिना कुछ समय तक जीवन संभव है, मगर हवा के बिना संभव नहीं अत: इसकी व्यवस्था इतनी बहुतायत में और सामान्य है कि कोई जगह, कोई कोना, कोई समय नहीं जो इससे ख़ाली हो । हवा के बाद दूसरे स्थान पर पानी है, इसलिए हवा से कम मात्रा में पाया जाता है, मगर हर चीज़ से अधिक है । धरती के भीतर मीठे पानी के सोते बह रहे हैं । धरती के ऊपर भी हर तरफ़ नदियां बह रही हैं । फिर इन दोनों स्रोतों के अलावा आकाशीय मंडल की भी व्यवस्था है, जो दिन-रात सक्रिय रहता है । पानी के बाद आहार की आवश्यकता थी अत: हवा और पानी से कम मगर और सभी चीज़ों से अधिक खाद्य पदार्थ भी भूमि और जल पर

उपस्थित है और कोई जीव नहीं जिसके आसपास उसके आहार का भंडार मौजूद न हो ।

ऐसा लगता है कि यह पूरा तंत्र केवल इसीलिए बना है कि जीवन दे और जीवन की हरेक क्षमता की रखवाली करे । सूर्य इसलिए है कि प्रकाश के लिए दीपक का और गर्मी के लिए तंदूर का काम दे । ज़मीन इसलिए है कि विकास के भंडारों से हमेशा परिपूर्ण रहे और हर दाने के लिए अपनी गोद में जीवन और हर पौधे के लिए अपने सीने में पालन-पोषण की क्षमता रखे । संक्षेप में अस्तित्व के इस व्यवस्था का प्रत्येक विभाग केवल इसी काम में लगा हुआ है ।

रबूबियत (पालनहारिता) की व्यवस्था का एकत्व

सबसे अधिक विचित्र मगर सबसे अधिक प्रमुख वास्तविकता रबूबियत के तंत्र की एकरूपता और समानता है । अर्थात् प्रत्येक अस्तित्व के पालन-पोषण की व्यवस्था जिस प्रकार और जिस ढंग से की गयी है वह प्रत्येक विभाग में एक ही है और एक ही मूल एवं नियम रखती है । पत्थर की चट्टान हो या फूल की कली, मनुष्य का बच्चा हो या चींटी का अंडा, सबके लिए जन्म है और जन्म के प्रदर्शन से पहले ही उसके पालन-पोषण की व्यवस्था हो जाती है । फिर बचपन का दौर है और उस दौर की आवश्यकताएं हैं । मनुष्य के बच्चे का भी बचपन है, वृक्ष के वानस्पतिक जन्म के लिए भी बचपन है और तुम्हारी बाहरी चीज़ों को देखने वाली आंखों के लिए कितना ही आश्चर्यजनक क्यों न हो, लेकिन पत्थर की चट्टान भी अपना बचपन रखती है । फिर बचपन वयस्कता और परिपक्वता की ओर बढ़ता है और ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है उसकी दिन-प्रतिदिन की अवस्था के अनुसार एक-एक करके पालन-पोषण के साधन में भी परिवर्तन होता जाता है, यहां तक कि प्रत्येक अस्तित्व अपनी पूर्णता तक पहुंच गया तो फिर नये सिरे से दुर्बलता और विघटन का दौर शुरू हो जाता है, फिर इस दुर्बलता और विघटन का अंत भी सबके लिए एक ही तरह है । किसी सीमा में उसे मर जाना कहते हैं, किसी में मुरझा जाना और किसी में रौंदा जाना । शब्द कई हो गये, पर वास्तविकता एक ही रही ।

''यह अल्लाह ही का काम है कि उसने तुम्हें इस प्रकार पैदा किया कि पहले निर्बलता की दशा होती है । फिर निर्बलता के बाद शक्ति आती है, फिर शक्ति के बाद निर्बलता और बुढ़ापा होता है । वह जो कुछ चाहता है, पैदा करता है । वह ज्ञान और सामर्थ्य रखने वाला है । ''

(सूरह रूम-54)

आंतरिक रबूबियत

फिर इससे भी विचित्र रबूबियत की व्यवस्था का आंतरिक पहलू है । बाहरी तौर पर जीवन और पोषण की कितनी ही व्यवस्था की जाती लेकिन वह उपयोगी नहीं हो सकती थी, अगर प्रत्येक अस्तित्व में उससे काम लेने की ठीक-ठीक क्षमता नहीं होती और उसकी बाहरी व भीतरी शक्ति उसका साथ नहीं देती । इस संबंध में जो सच्चाइयां अनुभव और चिंतन से सामने आती हैं, उनमें दो बातें सबसे अधिक स्पष्ट हैं इसलिए जगह-जगह क़ुरआन ने उनकी ओर ध्यान दिलाया है, एक को वह तक़दीर (भाग्य) कहता है और दूसरे को मार्गदर्शन ।

तक़दीर

तक़दीर का अर्थ है एक अंदाज़ा कर देना, अर्थात् किसी चीज़ के लिए एक विशेष प्रकार की अवस्था ठहरा देना, चाहे यह ठहराव परिमाण में हो या अवस्था में । अत: हम देखते हैं कि प्रकृति ने प्रत्येक अस्तित्व की शारीरिक बनावट और आंतरिक शक्ति के लिए एक ख़ास अंदाज़ा ठहरा दिया है, जिससे वह बाहर नहीं जा सकता और यह अंदाज़ा ऐसा है, जो उसके जीवन और विकास की प्रत्येक अवस्था से ठीक-ठीक अनुकूलता रखता है ।

''और उसने सभी चीज़ें पैदा कीं फिर हर चीज़ के लिए (उसकी हालत एवं आवश्यकता के अनुसार) एक ख़ास अंदाज़ा ठहराया ।''

मार्गदर्शन

मार्गदर्शन का अर्थ राह दिखाना, राह पर लगा देना, निर्देश देना है । यहां केवल मार्गदर्शन की उस श्रेणी का उल्लेख करना है, जो सभी सृष्टि पर उनके पोषण का मार्ग खोलता है, उन्हें जीवन की राह पर लगाता और जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन करता है । प्रकृति का यह निर्देश रबूबियत का निर्देश है और अगर रबूबियत के मार्गदर्शन का सहारा नहीं होता तो संभव नहीं था कि कोई भी जीव दुनिया के जीवन और पोषण की सुविधाओं से लाभ उठा सकता और जीवन की सक्रियताएं प्रकट हो सकतीं ।

यह प्रकृति का वह मार्गदर्शन है जो पहले प्रत्येक सृष्टि

के भीतर जानने की शक्ति जो ईश्वर की ओर से उसके दिल में डाल दी जाती है, बनकर उभरती है फिर इन्द्रियों एवं विवेक के दीपक जला देती है । यह निर्देश की विभिन्न श्रेणियों में से जिज्ञासा और विवेक के मार्गदर्शन की श्रेणियां हैं ।

जिज्ञासा का मार्गदर्शन

जिज्ञासा का मार्गदर्शन यह है कि हम देखते हैं कि प्रत्येक सृष्टि के स्वभाव में कोई ऐसा आंतरिक गुण मौजूद है जो उसे जीवन और पोषण के मार्ग पर अपने आप लगा देता है और वह बाहर के मार्गदर्शन और शिक्षा का मुहताज नहीं होता । मनुष्य का बच्चा हो या पशु का ज्यों ही मां के गर्भ से बाहर आता है अपने आप मालूम कर लेता है कि उसका भोजन मां की छाती में है ।

ज्ञानेन्द्रियों का मार्गदर्शन

मार्गदर्शन की दूसरी श्रेणी ज्ञानेन्द्रियों और मानसिक बुद्धि का मार्गदर्शन है । हम देखते हैं कि हालांकि पशु उस मानसिक शक्ति से वंचित हैं, जिसे बुद्धि और चिंतन कहते हैं, फिर भी प्रकृति ने उन्हें अनुभव और समझ की वे सभी शक्तियां दे दी हैं, जिनकी जीवन एवं जीविका के लिए आवश्यकता थी और उनकी मदद से वे अपने रहने-सहने, खाने-पीने, प्रजनन एवं वंश बुद्धि तथा सुरक्षा एवं देखरेख के सभी कार्य सफ़ाई एवं सुन्दरता के साथ पूरा करते रहते हैं।

मार्गदर्शन की यही श्रेणी है जिसे क़ुरआन ने ईश्वरीय रबूबियत की वह्य (प्रकाशना) कहा है । अरबी में वह्य का अर्थ है 'गुप्त संकेत' यह मानो प्रकृति की वह आंतरिक बुदबुदाहट है जो प्रत्येक सृष्टि पर उसके कर्म का मार्ग खोल देती है ।

''उस (अल्लाह) ने मनुष्य को किस चीज़ से पैदा किया ? वीर्य से पैदा किया, फिर उसकी संपूर्ण आंतरिक एवं बाह्य शक्तियों के लिए एक अनुमान ठहरा दिया । फिर उस पर (जीवन एवं कर्म का) मार्ग आसान कर दिया । ''
(अ-ब-स : 18-20)

यही कर्म की राह आसान कर देना जिज्ञासा एवं विवेक का मार्गदर्शन है जो तक़दीर के बाद है, क्योंकि अगर प्रकृति का मार्गदर्शन नहीं होता तो संभव नहीं था कि हम अपने जीवन की आवश्यकताएं पूरी कर सकते ।

क़ुरआनी साक्ष्यों का स्रोत

अत: यही कारण है कि क़ुरआन ने ईश्वर के अस्तित्व और उसके एकत्व एवं गुणों को जगह-जगह पर रबूबियत की व्यवस्था से प्रमाणित किया है ।

चिंतन-मनन का आह्वान

क़ुरआन के प्रमाण देने के तरीक़े का सबसे पहला स्रोत बुद्धि और चिंतन का आह्वान है । अर्थात् वह जगह-जगह इस बात पर ज़ोर देता है कि मनुष्य के लिए सत्य की पहचान का मार्ग यही है कि ईश्वर की दी हुई बुद्धि से काम ले और अपने अस्तित्व के बाहर और भीतर जो कुछ भी महसूस कर सकता है उस पर विचार और चिंतन करे ।

''और उन लोगों के लिए जो (सच्चाई पर) विश्वास रखने वाले हैं धरती में (अल्लाह की शासन-सत्ता की) कितनी ही निशानियां हैं । और स्वयं तुम्हारे अस्तित्व में भी फिर क्या तुम देखते नहीं ?'' (अज़्ज़ारियात : 20-21)

सत्य पर आधारित रचना

अगर मनुष्य बुद्धि और समझ से काम ले और स्रष्ट जगत में चिंतन करे तो सबसे पहली वास्तविकता जो उसके सामने उभरेगी वह सत्य पर आधारित रचना का जगतव्यापी एवं मौलिक नियम है । अर्थात् वह देखेगा कि स्रष्ट जगत और उसकी हर चीज़ की बनावट कुछ इस तरह की है कि प्रत्येक वस्तु क्रम एवं नियंत्रण के साथ एक विशेष तंत्र एवं नियम से जुड़ी है और कोई चीज़ नहीं जो तत्वदर्शिता से ख़ाली हो :

''अल्लाह ने आकाशों और धरती को तत्वदर्शिता और निहित उद्देश्य के साथ पैदा किया, और निस्संदेह इस बात में ईमान वालों के लिए सत्य के परखने की बड़ी निशानियां हैं ।'' (अनकबूत : 44)

एक दूसरे स्थान पर विशेष रूप से आकाशीय पिंडों से उठाये जाने वाले लाभों की ओर ध्यान दिलाया गया है और इसे सत्य पर आधारित रचना बताया गया है :

''वह (जगत का शासक) जिसने सूर्य को सर्वथा दीपक और चांद को दीप्त बनाया और फिर चांद की गति के लिए पड़ाव ठहरा दिये ताकि तुम वर्षों की गिनती और (समय का) हिसाब मालूम कर लो । निस्संदेह ईश्वर ने यह सब कुछ तत्वदर्शिता और उद्देश्य के साथ ही पैदा किया, उन लोगों के लिए जो जानने वाले हैं (ज्ञान और पहचान की) निशानियां अलग-अलग करके स्पष्ट कर देता है ।''
(यूनुस : 5)

एक और अवसर पर प्रकृति के सौंदर्य एवं आकर्षण की

ओर संकेत किया है और उसे तख़लीक़ बिलहक़ (सत्य पर आधारित रचना) बताया है ।

''उसने आकाशों और धरती को तत्वदर्शिता एवं उद्देश्य के साथ पैदा किया और तुम्हारे रूप बनाए तो बड़ी ही सुंदरता के साथ बनाए ।'' (अत्तग़ाबुन : 3)

इसी प्रकार वह बदले के क़ानून (अर्थात् पुरस्कार एवं दंड का क़ानून) पर भी 'तख़लीक़ बिल-हक़' (एक महान उद्देश्य के अंतर्गत सृष्टि की रचना) से प्रमाण लाता है । तुम देखते हो कि दुनिया में हर चीज़ कोई न कोई विशेषता और परिणाम रखती है और सभी विशेषताएं और परिणाम अनिवार्य एवं अटल हैं, फिर यह कैसे संभव है कि मनुष्यों के कर्मों में भी अच्छी और बुरी विशेषताएं एवं परिणाम न हों और वे अंतिम और अटल न हों । प्रकृति का जो क़ानून दुनिया की हर चीज़ में अच्छे और बुरे का अंतर रखता है क्या मनुष्य के कर्मों में इस अन्तर को भुला देगा ?

''जो लोग बुराइयां करते हैं, क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाए और जिनके कर्म अच्छे हैं, अर्थात् दोनों बराबर हो जाएं, जीवन में भी और मृत्यु में भी । (अगर इन लोगों की समझ-बूझ का फ़ैसला यही है तो) क्या ही बुरा उनका फ़ैसला है ।''

(अल-जासिया : 21)

मआद (मरणोपरांत जीवन)

अर्थात् मरने के बाद के जीवन को भी जगह-जगह पर इससे प्रमाणित किया है । सृष्टि की हर चीज़ कोई न कोई उद्देश्य और लक्ष्य रखती है, अत: ज़रूरी है कि मानव के अस्तित्व का भी कोई न कोई उद्देश्य और लक्ष्य हो । यही उद्देश्य और लक्ष्य परलोक का जीवन है, क्योंकि यह तो हो नहीं सकता कि भूजगत की यह सर्वोत्तम सृष्टि केवल इसी लिए पैदा की गयी हो कि पैदा हो और कुछ दिन जी कर मिट जाए । अर्थात् क़ुरआन के प्रमाण का आधार यह है कि:

1. इसके अवतरण के समय धार्मिकता और ईश्वर की उपासना की जितनी सामान्य मान्यताएं मौजूद थीं वे न केवल बुद्धि के हस्तक्षेप से ख़ाली थीं, बल्कि उनके सभी आधार बुद्धिरहित मान्यताओं पर आकर ठहर गये थे, लेकिन क़ुरआन ने ईश्वर की उपासना के लिए बुद्धि पर आधारित मान्यताएं पैदा कीं ।

2. इसके आह्वान का पूरा आधार बुद्धि और चिंतन पर है और वह विशेष रूप से स्रष्ट जगत के अध्ययन और चिंतन की ओर बुलाता है ।

3. वह कहता है : स्रष्ट जगत के अध्ययन और चिंतन से इन्सान पर यह वास्तविकता खुल जाती है कि सृष्टि की रचना एक महान उद्देश्य के अंतर्गत हुई है, अर्थात् वह देखता है कि इस अस्तित्व जगत की कोई चीज़ नहीं जो किसी ठहराए हुए उद्देश्य से ख़ाली हो और सृष्टि के किसी उच्चतम क़ानून के अंतर्गत उत्पन्न न हुई हो । यहां जो चीज़ भी अपना अस्तित्व रखती है एक निश्चित नियम के साथ उद्देश्यों और तत्वदर्शिता के जगतव्यापी क्रम में बंधी हुई है ।

4. वह कहता है कि इन्सान जब इन उद्देश्यों पर विचार करेगा तो वास्तविकता की पहचान का मार्ग अपने आप उस पर खुल जाएगा और वह अज्ञानता और अंधेपन की पथभ्रष्टताओं से मुक्ति पा जाएगा ।

रबूबियत का प्रमाण

क़ुरआन कहता है, यह बात मनुष्य के स्वाभाविक विश्वास के विरुद्ध है कि वह रबूबियत के तंत्र का अध्ययन करे और एक ''रब्बुल-आलमीन'' के अस्तित्व का विश्वास उसके भीतर न जाग उठे । वह कहता है कि एक मनुष्य अपनी महानता की तरंग और उद्दंडता के बहाव में हर चीज़ से इन्कार कर सकता है, लेकिन अपने स्वभाव से इन्कार नहीं कर सकता । जब वह अपने चारों ओर जीवन और पालनहारिता का एक जगतव्यापी तंत्र फैला हुआ देखता है तो उसके स्वभाव की पुकार क्या होती है ? क्या यही नहीं कि एक पालनहार अस्तित्व मौजूद है और यह सब कुछ उसी का चमत्कार है ।

यह याद रखना चाहिए कि क़ुरआन की शैली यह नहीं है कि वह देखे जाने वाली या मस्तिष्क में मानी हुई कोई छवि बनाए और फिर उस पर बात करके संबोधित को उसे स्वीकार कर लेने या रद्द कर देने पर मजबूर करे । इसका पूरा संबोधन मनुष्य की स्वाभाविक जिज्ञासा और इच्छा से होता है । वह कहता है कि ईश्वर की उपासना की भावना मानव स्वभाव का मूल है । अगर एक मनुष्य इससे इन्कार करने लगता है तो यह उसकी भूल है और ज़रूरी है कि उसे भूल से चौंकाने के लिए प्रमाण प्रस्तुत किये जाएं । लेकिन प्रमाण ऐसा नहीं होना चाहिए जो मन-मस्तिष्क में उथल-पुथल पैदा कर दे, बल्कि ऐसा होना चाहिए जो उसके दिल की गहराइयों में उतर जाए और उसकी स्वाभाविक जिज्ञासा जागृत कर दे । अगर उसकी जिज्ञासा जागृत हो गयी तो वही

उसे लक्ष्य तक पहुंचाएगी ।

''बल्कि मनुष्य का अस्तित्व स्वयं उसके विरुद्ध (अर्थात् उसकी टेढ़ी सोच के विरुद्ध) प्रमाण है, चाहे वह अपनी (जिज्ञासा के विरुद्ध) कितने ही बहाने गढ़ लिया करे ।'' (अल-क़ियामह : 14-15)

रबूबियत की व्याख्या से ईश्वर के एक होने का प्रमाण

वह रबूबियत की व्यवस्था से ईश्वर के एक होने को प्रमाणित करता है, जो रब्बुल आलमीन संपूर्ण जगत का पोषण कर रहा है और जिसकी रबूबियत की स्वीकारोक्ति तुम्हारे दिल के एक-एक रेशे में मौजूद है, उसके सिवा भला कौन इसका पात्र हो सकता है कि बन्दगी और श्रद्धा का सर उसके आगे झुकाया जाए ।

''ऐ मानवजाति ! अल्लाह ने अपनी जिन अनुकम्पाओं से तुम्हें सुसम्पन्न किया है, उन पर विचार करो, क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा भी स्रष्टा है, जो तुम्हें आकाश एवं धरती से आजीविका दे रहा है ? नहीं कोई उपास्य सिवाय उसके तो तुम किधर भटके चले जा रहे हो । '' (फ़ातिर : 3)

रबूबियत से प्रकाशना और ईशदूतत्व की आवश्यकता का प्रमाण

इसी प्रकार वह रबूबियत की व्यवस्था के कामों से मानव सौभाग्य एवं दुर्भाग्य के मौलिक नियमों और वह्य (प्रकाशना) एवं रिसालत (ईशदूतत्व) को भी प्रमाणित करता है । जिस रब्बुल आलमीन ने तुम्हारे पोषण के लिए रबूबियत (पालनहारिता) की ऐसी व्यवस्था स्थापित कर रखी है तो क्या यह संभव है कि उसने तुम्हारी आध्यात्मिक सफलता एवं सौभाग्य के लिए कोई नियम, कोई व्यवस्था, कोई क़ानून न निर्धारित किया हो ? जिस प्रकार तुम्हारे शरीर की आवश्यकताएं हैं उसी प्रकार तुम्हारी आत्मा की भी आवश्यकताएं हैं । फिर कैसे माना जा सकता है कि मनुष्य के आत्मिक सौभाग्य के लिए उसके पास कोई स्रोत न हो ? उसकी पालनहारिता शरीरों के पोषण के लिए आकाश से पानी बरसाए लेकिन आत्माओं के पोषण के लिए लाभ की एक बूंद भी न रखे ? तुम देखते हो कि जब भूमि हरियाली से वंचित होकर मृत हो जाती है तो यह उसका क़ानून है कि रहमत की वर्षा आती है और जीवन की बरकतों से धरती के एक-एक कण को मालामाल कर देती है । फिर क्या यह आवश्यक नहीं कि जब मानव संसार मार्गदर्शन और सौभाग्य की हरियालियों से वंचित हो जाए तो उसके रहमत की वर्षा आकर एक-एक आत्मा को जीवन का संदेश पहुंचा दे । आत्मिक सौभाग्य की यह वर्षा क्या है ? वह कहता है यह ईश्वर की प्रकाशना है । तुम्हें इस दृश्य पर कभी आश्चर्य नहीं होता कि वर्षा हुई और मृत भूमि जीवित हो उठी, फिर इस बात पर क्यों चौंक उठो कि ईश्वर की प्रकाशना आयी और मृत आत्माओं में जीवन की गति उत्पन्न हो गयी ? सूरह अनआम में उन लोगों का जो ईश्वरीय प्रकाशना के अवतरण पर अचंभित होते हैं, इन शब्दों में उल्लेख किया गया है :

''और ईश्वर के कारनामों का जो सम्मान उन्हें करना था, निश्चित रूप से उन्होंने नहीं किया, जब उन्होंने यह बात कही कि ईश्वर ने अपने किसी बन्दे पर कोई चीज़ नहीं उतारी ।'' (अल-अनआम : 91)

''निश्चित रूप से यह ईश्वर ही का काम है कि वह दाने और गुठली को फाड़ता है (और उससे हर चीज़ का वृक्ष उत्पन्न करता है ।) वह जीवित को मृत वस्तु से और मृत को जीवित वस्तु से निकालने वाला है । हां वही तुम्हारा ईश्वर है फिर तुम (उससे मुंह मोड़कर) किधर को बहके चले जा रहे हो ?'' (अल-अनआम : 95)

रबूबियत की व्यवस्था से पारलौकिक जीवन का प्रमाण

इसी प्रकार रबूबियत के कामों से वह मरणोपरांत जीवन (मआद) और आख़िरत (परलोक) को भी प्रमाणित करता है । जो चीज़ जितने अधिक संरक्षण और आयोजन से बनायी जाती है, वह उतना ही अधिक मूल्यवान प्रयोग और महत्वपूर्ण उद्देश्य भी रखती है । और बेहतर उत्पादक वही है जो अपने उत्पाद का उत्तम उपयोग और उद्देश्य रखता हो । अत: मनुष्य जो धरती की सर्वोत्तम सृष्टि और उसके संपूर्ण सृष्टिक्रम का निचोड़ है और जिसके शारीरिक और आंतरिक विकास के लिए प्रकृति ने इतनी व्यवस्था की है, कैसे संभव है कि मात्र दुनिया के कुछ दिनों के जीवन के लिए ही बनाया गया हो और कोई उत्तम उपयोग और उच्चतर लक्ष्य न रखता हो ? और फिर सृष्टि का रचयिता 'रब' है और सर्वोच्च कोटि की रबूबियत रखता है तो कैसे माना जा सकता है कि उसने अपनी एक सर्वोत्तम सृष्टि को मात्र इसलिए बनाया हो कि अललटप और निष्कर्षविहीन छोड़ दे ।

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

संक्षिप्त परिचय

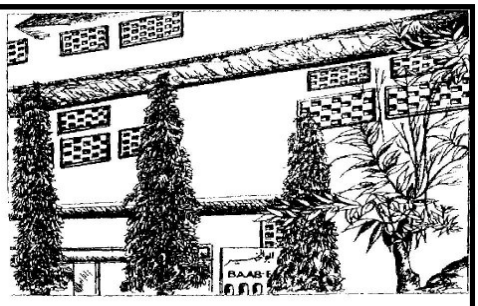

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 32 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 11 बैच 103 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 7 बैच 65 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2019 ई॰ तक 97 अनाथ बच्चियों और 66 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 100 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 18,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से ''मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE
At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190
E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752
BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : **इक़बाल अहमद ख़ां**

जब मदीना मुहम्मद (सल्ल॰) का शहर बना

✍ डॉ॰ मुहम्मद हमीदुल्लाह

इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) हज के दिनों में मिना के मैदान में एक क़बीले से दूसरे क़बीले के कैम्पों में जाते और उन्हें इस्लाम स्वीकार करने के लिए कहने के साथ-साथ बताते कि वे अल्लाह के पैग़म्बर हैं । आप (सल्ल॰) उनसे इस्लाम के प्रचार-प्रसार में सहायता भी लेते। आप (सल्ल॰) का सगा चाचा, मगर जानी दुश्मन अबू लहब आप (सल्ल॰) का पीछा करता और उन क़बीलाई प्रतिनिधियों से मिलकर उन्हें चेतावनी देता कि अगर उन्होंने मुहम्मद (सल्ल॰) की बात मानी या उन्हें सुरक्षा दी तो उन्हें बड़े ख़तरों का सामना करना पड़ेगा । वह बदमाश आप (सल्ल॰) के बारे में अनर्गल बातें भी करता । एक उल्लेख के अनुसार मुहम्मद (सल्ल॰) उस दिन लगभग 15 क़बीलाई प्रतिनिधियों से मिले, जिनकी अलग-अलग प्रतिक्रियाएं रहीं । कुछ ने तो यहां तक किया कि आप (सल्ल॰) को अपशब्दों के साथ कैम्प से निकाल दिया, जबकि कुछ ने नर्म शब्दों का प्रयोग करते हुए बहाना करके टाल दिया और कह दिया कि वे आप (सल्ल॰) को सुरक्षा नहीं दे सकते ।

मगर मुहम्मद (सल्ल॰) ने हर प्रकार की परिस्थितियों का सामना करते हुए इस्लाम का प्रचार जारी रखा । आप (सल्ल॰) की 16वीं कोशिश बड़ी संतोषजनक रही । इस कामयाब कोशिश पर प्रकाश डालने से पहले यह बात बता देना श्रेयस्कर होगा कि मुहम्मद (सल्ल॰) की जिन 15 क़बीलों से वार्ता कामयाब न रही थी, वे तमाम प्रायद्वीप अरब का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । ये क़बीले उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी और मध्य अरब से संबंध रखते थे जो इस सच्चाई का खुला सुबूत है कि काबा का हज कुछ अरब क़बीलों तक सीमित नहीं था, बल्कि पूरा अरब उस पर आस्था रखता था । काबा के इस आध्यात्मिक महत्व से व्यापारी पूरा-पूरा लाभ उठाते थे, क्योंकि मक्का में खेती तथा उद्योग सिरे से थे ही नहीं और न कोई और ऐसा आकर्षण था जिसके कारण मक्का को अरब के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का दर्जा दिया जा सकता ।

नबी (सल्ल॰) की 16वीं कोशिश की कामयाबी का



संबंध क़बीला ख़ज़रज के कुछ लोगों पर आधारित एक ग्रुप से था । यह वही क़बीला था जिससे नबी (सल्ल॰) के दादा अब्दुल मुत्तलिब की मां का संबंध था । यह ग्रुप हज की आख़िरी रस्म को पूरा करने के लिए बाल कटवा रहा था । ये लोग शायद (शैतान के बड़े स्तंभ) जुमरा के क़रीब एक अलग-सी जगह बैठे एक-दूसरे के बाल काट रहे थे। क़बीला 'बनू ख़ज़रज' ने निकट अतीत ही में अपने चचेरे और प्रतिद्वंद्वी क़बीले 'बनू औस' पर भारी विजय प्राप्त की थी । क़बीला बनू ख़ज़रज के लोग यहूदियों के पड़ोसी होने की वजह से दूसरे अरबी क़बीलों की तुलना में ईश्वरीय ग्रंथों, पैग़म्बरों पर अवतरित होने वाली ईश्वरीय प्रकाशना

(वह्य) और भविष्य में आने वाले एक मसीहा (मुहम्मद सल्ल॰) के आगमन जैसी धारणाओं से भली-भांति परिचित थे । जब मुहम्मद (सल्ल॰) ने उनके सामने लुभावनी आवाज़ में क़ुरआन की कुछ आयतें पढ़ीं और स्वयं के अल्लाह के पैग़म्बर होने को स्पष्ट किया तो बनू ख़ज़रज के इस ग्रुप के लोगों को याद आया कि किस प्रकार उनके मजबूर और बेबस पड़ोसी यहूदी उन्हें व्यंग्य से यह कहा करते थे कि "कुछ समय इंतिज़ार करो । जल्द ही अल्लाह का आख़िरी नबी आएगा जिसके नेतृत्व में हम तुम लोगों को परास्त कर लेंगे और हमारा वर्चस्व स्थापित हो जाएगा ।" ग्रुप के सदस्यों ने यह महसूस किया कि मुहम्मद (सल्ल॰) ने उनके समक्ष जो कुछ बयान किया है और जिस प्रकार इस्लाम की ओर बुलाया है, उसको देखते हुए आख़िरी नबी के आगमन की संभावना से बिल्कुल इन्कार नहीं किया जा सकता । उन्होंने सोचा कि क्यों न (इस्लाम स्वीकार करने में) पहल करके मौक़े का लाभ उठाएं ? उन्होंने आपस में विचार-विमर्श किया तो अपने विचारों में मतैक्य पाया । अत: उन्होंने तुरन्त आप (सल्ल॰) के शुभ हाथों पर इस्लाम स्वीकार कर लिया । फिर उन्होंने यह वादा भी किया कि वे वापस यसरिब (मदीना) जाकर इस्लाम का प्रचार-प्रसार करेंगे और उसके परिणामों से अगले वर्ष उसी जगह पर मुहम्मद (सल्ल॰) को वस्तुस्थिति से अवगत करेंगे । और फिर यह हुआ कि वे अगले वर्ष हज के दिनों में आश्चर्यजनक सफलताओं की शुभसूचना लेकर पहुंचे ।

इन दोनों क़बीलों (औस और ख़ज़रज) के बीच रक्तरंजित लड़ाइयों ने शहर के सभ्य लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया था । संख्यात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ और विजयी क़बीले बनू ख़ज़रज ने अपनी बढ़त बनाए रखते हुए मक्का में स्थायी निवास का निश्चय किया हुआ था और वास्तव में उन लोगों ने अपने क़बीले के सरदार इब्ने-उबई को यसरिब का बादशाह बनाने का निर्णय कर लिया था और उसके लिए सोने का ताज बनवाने के लिए स्थानीय सुनार को आर्डर भी दे दिया था ।

क़बीला बनू औस के लोग रक्तरंजित लड़ाइयों से तंग आ चुके थे । इसलिए वे सारी आबादी पर इब्ने-उबई के प्रभुत्व को मानने के लिए आसानी से तैयार नहीं थे । हज से वापस पहुंचने वाले बनू ख़ज़रज के छह लोगों के ग्रुप ने शांति और भाईचारे का जो संदेश इस्लाम के पैग़म्बर (सल्ल॰) से पाया था, उसका प्रचार-प्रसार उन्होंने मदीना में शुरू कर दिया और उसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि बनू ख़ज़रज के साथ-साथ बनू औस के लोग भी इस्लाम की शरण में आने लगे । मदीना में इस्लाम के इन छह प्रचारकों के ग्रुप की यह बात भी प्रशंसनीय है कि उन्होंने क़बीला बनू औस पर अपनी सैन्य श्रेष्ठता को बिल्कुल भुला दिया और इस्लाम स्वीकार करने वाले क़बीले बनू औस के लोगों को अपने बराबर के भाइयों की तरह गले लगा लिया । इसके नतीजे में अगले वर्ष हज के दिनों में 12 परिवारों ने मुहम्मद (सल्ल॰) की सेवा में श्रद्धा और प्रेम अर्पित करने के लिए अपने प्रतिनिधि मिना भेजे । उन प्रतिनिधियों में से 9 का संबंध क़बीला बनू ख़ज़रज से और 3 का संबंध क़बीला बनू औस से था । इन प्रतिनिधियों ने मुहम्मद (सल्ल॰) के सामने वफ़ादारी की शपथ ली और संकल्प किया कि "हम अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं ठहराएंगे, चोरी नहीं करेंगे, (ग़रीबी के डर से) अपनी संतान की हत्या नहीं करेंगे और किसी भली बात में आप (सल्ल॰) की अवज्ञा नहीं करेंगे ।"

जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है–

"ऐ नबी, जब तुम्हारे पास ईमान वाली स्त्रियां आकर तुम से बैअत करें कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी, और न अपनी संतान की हत्या करेंगी और न अपने हाथों और पैरों के बीच कोई आरोप गढ़कर लाएंगी, और न किसी भले काम में तुम्हारी अवज्ञा करेंगी, तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से दुआ करो । निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है ।"

(क़ुरआन, 60:12)

इसके बाद मुहम्मद (सल्ल॰) ने मदीना में अपने 12 प्रतिनिधि नामित किये और उनमें से एक को उनका प्रमुख बनाया । भविष्य में भी जब पूरे मदीना ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो भी उन प्रतिनिधियों की संख्या 12 ही रही । मदीना से आये हुए प्रतिनिधि मंडलों के सदस्यों ने मुहम्मद (सल्ल॰) से निवेदन किया कि उन्हें इस्लाम के आदेश और शिष्टाचार सिखाने के लिए कोई शिक्षक नियुक्त किया जाए जो उनके साथ मदीना जाए । अत: मुसअब बिन उमैर (रज़ि॰) को उनके साथ शिक्षक और प्रशिक्षक के तौर पर भेजा गया ।

मुसअब बिन उमैर (रज़ि॰) ने मदीना में इस्लाम के प्रचार का जो काम किया उससे मदीना के उस समय के समाज का पता चलता है । वहां इस्लाम से सहानुभूति रखने वालों ने मुसअब बिन उमैर (रज़ि॰) को सुझाव दिया कि

"अमुक व्यक्ति को क़ाबू करना अगरचे मुश्किल है, लेकिन अगर वह इस्लाम स्वीकार कर ले तो फिर आपके लिए किसी प्रकार की रुकावट नहीं रहेगी ।" इस सच्चाई का पता चलते ही मुसअब बिन उमैर (रज़ि॰) उस व्यक्ति के बाग़ में पहुंचकर ख़जूरों के एक झुंड के नीचे बैठ गये और बहुत लुभावनी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दिया । बाग़ के मालिक के क़बीले के कुछ लोग हज़रत मुसअब (रज़ि॰) के आसपास इकट्ठे हो गये । जब बाग़ के मालिक और क़बीले के सरदार को अपने बाग़ में एक अजनबी व्यक्ति के 'अनुचित हस्तक्षेप' का पता चला तो वह भाला लहराता हुआ वहां पहुंच गया । उसने गर्जदार आवाज़ में कहा, "तुम मेरी इजाज़त के बिना मेरे बाग़ में घुसे कैसे ? तुरंत यहां से चले जाओ, वरना मैं तुम्हें अपने भाले से मार डालूंगा ।"

हज़रत मुसअब (रज़ि॰) उसकी ओर देखकर मुस्कुराए और मधुर स्वर में उससे संबोधित हुए, "आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, मगर आप एक बार मेरी बात सुन लें । अगर आपको मेरी बात बुरी लगे तो मैं तुरंत यहां से चला जाऊंगा ।"

क़बीले के सरदार और बाग़ के मालिक ने अपना भाला ज़मीन में गाड़ दिया और बोला, "तुमने बड़ी न्यायपरक बात कही है । कहो, क्या कहना चाहते हो ?"

और फिर हज़रत मुसअब (रज़ि॰) ने अत्यंत मनमोहक आवाज़ के साथ क़ुरआन की कुछ आयतें पढ़ीं । अक्खड़ सरदार उससे बहुत प्रभावित हुआ । उसने हज़रत मुसअब (रज़ि॰) से पूछा, "यह क्या है ? और इसका मतलब क्या है ?"

हज़रत मुसअब (रज़ि॰) ने उसे बताया, "यह क़ुरआन की आयतें हैं जो अल्लाह ने अपने आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) पर अवतरित की हैं । वे अल्लाह के पैग़म्बर हैं और क़ुरआन के प्रचारक हैं । क़ुरआन यह कहता है कि अल्लाह केवल एक है । इन्सान की बनायी हुई मूर्तियों को पूजना उचित नहीं । यह सृष्टि अल्लाह ने ही बनायी है । क़ुरआन न्याय, परोपकार और एक रब के अनुपालन की शिक्षा देता है ।"

उस अरब सरदार को और अधिक जानकारी की ज़रूरत नहीं थी, उसने बस इतना पूछा, "ये नियम और सिद्धांत अपनाने के लिए तुम क्या करते हो ?"

जब उसे बताया गया कि उसे अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह का पैग़म्बर मानना होगा, तो उसने भाला उखाड़ा और जोशीले अंदाज़ में वापस चला गया । उसने अपने क़बीले के सभी लोगों को इकट्ठा होने का आदेश दिया । जब उस क़बीले के सभी लोग, ग़ुलाम और सेवक एक जगह इकट्ठा हो गये तो उसने ज़ोरदार आवाज़ में उनसे पूछा, "मैं कौन हूं ?" उसे इस प्रकार क्रोधित देखकर उसके क़बीले के सभी लोगों ने एक साथ उत्तर दिया, "आप हमारे सरदार हैं । सबसे अधिक बुद्धिमान और सबसे अधिक बहादुर ।" फिर उसने अपना भाला हवा में लहराया और बोला, "अगर तुम लोगों ने तुरंत इस्लाम स्वीकार न किया, जिसकी शिक्षा (मेरे बाग़ में मौजूद) वह मक्की मुसअब देता है तो मैं तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन होऊंगा ।" और ऐसा हुआ कि उसका पूरा क़बीला सूर्यास्त से पहले-पहले इस्लाम स्वीकार कर चुका था ।

जुमा की पहली नमाज़

मुसअब बिन उमैर (रज़ि॰) की सफलताओं में दिन-प्रति-दिन वृद्धि होती जा रही थी । वे मुहम्मद (सल्ल॰) को इनकी शुभसूचना लिखित रूप से भेजते रहते थे । शायद वे अपने पत्रों में पैग़म्बर (सल्ल॰) से इस संबंध में और भी आदेश और निर्देश तथा मदीना के लोगों के सवालों के जवाब मंगवाते हों । एक दिन हज़रत मुसअब (रज़ि॰) को पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का एक पत्र मिला, जो उनके एक पत्र के जवाब में लिखा गया था । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उस पत्र में लिखा था–

"हर जुमा के दिन जबकि यहूदी अगले दिन 'यौमे सब्त' (सब्त शनिवार को कहते हैं । यह दिन बनी-इसराईल के लिए पवित्र माना जाता था) मनाने की तैयारी करते हैं, तुम दोपहर के बाद मुसलमानों की जमाअत के साथ नमाज़ का आयोजन किया करो और उसकी इमामत (नेतृत्व) स्वयं किया करो ।" अत: पहले जुमा की नमाज़ में 12 लोगों ने भाग लिया ।

उस समय मक्का और मदीना में से कोई भी मुस्लिम देश नहीं था, फिर भी मदीना में मुसलमानों को अपनी अन्तरात्मा के अनुसार व्यवहार करने की आज़ादी थी । अत: मदीना जैसे उस समय के ग़ैर-मुस्लिम देश में मुहम्मद (सल्ल॰) ने ज़ुहर की नमाज़ की जगह जुमा की नमाज़ अदा करने का आदेश दिया । सूत्रों से यह पता नहीं चल पाया कि हज़रत मुसअब (रज़ि॰) ने जुमा की उस पहली नमाज़ में ख़ुतबा (अभिभाषण) दिया था या नहीं । अलबत्ता इतना ज़रूर है कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) मक्का से हिजरत करके मदीना आये तो आप (सल्ल॰) नियमित रूप से जुमा की नमाज़ से पहले ख़ुतबा दिया करते थे ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 102 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2019-2020 के सत्र के लिए आइ०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLiS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 20,000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 25 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 70 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम पूरा हो चुका है ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK SWIFT CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

Local Donors मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 09955655960, 09801213022
Bank IFS Code No. : UBIN 0530042
BANK, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)
E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन　　एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम

✍ **संपादन प्रभाग**

(गतांक से आगे)

हज़रत इबराहीम ने आग से सही सलामत निकलने के बाद नमरूद के साम्राज्य को छोड़ दिया और अपनी पत्नी और भतीजे के साथ वहां से निकल गये । उन तीनों ने पैदल चल कर एक लंबी यात्रा तय की । इराक़ में बसरा से लेकर यरुशलम तक यह इतनी लंबी यात्रा है कि सवारी से भी जाने में एक लंबा समय लगता है । इबराहीम ने ऐसे समय में एकेश्वरवाद का नारा दिया, जबकि लगभग पूरी दुनिया अंधेरे में डूबी हुई थी। ईश्वर ने इबराहीम को अपना दूत, पैग़म्बर या नबी चुन लिया और उन्हें यह दायित्व सौंपा कि वे दुनिया वालों को सत्य की ओर बुलाए । अत: इबराहीम ने एक बहुत बड़े क्षेत्र में अल्लाह के दीन को फैलाया । नूह के बाद इबराहीम को सबसे प्रतिष्ठित नबी का दर्जा दिया जाता है। उन्होंने अकेले इतना बड़ा काम कर दिखाया जो एक बड़े समुदाय के करने का था । इसीलिए अल्लाह ने उन्हें अपने आप में एक उम्मत, यानी एक समुदाय कहा है और ईश्वर ने यह भी कहा है कि लोगों को इबराहीम का रास्ता अपनाना चाहिए क्योंकि इबराहीम कभी भी एक ईश्वर की सत्ता में किसी को साझीदार ठहराने वालों में नहीं थे ।

बसरा से निकलकर इबराहीम सबसे पहले हर्रान नाम के स्थान पर पहुंचे और वहां से वे फ़िलिस्तीन चले गये । यरुशलम में उन्होंने अपना एक केंद्र स्थापित किया । वहां वे एक-एक इन्सान से मिलते और उसे समझाते कि उसे और दूसरे मनुष्यों को किसने बनाया है और बनाने वाला मनुष्य से क्या चाहता है ? दुनिया में आदमी को क्यों भेजा गया है ? केवल भोग विलास का जीवन बिताने के लिए मनुष्य को दुनिया में नहीं भेजा गया, अत: तुम धन-दौलत से बहुत ज़्यादा प्रेम न करो । वे बताते कि अल्लाह यह कहता है कि जो लोग शक्ति-शाली हैं वे अपने से कमज़ोरों पर अत्याचार न करें, उनके साथ न्याय और भलाई का मामला करें, क्योंकि कमज़ोरों कि पुकार को ईश्वर कभी रद्द नहीं करता । इबराहीम ने ये शिक्षाएं केवल उपदेशों तक सीमित न थीं, बल्कि वे ख़ुद उन पर चलकर लोगों को दिखाते और उनके सामने एक नमूना प्रस्तुत करते ।



हज़रत इबराहीम ने बताया कि लोगों को अपने पूरे समय की एक समय सारणी बना लेनी चाहिए और हर काम के लिए उचित समय देना चाहिए । उसमें कुछ समय ईश्वर की उपासना के लिए अवश्य हो, कुछ समय इसके लिए भी हो कि मनुष्य अपने कर्मों का आकलन करें, कुछ समय वह प्रकृति का गहन अध्ययन करने के लिए भी रखे । और इस बात पर विचार करे कि प्रकृति उससे क्या कहती है । फिर यह कि कुछ समय वह अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए भी निर्धारित करे । वे लोगों को समझाते कि ईश्वर तुम से यह नहीं कहता कि तुम संसार से संन्यास ले लो, बल्कि वह यह कहता है कि तुम संसार में घूमो-फिरो और शिक्षा प्राप्त करो, ताकि तुम्हारा संसार में भी भला हो और परलोक में भी भला हो । मनुष्य को हमेशा अच्छे काम करना चाहिए और इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि आने वाला दिन बीते हुए दिन से बेहतर हो । इबराहीम लोगों को समझाते कि जब भी बोलो सच बोलो और ऐसी बातें बोलो जिससे लोगों का भला हो । जब बोलना बहुत ज़रूरी हो तभी बोलो जहां बोलने की आवश्यकता न हो वहां अपनी ज़ुबान बंद ही रखो । हज़रत इबराहीम इस तरह की शिक्षाएं लंबे समय तक लोगों को देते रहे और उनकी शिक्षा का असर उन बस्तियों पर दिखायी भी पड़ने लगा ।

एक बस्ती का सुधार करके इबराहीम वहां से आगे बढ़ जाते हैं और दूसरी बस्ती में लोगों को शिक्षा देते और उन्हें भलाई के कामों की ओर लाने की कोशिश करते । फिर वहां किसी समझदार व्यक्ति को छोड़ देते जो उस बस्ती के लोगों को सही रास्ते पर बनाए रखे और उन्हें बिगाड़ की ओर न जाने दे और आप वहां से आगे दूसरी बस्ती की ओर बढ़ जाते । इसी तरह मृत सागर के आसपास के एक इलाक़े में उन्होंने अपने भतीजे लूत को तैनात किया और लूत वहां ईश्वर के आदेशों के अनुसार लोगों को सीधे रास्ते पर लाने की कोशिशें करते रहे । लूत को भी ईश्वर ने अपना एक नबी नियुक्त कर लिया अपना पैग़म्बर बना लिया और लूत ने लोगों को बताया कि ईश्वर एक ऐसी शक्ति है जो हमें दिखायी नहीं देती लेकिन उसका अस्तित्व है हमें उसे बिना देखे स्वीकार करना है और यही इस संसार में लोगों की परीक्षा है कि वे एक अनदेखे ईश्वर के आदेशों का पालन कैसे कर सकते हैं । जो व्यक्ति अनदेखे ईश्वर पर जितना विश्वास रखेगा और उसके आदेशों के अनुसार अपना जीवन गुज़ारेगा वह परलोक में उसका उतना ही अच्छा बदला पाएगा ।

ईश्वर अपने नबियों को कुछ ऐसी सच्चाई भी दिखा देता है जो संसार में आम मनुष्यों के लिए नहीं होती । उसका एक कारण यह भी है कि ईश्वर का दूत दुनिया के लोगों से यह कह सके कि यही सच्चाई है, यह मैं जानता हूं और यह मेरा अनुभव है । इबराहीम को भी ऐसा एक अनुभव हुआ, जिसका उल्लेख क़ुरआन में मौजूद है । एक दिन इबराहीम अल्लाह से यह कहने लगे कि मुझे तेरी क़ुदरत का एक नमूना देखना चाहता हूं । ऐ ईश्वर तू मुझे यह बता कि तू मरने के बाद मनुष्य को कैसे जीवित करेगा, जबकि उसका मृत शरीर भी संसार में मौजूद नहीं होगा, बल्कि उसका कोई अंश भी मौजूद नहीं होगा ।

ईश्वर ने पूछा कि क्या तुझे इस बात का विश्वास नहीं है कि मैं ऐसा कर सकता हूं ।

इबराहीम ने उत्तर दिया मुझे विश्वास तो पूरा है लेकिन मैं अपने मन-मस्तिष्क के संतोष के लिए चाहता हूं कि तू मुझे यह दिखा दे ।

फिर ईश्वर ने कहा कि ऐसा करो चार पक्षी ले लो और उन्हें अपना पालतू बना लो, उन्हें दाना-पानी खिलाओ इस तरह कि वे तुम से पूरी तरह घुल-मिल जाएं और तुम्हारी आवाज़ सुनकर तुम्हारी ओर आने लगे । जब ऐसा हो जाए तो फिर उन्हें एक दिन ज़ब्ह कर दो और उनके टुकड़े-टुकड़े करके आपस में ख़ूब अच्छी तरह मिला दो ताकि तुम्हें ख़ुद पता नहीं चल पाये कि कौन-सा टुकड़ा किस पक्षी का है । अब इन्हें किसी पहाड़ पर ले जाकर थोड़े-थोड़े टुकड़े अलग-अलग पहाड़ियों पर बिखेर दो और अपने घर आ जाओ । अब तुम अपने घर से जिन नामों से उन पक्षियों को पुकारते थे वह नाम लेकर उन्हें बुलाओ ।

अत: इबराहीम ने ऐसा ही किया, फिर जब वे पहाड़ियों पर उनके टुकड़े बिखेर कर घर आये और उन्होंने जैसे ही उन्हें आवाज़ दी वे चारों पक्षी विभिन्न दिशाओं से उड़ते हुए उनके पास आ गये । यह देखकर इबराहीम तुरंत ईश्वर के आगे सजदे में गिर गये और उन्हें विश्वास तो पहले ही से था अब उन्होंने यह देख भी लिया कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है और वास्तव में उसकी ही संप्रभुता है वह जो चाहता है करता है ।

एक बड़े इलाक़े में अल्लाह के दीन को क़ायम करते-करते हज़रत इबराहीम बूढ़े हो चुके थे और अभी तक उन्हें कोई संतान नहीं हुई थी, लेकिन वे ईश्वर की दया से उसकी

कृपा से कभी निराश नहीं थे वे लगातार दुआ करते रहते थे कि ईश्वर मुझे एक ऐसा बेटा दे जो तेरी आज्ञा का पालन करने वाला हो । हज़रत इबराहीम की पत्नी सारा यह समझती थीं कि ईश्वर ने शायद उनके भाग्य में कोई पुत्र नहीं लिखा है, उन्होंने अपने पति को यह सुझाव दिया कि वे 'हाजरा' से निकाह कर लें । नबियों का कोई भी काम ईश्वर की इच्छा के बिना नहीं होता । पत्नी का यह सुझाव पाकर उन्होंने तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया फिर बाद में जब उन्होंने देखा कि ईश्वर की अनुमति भी इसी में है तो उन्होंने हाजरा से विवाह कर लिया ।

इबराहीम की आयु उस समय 86 वर्ष की थी जब उनके यहां हाजरा के गर्भ से एक पुत्र का जन्म हुआ । उसका नाम इस्माईल रखा गया । बुढ़ापे की संतान वैसे भी बहुत प्यारी होती है, इबराहीम उसे ईश्वर के बाद सबसे ज़्यादा चाहने लगे, लेकिन अभी उनकी एक कड़ी परीक्षा बाक़ी थी । ईश्वर ने उन्हें आदेश दिया कि वे इस दूध पीते बच्चे को अपने आप से अलग कर दें । अत: इबराहीम ने बिना झिझक के तुरंत ईश्वर की आज्ञा के अनुसार ऐसा करने को तैयार हो गये । वे अपनी पत्नी हाजरा और अपने दूध पीते बच्चे इस्माईल को लेकर घर से निकले और ईश्वर के निर्देशानुसार एक निर्जन स्थान पर पहुंचे । वहां ठहरने की कोई जगह नहीं थी, लेकिन ईश्वर का आदेश उसी स्थान पर रुकने का था इसलिए वे वहां ठहर गये । दो एक दिन वहां ठहरने के बाद इबराहीम अपनी पत्नी और बच्चे को वहीं छोड़कर वापस आने लगे तो उनकी पत्नी हाजरा ने पूछा कि आप हमें यहां अकेला छोड़कर कहां जा रहे हैं । यहां तो दूर-दूर तक कोई छाया भी नहीं है, न खाने-पीने का कोई सामान है, हम यहां अकेले कैसे रहेंगे ।

इबराहीम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया ।

हाजरा ने यह प्रश्न दोबारा पूछा इबराहीम ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया ।

तीसरी बार हाजरा ने कहा कि क्या यह ईश्वर का आदेश है तो इबराहीम ने 'हां' में सर हिला दिया और वहां से चल पड़े ।

हाजरा बच्चे को लेकर वहां अकेले रह गयीं । वे संतुष्ट थीं कि जब ईश्वर ने हमारे लिए यहां ठहरने का फ़ैसला किया है तो उसने हमारे जीवित रहने की भी व्यवस्था अवश्य की होगी ।

वहां दूर-दूर तक जहां तक नज़र जाती थी रेत ही रेत नज़र आती और उसके सिवा वहां कुछ नहीं था । वे अपने साथ कुछ खजूरें लायी थीं और पानी का एक मश्क भी साथ था । इसके सहारे उन्होंने वहां दो-चार दिन गुज़ारे । फिर वे खजूरें भी ख़त्म हो गयीं और पानी भी ख़त्म हो गया। लेकिन उन्हें ईश्वर पर पूरा भरोसा था । तपते हुए रेगिस्तान में एक महिला बिल्कुल अकेली थी और उसके दूध पीते बच्चे के लिए उसकी छाती में दूध की एक बूंद भी न थी। थोड़ी ही देर में बच्चे की हालत ख़राब होने लगी । कंठ में भी कांटे पड़ने लगे और वह बच्चा बिल्कुल अधमरा-सा हो गया ।

बच्चे की हालत देखकर मां तड़प उठी । उसे समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे । वह इतनी मजबूर थी के कुछ करने की स्थिति में नहीं थी । हाजरा ने बच्चे को गोद में लिया और इधर-उधर भागने लगी । लेकिन उन्हें अपनी परछाई के सिवा कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा । फिर उन्होंने बच्चे को एक जगह रेत पर लिटा दिया और एक दिशा में दूर तक दौड़ती चली गयीं । यह सोच कर कि शायद कुछ जीवन सामग्री नज़र आ जाए । लेकिन बच्चे को छोड़कर उनसे दूर जाया भी नहीं जाता था । अत: वे पलट आयी और फिर दूसरी दिशा में दौड़ गयीं लेकिन जब बच्चा नज़रों से ओझल होने लगा तो फिर वहां से भी लौट आयीं । इस तरह उन्होंने 7 चक्कर लगाये । वे जब एक दिशा में दौड़ कर जातीं तो एक छोटी-सी पहाड़ी थी, जिसका नाम था 'सफ़ा' पर खड़ी होती तो उन्हें दूर पानी चमकता नज़र आता । अत: वहां से पलट आतीं और पानी की दिशा में दौड़ कर जातीं, लेकिन जब वे उस स्थान पर पहुंचतीं जो दूसरी छोटी-सी पहाड़ी 'मरवा' थी तो उन्हें फिर पहले स्थान पर पानी चमकता दिखायी पड़ता ।

यह मृग मरीचिका थी और हाजरा उसे पानी समझकर बार-बार एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी का चक्कर लगाती रहतीं । इस तरह उन्होंने सात चक्कर लगाए । हालांकि जानती थीं कि यह मृग मरीचिका है, लेकिन उनके मन में एक आस थी कि हो सकता है यह मृग मरीचिका न हो, वास्तव में पानी ही हो और वे अपने बच्चे की प्यास बुझा सकें । लेकिन जब कहीं पानी नहीं मिला तो वे थक-हार कर बच्चे की ओर आ गयीं, यह सोचकर कि देखें बच्चे का क्या हाल है ।

वे निराश हो चुकी थीं, लेकिन उसी निराशा में ईश्वर ने उन्हें एक आशा की किरण दिखायी । जब बच्चे के पास

पहुंचीं तो देखा कि उसके पांव के पास से एक नन्हा-सा पानी का सोता फूट रहा है । वे तुरंत वहीं पर बैठ गयीं और बच्चे को गोद में लेकर पहले बच्चे को पानी पिलाया फिर स्वयं पानी पिया । पानी के सोता का दायरा धीरे-धीरे बढ़ने लगा । बच्चे को गोद में लिए हाजरा पीछे हटती रहीं । उन्होंने पानी के स्रोत की ओर देखकर कहा, 'ज़म', 'ज़म' अर्थात् 'ठहर जा, ठहर जा'। फिर ऐसा ही हुआ वह सोता उसके आगे नहीं फैला, वहीं थम गया । आज भी वह सोता वहीं मौजूद है और उसे 'ज़मज़म' कहा जाता है । ईश्वर ने उस पानी में कुछ ऐसा प्रभाव रखा है प्यास बुझाने के साथ-साथ भूख भी मिटाता है । दोनों मां-बेटे उसी पर गुज़र-बसर करने लगे । मां की छाती में उसी पानी से दूध बनता था और बच्चे को पानी और दूध दोनों मिल जाता था ।

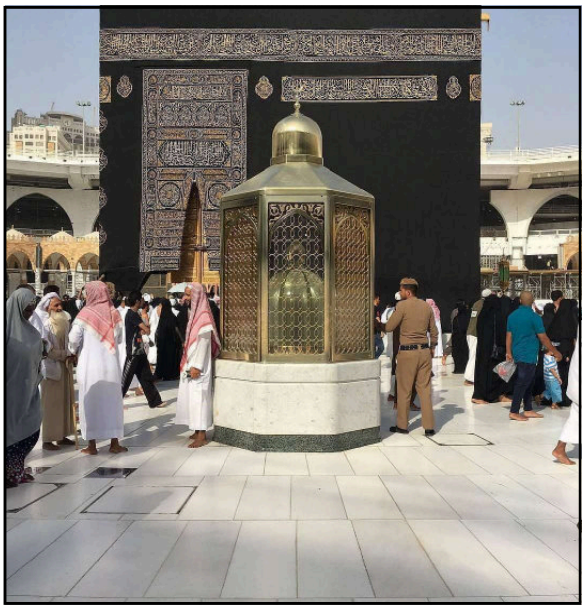

मरुस्थल में जब पानी कहीं पर होता है तो सबसे पहले उसकी सूचना पक्षियों को मिलती है धूप में उड़ते हुए परिंदे इस ओर आने लगे । उस जल स्रोत के आसपास उन्होंने डेरा डाल दिया । आसपास की पहाड़ियों पर पक्षियों ने घोंसला बना लिया । रेगिस्तान से गुज़रने वाले क़ाफ़िले पक्षियों को देखकर अनुमान लगा लेते हैं कि आसपास कहीं पर पानी मौजूद है । वहां से गुज़रने वाला एक क़ाफ़िला पानी देखकर वहीं रुक गया । वह क़ाफ़िला बनी जुरहुम के क़बीले का था । हाजरा से अनुमति लेकर वह क़ाफ़िला वहीं ठहर गया। इस तरह हाजरा को एक समाज मिल गया और उनके सामाजिक जीवन की शुरुआत हो गयी । दोनों मां-बेटे वहां मज़े में रहने लगे और हाजरा इसके लिए अपने मालिक का शुक्र अदा करती रहती थीं ।

कुछ समय बीता तो हज़रत इबराहीम अपनी पत्नी और बच्चे की ख़बर लेने के लिए यहां आये । तो उन्हें यह देखकर बहुत संतोष हुआ और उन्होंने ईश्वर का शुक्र अदा किया कि अब यह कोई निर्जन स्थान नहीं है, बल्कि यहां एक हंसती-खेलती बस्ती आबाद हो चुकी है । अपनी पत्नी और बच्चे को सुरक्षित पाकर उन्होंने एक बार फिर ईश्वर का शुक्र अदा किया कुछ दिनों तक इबराहीम भी उनके साथ वहीं रहे और बनी जुरहुम को ईश्वर के आदेशों से अवगत कराते रहे । वे उन्हें संमार्ग दिखाते और उन्हें बताते कि ईश्वर उनसे क्या चाहता है । वे उन्हें पूरी तरह बताते कि उन्हें अपना जीवन कैसे गुज़ारना चाहिए और यह भी बताते कि यहां संसार में गुज़ारे हुए एक-एक क्षण का परलोक में हिसाब देना होगा । इस तरह इबराहीम वहां कुछ दिन रहकर चले गये और फिर कुछ वर्षों बाद दोबारा आये तो फिर उन्होंने बस्ती के लोगों में सुधार का काम जारी रखा ।

इसी दौरान जब इबराहीम के बेटे इस्माईल की उम्र दस-ग्यारह वर्ष की थी तो एक दिन इबराहीम ने स्वप्न देखा कि वे अपने बेटे के गले पर छुरी चला रहे हैं । अल्लाह के पैग़म्बरों के स्वप्न हमेशा सच्चे होते हैं । इबराहीम ने इसे ईश्वर का आदेश समझा और ऐसा करने को तैयार हो गये कि जिस ईश्वर ने उन्हें यह बेटा दिया है अगर उसकी इच्छा के लिए इसका गला भी काटना पड़े तो मैं पीछे हटने वाला नहीं । इबराहीम ने अपने स्वप्न की बात अपने बेटे इस्माईल से कही और पूछा कि 'तू बता तेरा क्या इरादा है' ।

इस्माईल ने तुरंत उत्तर दिया कि आप ईश्वर के आदेश का पालन कीजिए अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे ईश्वर के आदेशों का पालन करने वाला पाएंगे । जब पिता और पुत्र दोनों ईश्वर की मर्ज़ी के आगे अपना सर झुका चुके और दोनों ने पूरी तैयारी कर ली तो बाप ने बेटे को एक निर्धारित स्थान पर ले जाकर मुंह के बल लिटा दिया । वे चाहते थे कि उनके गले पर छुरी चला दें कि परोक्ष से एक आवाज़ आयी ''बस हो गये तुम कामयाब, तुमने अपना स्वप्न सच्चा कर दिखाया, तुम्हारा काम पूरा हो गया, हमने तुम्हारी क़ुरबानी स्वीकार कर ली ।''

वास्तविकता भी यही है कि उन्होंने स्वप्न में यह नहीं देखा था कि उन्होंने बेटे का गला काट दिया है, बल्कि यही देखा था कि बेटे के गले पर छुरी चला रहे हैं । इबराहीम की यह अदा ईश्वर को इतनी पसंद आयी की ईश्वर ने उन्हें अपना दोस्त बना लिया और उन्हें ख़लीलुल्लाह यानी अल्लाह का ख़लील (अल्लाह का मित्र) की उपाधि दी । इबराहीम की आने वाली पीढ़ियों में पैग़म्बरी लिख दी ।

इबराहीम के बाद दुनिया में जितने भी पैग़म्बर आये, सब उन्हीं की वंश से आये । अल्लाह अपने नेक बंदों को ऐसे ही अच्छा बदला देता है । क़ुरबानी के इस तरीक़े को भी अल्लाह ने बहुत पसंद किया । यही कारण है कि तब से लेकर आज तक क़ुरबानी का यह प्रचलन इबराहीम के मानने वालों के बीच जीवित है ।

एक दिन जब इबराहीम अपने पुत्र और पत्नी के साथ इसी जगह पर मौजूद थे तो उन्हें ईश्वर की ओर से प्रकाशना हुई कि वे अल्लाह के घर का निर्माण करें । अल्लाह ने उन्हें वह निश्चित स्थान भी बता दिया जहां पर ख़ाना-ए काबा का निर्माण करना था । ईश्वर का आदेश पाकर इबराहीम तुरंत तैयार हो गये और दोनों बाप और बेटे ने मिलकर काबे का निर्माण शुरू कर दिया । बेटा आसपास से पत्थर चुनकर लाता और बाप पत्थरों की दीवार बनाता । दीवार उठाते हुए इबराहीम यह दुआ भी करते जाते कि ''ऐ मेरे परवरदिगार! इस घर को शांति का घर बना । जब दीवार कुछ ऊंची उठ गयी, तो जन्नत से फ़रिश्ते ने एक पत्थर लाकर इबराहीम को दिया, जिसे इबराहीम ने एक कोने में जड़ दिया । यह वही पत्थर है, जिसे हम हज्रे असवद, अर्थात् काला पत्थर कहते हैं । जब दीवार इतनी ऊंची उठ गयी जहां तक इबराहीम उसे उठा सकते थे तो बेटे ने एक बड़ा-सा पत्थर घसीट कर ला कर दिया जिस पर चढ़कर इबराहीम ने दीवार को और ऊंचा उठाया । वह पत्थर आज भी वहां मौजूद है । उसे 'मक़ामे इबराहीम' अर्थात् इबराहीम के खड़े होने की जगह कहते हैं ।

ईश्वर ने उस घर को पाक रखने का आदेश दिया । हर तरह की गंदगी से पाक और कहा कि इसमें केवल एक ईश्वर की ही उपासना होनी चाहिए । फिर ईश्वर का आदेश पाकर इबराहीम ने लोगों में मुनादी कर दी कि वे दूर-दूर से आएं और इस काबे का 'तवाफ़' अर्थात् परिक्रमा करें । काबे का तवाफ़ हज का महत्वपूर्ण हिस्सा है । इसके बाद इबराहीम कुछ दिनों तक और अपने बेटे के साथ मक्का में रहे, फिर पुत्र इस्माईल को मक्के की सेवा पर लगाकर वे वापस फ़िलिस्तीन के क्षेत्र में अपने केंद्र पर चले गये । ईश्वरीय आदेशों को फैलाने का काम वहां से करते रहे ।

इबराहीम का जीवन सामान्य ढंग से बीत रहा था कि एक दिन एक असामान्य घटना हो गयी । उनके घर दो मेहमान आये और इबराहीम ने उनके आदर-सम्मान के लिए एक बछड़ा ज़ब्ह किया और उसका मांस बनवाया । लेकिन जब खाने की बारी आयी तो मेहमानों में से किसी ने भी खाने को हाथ तक नहीं लगाया । यह हालत देखकर इबराहीम परेशान हो गये, क्योंकि उस समय का यह प्रचलन था कि लोग अपने दुश्मनों के घर खाना नहीं खाते थे । लेकिन अतिथियों ने तुरंत ही यह बात स्पष्ट कर दी कि, ऐसा नहीं है, बल्कि वे मनुष्य नहीं ईश्वर के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं जो एक विशेष मिशन पर दुनिया में आये हैं । वह मिशन था लूत की क़ौम पर अज़ाब लाना, जो समलैंगिकता की गंदगी में लिप्त हो गयी थी । वहां के लोग लूत की हज़ार कोशिशों के बावजूद उसे छोड़ने को तैयार नहीं थे ।

उन्हीं दोनों फ़रिश्तों ने हज़रत इबराहीम को यह शुभ समाचार भी दिया कि जल्दी ही उनके यहां सारा से एक बेटा पैदा होने वाला है जो अल्लाह का नबी होगा और केवल बेटा ही नहीं, बल्कि इस बेटे का बेटा भी अल्लाह का नबी होगा । सारा को जब यह बात मालूम हुई तो वे आश्चर्यचकित रह गयीं कि एक बांझ बुढ़िया को अब बेटा कैसे पैदा होगा । फ़रिश्तों ने उन्हें यह कहकर चुप करा दिया कि यह अल्लाह का फ़ैसला है और बिल्कुल ऐसा ही होगा । इबराहीम को जब लूत की क़ौम पर आने वाले अज़ाब की सूचना मिली तो उनका हृदय मानवता के दर्द से रोने लगा । उन्होंने अल्लाह से बहुत दुआ की कि वह इस अज़ाब को उस पर से टाल दे, लेकिन अल्लाह का फ़ैसला हो चुका था, इसलिए अज़ाब तो उन पर आकर ही रहा ।

इबराहीम की उम्र उस समय 100 वर्ष की थी जब सारा के गर्भ से उनके यहां 'इसहाक़' की पैदाइश हुई । आगे चलकर इसहाक़ एक प्रतिष्ठित पैग़म्बर बने । इसहाक़ के जन्म के बाद इबराहीम और 75 वर्षों तक जीवित रहे और अपने केंद्र से ईश्वर के दीन को फैलाने का काम करते रहे । फिर जब इबराहीम की मौत हो गयी तो उनके इस मिशन को इसहाक़ ने जारी रखा ।

क़ुरआन पढ़कर हुई उपास्य की पहचान

गुंडलपेट, कर्नाटक के निवासी रफ़ीक़ 2013 तक महेश थे । इस्लाम का अध्ययन करने के बाद उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया । वे कहते हैं, ''मैंने क़ुरआन, हदीस और दूसरी इस्लामी पुस्तकों का गहराई से अध्ययन किया तो मुझे यक़ीन हो गया कि सर्वजगत का रचयिता, पालनहार और स्वामी 'अल्लाह' एक है, हम सब उसी के बन्दे हैं और हमें उसके सामने जवाबदेही करनी है । फिर मैंने सच का रास्ता अपना लिया ।''

जब उनसे पूछा गया कि इस समय केरल में मुसलमानों के एक धड़े में बढ़ती कट्टरता की बात कही जा रही है, इसके बावजूद आप इस धर्म में क्यों आये, तो रफ़ीक़ ने कहा, ''कट्टरता की बात दुष्प्रचार का हिस्सा है, अगर इसे सही मान भी लिया जाए तो इसके लिए इस्लाम को दोषी नहीं ठहराया जा सकता । इस्लाम तो मानवजाति के लिए ईशवरीय मार्गदर्शन का नाम है । यह वह रास्ता है, जिस पर चलकर लोगों को सही अर्थों में सफलता मिल सकती है और विश्व में सुख, शांति और समृद्धि आ सकती है ।''

धर्म बदलने के लिए ज़बरदस्ती या मजबूरी के सवाल पर रफ़ीक़ ने साफ़ किया कि उन्हें किसी बाहरी शक्ति ने तो मजबूर नहीं किया, लेकिन यह सच है कि उन्होंने अपनी अंतरात्मा के हाथों मजबूर होकर यह क़दम उठाया है ।

इस्लाम अपनाने के बाद रफ़ीक़ ने इस्लाम सीखने के लिए एक संस्था में प्रवेश लिया । राज्य में इस्लाम धर्म में आने वालों को प्रशिक्षण देने के लिए दो रजिस्टर्ड संस्थाएं हैं । इनमें से एक 100 साल पुरानी है, जबकि कालीकट की तरबियतुल इस्लाम सभा लगभग 80 साल पहले स्थापित हुई थी । इस संस्था में उन लोगों को इस्लाम के रास्ते पर ठीक से चलने की ट्रेनिंग दी जाती है जिन्होंने हाल में इस्लाम क़बूल किया है । एक समय में औसतन 30 लोग 'अच्छे मुसलमान' बनने की ट्रेनिंग में शामिल होते हैं । बहुमत महिलाओं का होता है ।

रफ़ीक़ की ट्रेनिंग लगभग पूरी हो चुकी है । अब वे अपने माता-पिता को ईश्वर के बताये सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश में लगे हैं । वो कहते हैं, मेरे परिवार ने अब तक ईश्वर के रास्ते को नहीं पहचाना है, लेकिन मैंने अपने



माता-पिता को ईश्वर के बारे में बताया है । रफ़ीक़ को उम्मीद है कि उनके माता-पिता भी जल्द सत्य धर्म को पहचान कर उसे क़बूल कर लेंगे ।

केरल की इन संस्थाओं में कलिमा उन्हीं लोगों को पढ़ाया जाता है जो मुसलमान बनने का फ़ैसला संस्था में आने से पहले कर चुके होते हैं । तरबियतुल इस्लाम के एक ज़िम्मेदार अली कोया के अनुसार इस संस्था में औपचारिक धर्म परिवर्तन देश के क़ानून के दायरे में किया जाता है और हर परिवर्तन की रिपोर्ट पुलिस को भेजी जाती है ।

कोया कहते हैं कि लोग अपनी मर्ज़ी से इस्लाम धर्म क़बूल करते हैं । हम पहले पहचान पत्र की जांच करते हैं । यह देखते हैं कि कहीं उनका क्रिमिनल या चरमपंथी बैकग्राउंड तो नहीं । पासपोर्ट, आधार कार्ड और स्कूल सर्टिफिकेट जैसे पहचान पत्र को देखकर और उनके परिवार से संपर्क करके ही उनका धर्म परिवर्तन की औपचारिकता पूरी की जाती है ।

केरल में दूसरे राज्यों के मुक़ाबले सांप्रदायिक सद्भावना का माहौल अधिक है । यहां हिंदू आबादी 50 प्रतिशत से अधिक है, जबकि मुस्लिम आबादी 25 फ़ीसद है और इससे कुछ कम संख्या ईसाई धर्म को मानने वालों की है । यहां सभी धर्मों के मानने वाले मिल-जुलकर रहते हैं, इनका रहन-सहन, खान-पान सब एक जैसा है ।

परमेश्वर एक है–अनेक नहीं

✍ पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य

इस सृष्टि का स्रष्टा एक ही है । वही उत्पादन, अभिवर्धन तथा परिवर्तन की सारी प्रक्रियाएं अपनी योजनानुसार संपन्न करता है । न उसका कोई साझीदार और न सहायक ।

...प्राणियों को माया ने भरमाया और वे अहन्ताग्रस्त होकर अपनी-अपनी पृथक स्वार्थपरता से ग्रस्त होकर निजी इच्छा आवश्यकताओं के अनुरूप क्रिया-कृत्य करने लगे ।

...एक ही सत्ता भिन्न-भिन्न प्रकार की हो गयी और समझा जाने लगा कि जो जिस देवी-देवता कि पूजा-पत्री करेगा वह उसी को अपना समझेगा और उसी की हिमायत करेगा । इतना ही नहीं जो अपने यजमान का उपेक्षा पात्र या विरोधी होगा उसे त्रास देने से भी न चूकेगा । यह मान्यता है आज के बहुदेववाद की । इस प्रकार स्रष्टा का ही खंड विभाजन नहीं हुआ वरन् अपने-अपने कुल वंश ग्राम नगर के भी पृथक-पृथक देवी-देवता बन गये ।

विभाजन और संकीर्णता इतने तक ही सीमित नहीं रही । परमेश्वर का भी बंटवारा कर लिया गया । अनेकों देवी-देवता बनकर खड़े हो गये । उनकी आकृति ही नहीं प्रकृति भी अपने को न पूजने–दूसरे को पूजने पर वे देवता रुष्ट होने और त्रास देने पर उतारू होने लगे । बहुदेववाद के आरंभिक दिनों में तीन ही प्रमुख थे ब्रह्मा, विष्णु, महेश और उनकी पत्नियां सरस्वती, लक्ष्मी, काली । इसके बाद तो नित नये देवता उपजने लगे । देवताओं की संख्या अगणित हो गयी और देवियों की भी । उनकी चित्र-विचित्र फ़रमाइशें भी गढ़ी गयीं । इनमें से कुछ शाकाहारी थे, कुछ मांसाहारी । कुछ क्रोधी, कुछ शांत मिज़ाज । कुछ तो प्रेत पितर ही देवी-देवता बन बैठे । इनकी संख्या हज़ारों-लाखों तक जा पहुंची । इस संदर्भ में पिछड़ी जातियों ने देव रचना का काम बहुत उत्साह से बढ़ाया । शारीरिक मानसिक बीमारियों को उन्हीं के रुष्ट होने का कारण माना जाने लगा । उपचार यही था कि किसी मध्यवर्ती ओझा की मारफ़त समाधान करने के लिए उनकी रिश्वत का पता लगाना । इस समाधान में अक्सर खाने-पीने की वस्तुओं की याचना होती थी । विशेष कर पशु-पक्षियों के बलिदान की । इनका कोई स्थान विशेष बना हो तो वहां पहुंचकर धोक देने की (प्रणाम करना)। घर में नयी बहू आने या नया बच्चा पैदा होने पर कुल देवता के दर्शन झांकी करने जाना भी आवश्यक समझा जाने लगा । इस प्रकार देवता का 'मूड' ठीक रखना भी हर परिवार के लिए आवश्यक जैसा बन गया । यह छोटी समझी जाने वाली बिरादरियों की बात हुई । बड़ी बिरादरियों के देवता अपेक्षाकृत अधिक शानदार, ठाट-बाट वाले, बड़े देवी-देवताओं के भक्त बनने में अपनी प्रतिष्ठा समझने लगे । उनकी पूजा पंडित पुरोहित द्वारा दुर्गा शप्तशती पाठ, शिव महिमा रुद्री आदि का पाठ, हवन, पूजन जैसे उपचार और उनमें से अपने लिए जिन्हें चुना गया हो उनके दर्शन झांकी करने का सिलसिला चलता । बहुदेववाद के पीछे अनेकानेक कथा कहानियां जोड़ी गयीं और उनकी प्रसन्नता से मिलने वाले लाभों का–उनकी नाराज़गी से मिलने वाले त्रासों की माहात्म्य गाथाएं गढ़ ली गयीं । कितने ही देवताओं का किन्हीं पर्व त्योहारों के साथ संबंध जोड़ दिया गया । कईयों के स्थान विशेष पर जाना आवश्यक माना गया । इनमें से कुछ पुराने बने रहे और कितने ही नये बनकर खड़े हो गये । कई उपेक्षित होते चले गये और कई एकदम नये विनिर्मित होकर प्रख्यात हो गये ।

...समझदार समुदाय तो क्रमशः अब इस जंजाल से अपना पीछा छुड़ाते जा रहे हैं । ...इस संदर्भ में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है अन्यथा यह भ्रम जंजाल बढ़ता ही जाएगा और अकारण लोगों में भय तथा लालच का भाव बढ़ता जाएगा अनास्था बढ़ेगी सो अलग । उन देवताओं के एजेंटों तथा पुजारियों के पौ बारह होते रहेंगे और बेचारे भावुक लोग अंधश्रद्धा के कारण अपनी जेब कटाते रहेंगे ।

समझा जाना चाहिए कि ईश्वर एक है । उसकी व्यवस्था में अनेक साझीदार नहीं हो सकते । धर्म संप्रदायों की मान्यता के कारण उसके आकार-प्रकार भी अनेक

प्रकार के नहीं हो सकते । संप्रदायों में ईश्वर की आकृति और प्रकृति अनेक प्रकार की मानी गयी है । यदि यह सच मानी जाए तो इनमें से किसी एक को सच्चा और बाक़ी सबको झूठा कहना पड़ेगा । ...उनके प्रति पूज्य भाव रखते हुए भी यह निर्णय करना कठिन है कि परस्पर विरोधी इन प्रतिपादनों में कौन सही और कौन ग़लत है । ऐसी दशा में किसी सत्यान्वेषी के लिए भारी कठिनाई उपस्थित होती है कि इस विरोध विडंबनाओं में से किसे ग्राह्य और किसे अग्राह्य करें ।

तत्वदर्शन और विवेक बुद्धि के आधार पर यह मानना पड़ता है कि परमेश्वर एक है । संप्रदायों की मान्यताओं के अनुसार उसके स्वरूप और विधान सही नहीं हो सकते । यह उनकी अपनी-अपनी ऐसी मान्यताएं हैं जो मानने वालों की निजी मान्यता पर अवलंबित है ।

व्यापक शक्ति को निराकार होना चाहिए, जिसका आकार होगा वह एक देशीय और सीमित रहेगा । कहा भी गया है–'न तस्य प्रतिमाऽअस्ति' (यजुर्वेद 32:3) अर्थात् 'उसकी कोई प्रतिमा नहीं है' न स्वरूप न छवि । आप्त वचनों का एक और भी कथन ऐसा ही अभेद्य है । उसमें कहा गया है–'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात् एक ही परमेश्वर को विद्वानों ने बहुत प्रकार से कहा है । यहां अंधों द्वारा हाथी का एक-एक अंग पकड़कर उसे उसी आकृति का बताये जाने वाली कहानी याद आ जाती है ।

...तत्वदर्शियों ने सर्वसाधारण की सामान्य बुद्धि को चित्रकारिता के माध्यम से मानवी गरिमा और उत्कृष्टता के लिए आवश्यक धारणाओं और प्रयासों के संबंध में रहस्यमय चित्रों में चित्रित किया है । उनका यह अर्थ नहीं लगाना जाना चाहिए कि निराकार, सर्वव्यापी और न्यायकारी परमेश्वर की सृष्टि व्यवस्था में कोई साझीदार भी है और वे मात्र मनुहार, उपहार, उपचार के आधार पर प्रसन्न-प्रसन्न होते रहते हैं । पात्रता कुपात्रता का विचार किये बिना शाप, वरदान देते रहते हैं । रुष्ट और प्रसन्न होते रहते हैं । ऐसी मान्यताएं अंधविश्वास में गिनी जाएंगी और उन्हें अपनाने वालों को भ्रमित करेंगी । वास्तविकता को कोसों दूर ले जा पटकेंगी । हम में से प्रत्येक को यथार्थवादी और तत्वदर्शी होना चाहिए ।

...सृष्टि व्यवस्था में साझीदार करने वाले स्वतंत्र अस्तित्व के देवी-देवताओं की मान्यता से मुंह मोड़ लेना ही सत्य और तथ्य को अपनाने की विवेकशीलता है ।

पहचान

बनाना चाहती हूं
मानचित्र
स्त्री की इच्छाओं का
ज़मीं पर पैर जमाए
आकाश को छूने का
प्रयास करती हुई, नारी का ।
अपनी एकांत
दुनिया में मुस्कुराती
तृप्त होती हुई आम औरत का ।
कहीं प्रेम की पराकाष्ठा
कहीं भौतिक वस्तु मात्र
द्वंद्वात्मक भूमिकाओं में
ज़िन्दगी की जंग जीतती नारी का ।
कल, आण और कल
को खंगालती-मथती
अपनी अस्मिता के प्रति जाग्रत नारी का ।
धीरे से
खिड़की दरवाज़े खोलती
नयी पीढ़ी के लिए...
स्वच्छ विचारों का वातायन देती
अनन्य संभावनाओं का
मार्ग प्रशस्त करती हुई जागरूक नारी का ।
देह से ऊपर उठी नारी
अपनों से, परायों से
अपने अधिकारों के लिए
जूझती हुई संघर्षरत नारी का ।
मुस्कुराती, कराहती
लोहे के सांचे में ढली
नारी सीख रही अब जीना अपने लिए
अनामिका नहीं रही अब...
सुदृढ़ 'पहचान' बनाती आज की नारी ।

डॉ॰ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
कोटा, राज॰

रसूल (सल्ल.) की छवि सहाबियात की दृष्टि में

✍ **नुज़हत यासमीन**

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) आज से साढ़े चौदह सौ वर्ष पहले अंतिम संदेष्टा के रूप में दुनिया में आये । यह वह ज़माना था जब चारों ओर जहालत का अंधकार फैला था । ज़ुल्म और अत्याचार का वातावरण था । लोग एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे थे । समाज शराब और जुए का आदी था । इन्सान ख़रीदे और बेचे जाते थे । महिलाओं की न कोई सामाजिक स्थिति थी न उनका कोई महत्व था । एक लाचार और विवश स्थिति में उनका जीवन-यापन होता था ।

ऐसे में नुबूवत की किरणें आयीं और अंधकार के साये सरकने लगे । रसूल (सल्ल॰) की शिक्षा और निर्देश में समाज भलाई और न्याय के रास्ते की ओर बढ़ने लगा । लोगों की मनोस्थिति बदलने लगी । ख़ून के प्यासे भाई-भाई बन गये । ज़ुल्म व अत्याचार का वातावरण अमन और न्याय के वातावरण में बदल गया । ग़ुलामों, बच्चों और महिलाओं को अधिकार दिये गये ।

रसूल (सल्ल॰) की शिक्षा से महिलाओं की दशा में परिवर्तन आया । समाज में उनकी स्थिति सुदृढ़ हुई । मां, बहन, बेटी और पत्नी अच्छे व्यवहार और आदर का पात्र ठहरायी गयीं ।

रसूल (सल्ल॰) का स्वभाव निर्मल और सरल था । आप (सल्ल॰) महिलाओं की बातों को ध्यान से सुनते, उनकी समस्याओं का निदान करते और उन्हें उपदेश देते ।

एक बार एक दासी आप (सल्ल॰) के पास आयी । उसने अपने किसी कार्य में आप (सल्ल॰) से सहायता मांगी । आप (सल्ल॰) तुरंत उसके साथ गये और उसका काम करा दिया ।

वह बुढ़िया जो आप (सल्ल॰) पर कूड़ा फेंका करती थी, आप (सल्ल॰) ने उसके बीमार होने पर उससे भी सहानुभूति की, उसका हाल पूछा । आप (सल्ल॰) महिलाओं के सांसारिक जीवन को शांतिमय और परलोक के जीवन को सफल बनाने के लिए उपदेश देते थे । उनकी शिक्षा के लिए अलग से प्रबंध करते थे ।

महिलाओं की कोमलता का भी आप (सल्ल॰) ध्यान रखते थे । एक बार यात्रा में ऊंट के सारवान ने उन ऊंटों को तेज़ चलाया जिसमें महिलाएं बैठी थीं तो आप (सल्ल॰) ने ऊंटों को धीरे चलाने के निर्देश दिये ताकि सवारियों को कष्ट न पहुंचे ।

मदीना की नन्ही बच्चियां जब रसूल (सल्ल॰) के आगमन पर स्वागत के गीत गा रही होती हैं तो आप (सल्ल॰) ठहर जाते हैं, मुस्कुरा कर बच्चियों से पूछते हैं, ''बेटियों क्या आप मुझे प्यार करती हो ?'' बच्चियां कहती हैं, ''हां या रसूल अल्लाह (सल्ल॰)।''

आप (सल्ल॰) फ़रमाते हैं, ''बच्चियों मैं भी आप से स्नेह रखता हूं ।''

मक्का एवं मदीना की वह भाग्यशाली महिलाएं जिन्होंने रसूल (सल्ल॰) को देखा, आप (सल्ल॰) की बातें सुनीं, आपके आचरण और व्यवहार को देखा, उन महिलाओं की आप (सल्ल॰) के प्रति क्या धारणा थी ? उन्होंने अपने विचार किन शब्दों में प्रकट किये आज हम उन पर चर्चा करेंगे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की जीवनी से कुछ झलकियां निकाल कर पेश की जाती हैं ।

♦ नबी (सल्ल॰) पर पहली वह्य (प्रकाशना) आती है । आप परेशान हो उठते हैं, घा आते हैं, अपनी पत्नी को अपनी परेशानी से अवगत कराते हैं । आप (सल्ल॰) की पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) ने आपके आचरण और व्यवहार की सच्ची गवाही देते हुए जिन शब्दों में आपको सांत्वना दी, इतिहास के पन्नों ने उन सुनहरे शब्दों को हमेशा के लिए सुरक्षित कर लिया है ।

हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) कहती हैं, ''आप (सल्ल॰) सच बोलते हैं, अतिथि सत्कार करते हैं, ग़रीबों की सहायता करते हैं, रिश्तेदारों का ख़याल रखते हैं, अमानत अदा करते हैं, दुखियों के काम आते हैं । अल्लाह आप (सल्ल॰) को कभी अकेला नहीं छोड़ेगा ।''

♦ एक बुढ़िया अपना सामान लेकर खड़ी है । वह मक्का छोड़कर जाना चाहती है । उसने सुना है कि यहां एक ऐसा जादूगर है जिसकी बातें सुनकर लोग विधर्मी हो जाते हैं । वह अपना भारी बोझ नहीं उठा सकती और किसी

मज़दूर का इन्तिज़ार कर रही है ।

आप (सल्ल॰) उधर से गुज़र रहे होते हैं । बुढ़िया की सहायता करते हैं और उसका सामान उठा लेते हैं । रास्ते में वह बूढ़ी महिला आप (सल्ल॰) को उपदेश देती हैं कि, ''बेटा उस जादूगर से बचकर रहना, मैं तो उस की बातों से बचने के लिए दूर चली जाती हूं ।''

उसकी मंज़िल आ गयी । वह नबी (सल्ल॰) को मज़दूर समझ कर कुछ पैसे देने लगी । आप (सल्ल॰) ने मना फ़रमाया तो कहने लगी, ''अच्छा अपना नाम बता दो ।'' आप (सल्ल॰) ने अपना नाम बताया तो आश्चर्यचकित हो कह उठी कि, ''अगर तुम 'मुहम्मद' हो तो सारे झूठे हैं और तुम सच्चे हो ।''

♦ रसूल (सल्ल॰) को सताने में मक्का वालों ने सारी सीमाएं लांघ दी ही हैं । अल्लाह के आदेश से आप (सल्ल॰) अपने साथी हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) के साथ मदीना की ओर प्रस्थान कर रहे हैं । रास्ता लंबा है । साथ लिया गया खाना-पानी ख़त्म हो चुका है । रास्ते में एक महिला का तम्बू है उनका नाम उम्मे माबद है । उनके पति बकरियां चराने गये हैं । खाने-पीने की कोई चीज़ मौजूद नहीं है । एक मरियल-सी बकरी कोने में खड़ी है । रसूल (सल्ल॰) फ़रमाते हैं, ''उम्मे माबद अगर तुम अनुमति दो तो इस बकरी का दूध दोह लूं ?'' उम्मे माबद बकरी ले आती हैं और कहती हैं कि, ''यह दुर्बल बकरी दूध नहीं दे पाएगी ।''

नबी (सल्ल॰) ने दूध दुहना आरंभ किया तो दूध की धारें बह निकलीं और बर्तन भर गया । सब ने दूध पिया और दूध से भरा बर्तन तम्बू में छोड़कर नबी (सल्ल॰) और आपके साथी चले गये ।

जब उम्मे माबद के पति आये तो वह अपने पति से आने वाले अतिथि का चित्रांकन इन सुन्दर शब्दों में करती हैं ।

पवित्र मुखड़ा, सुन्दर काया, सुन्दर नैन, आंखों की पुतलियां रौशन, भवें बारीक, घने और घुंघराले बाल, सीधी गरदन, शरीर न मोटा न दुर्बल, क़द दर्मियाना, न इतना लंबा कि उलझन हो न इतना छोटा कि घुटन हो, दूर से देखने में सजीले, निकट से गौरववान, मुद्रा गंभीर, बातें मधुर, शब्द स्पष्ट मानो मोतियां लड़ियों में पिरोयी गयीं हों, न अधूरी बात बोलें, न ज़रूरत से ज़्यादा बोलें, साथी ऐसे जो हर समय साथ रहें, कुछ कहें तो पूरे ध्यान से सुनें, आदेश दें तो लपक कर पूरा करें ।''

यह है एक ग्रामीण महिला के वह अनमोल शब्द जो आप (सल्ल॰) के व्यक्तित्व का चित्रांकन करते हैं ।

♦ उहुद की लड़ाई हो रही थी । मदीने में अफ़वाह फैल गयी कि नबी (सल्ल॰) शहीद हो गये हैं । हज़रत हिन्द बिन्त अम्र एक अंसारी सहाबिया थीं । यह ख़बर पाकर व्याकुल हो उठीं और उहुद की ओर चल पड़ीं । रास्ते में एक व्यक्ति मिला जो लड़ाई के मैदान से आ रहा था । उन्होंने नबी (सल्ल॰) की ख़ैरियत पूछी । उस व्यक्ति ने बताया कि आप (सल्ल॰) कुशलपूर्वक हैं, लेकिन तुम्हारे भाई शहीद हो गये हैं । इसी तरह रास्ते में ही उन्हें अपने बेटे और पति के शहीद होने की सूचना मिलती है, लेकिन वह सब्र करती हैं । लड़ाई के मैदान में पहुंचती हैं जब नबी

अभिव्यक्ति

लेखक कवि व्यंग्यकार
क़लम ही है जिनका हथियार
काग़ज़ पर करते हैं जो
अपनी भावनाओं का इज़हार
अपना आक्रोश अपनी पीड़ा
अपनी खीज अपनी कुंठा
जनमानस का असंतोष
व्यवस्था की कमियां दोष
लालफ़ीताशाही भ्रष्टाचार
घपले, घोटाले, भर्राशाही
काग़ज़ के पन्नों पर
अपनी-अपनी विधा में
ले आते हैं बाहर !
पर यदा-कदा ही सही
ऐसा अवसर भी आता है
कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हेतु
जताना पड़ ही जाता है
उन्हें व्यवस्था से विरोध !

ओमप्रकाश बजाज
इंदौर, म॰प्र॰

(सल्ल॰) पर नज़र पड़ती है तो बेइख़्तियार कह उठती हैं, ''आप सलामत हैं तो सारी मुसीबतें तुच्छ हैं ।''

त्याग और बलिदान का इससे अच्छा और क्या उदाहरण पेश किया जा सकता है ?

♦ उहुद की लड़ाई चल रही है । इस्लाम के शत्रुओं में महिलाएं भी शामिल हैं । वह अपने पुरुषों को जोश दिला रही हैं और लड़ाई पर उभार रही हैं । एक महिला ने एक ग़ुलाम को आज़ादी का लालच देकर रसूल (सल्ल॰) के चाचा को क़त्ल करने का ज़िम्मा दे रखा है । उस ग़ुलाम ने रसूल (सल्ल॰) के चाचा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि॰) को शहीद कर दिया । शत्रुता की आग में जलती वह महिला ख़ुश हो जाती है । हम्ज़ा (रज़ि॰) का पेट फाड़ कर कलेजा निकालती है और उसे चबाने की कोशिश करती है । उस महिला का नाम हिन्द बिन्त उत्बा है ।

जब रसूल (सल्ल॰) मक्का पर विजय प्राप्त करते हैं वह आपके पास आती है । आप (सल्ल॰) उसे क्षमा कर देते हैं । हिन्द बिन्त उत्बा जिसे अपने बचने की कोई उम्मीद नहीं थी आश्चर्यचकित रह जाती है । रसूल (सल्ल॰) के व्यवहार और सहिष्णुता ने उसके दिल की दुनिया बदल डाली । सत्य उस पर प्रकट हो गया था । वह सच्चे दिल से ईमान लाती है और कहती है, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) आज से पहले आपसे बढ़कर मेरे लिए कोई शत्रु नहीं था और आज आप (सल्ल॰) से बढ़कर प्रिय और आदरणीय कोई नहीं ।''

♦ सफ़ाना बिन्त हातिम यमन के एक क़बीला के सरदार हातिम ताई की बेटी थीं । हातिम ताई एक ऐसे सरदार थे जो अपने परोपकार और दान-पुण्य के लिए पूरे अरब में मशहूर थे । उनके निधन के बाद उनके बेटे अदी उस क़बीले के सरदार बने । सफ़ाना उनकी बहन थीं । एक घटना में सफ़ाना अपने भाई और क़बीले वालों से बिछड़ गयीं और क़ैदी बना ली गयीं । रसूल (सल्ल॰) ने उन्हें और उनके साथियों को आज़ाद कर दिया और फ़रमाया, ''यह एक आदरणीय और परोपकारी सरदार की बेटी हैं ।'' आप (सल्ल॰) ने उन्हें उनके भाई तक पहुंचाने के लिए सवारी का प्रबंध भी कराया ।

सफ़ाना नबी (सल्ल॰) के व्यवहार और शिष्टाचार से बहुत प्रभावित हुईं । अपने भाई से मिलीं तो उन्हें नसीहत की कि, ''तुम जल्द उनसे मुलाक़ात करो यदि वह रसूल हैं तो उनसे मिलना तुम्हारे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात है और यदि वह बादशाह हैं तो तुम्हारा उनसे मिलना तुम्हारी उन्नति का ज़रिया है ।''

♦ हज़रत उम्मे ऐमन (रज़ि॰) वह भाग्यशाली महिला हैं जिन्होंने बचपन में रसूल (सल्ल॰) के पालन-पोषण में हिस्सा लिया । रसूल (सल्ल॰) से उन्हें बहुत स्नेह था । आप (सल्ल॰) भी उनका आदर करते और उन्हें मां कहते थे । जब आप (सल्ल॰) का निधन हुआ तो उम्मे ऐमन (रज़ि॰) को बहुत दुख हुआ । उनका रोना थमता ही न था । हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) और हज़रत उमर (रज़ि॰) उन्हें सांत्वना देने उनके घर गये और फ़रमाया, ''रसूल (सल्ल॰) के लिए अल्लाह के पास अति उत्तम नेमतें हैं ।''

वह कहने लगीं, ''मैं जानती हूं, मैं तो सिर्फ़ इसलिए रोती हूं कि अब वह्य (प्रकाशना) का सिलसिला हमेशा के लिए रुक गया है ।''

यह उन भाग्यशाली महिलाओं के शब्द जो उनके दिल की गहराइयों से निकले और इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हो गये । यह कथन रसूल (सल्ल॰) के प्रति उनकी मनोभावना को भी प्रकट करते हैं और उनके उस त्याग, बलिदान, प्रेम और सम्मान के भी साक्षी हैं जो उन्हें अल्लाह के सच्चे रसूल से थी ।

''तुम्हारा पूज्य-प्रभु एक ही पूज्य-प्रभु है, उस करुणामय और दयावान के सिवा कोई और पूज्य-प्रभु नहीं है ।''
(क़ुरआन, 2:163)

A WELL WISHER
Syed Iqbal (GOA)

नबी (सल्ल॰) के सच्चे साथियों का बलिदान

✍ **संपादन प्रभाग**

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के सच्चे और बलिदानी साथियों द्वारा दीन की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लेना भी एक कारण है जो इस्लाम के ईश्वरीय धर्म होने का प्रमाण भी है और इसके अनुपालन के लिए प्रेरित भी करता है । इस्लाम की सत्यता को जन-जन तक पहुंचाने का काम अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के देहांत के बाद रुक नहीं गया, बल्कि आपने इस्लाम के संदेश से परिचित होने वाले हर व्यक्ति पर यह ज़िम्मेदारी डाल दी कि वह इसे उन लोगों तक पहुंचाए, जिन तक यह नहीं पहुंचा है । अपने अंतिम हज के अवसर पर जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने सवा लाख लोगों को संबोधित करते हुए कुछ उपदेश दिये तो उसमें यह भी कहा, ''हमने अल्लाह का दीन तुम लोगों तक पहुंचा दिया अब वे लोग जो यहां मौजूद हैं, इसे उन लोगों तक पहुंचाएं जिन तक यह नहीं पहुंचा है ।'' अत: आपके साथियों (सहाबा) ने इसे दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाया । सहाबा (रज़ि॰) इस्लाम की शिक्षाओं का ऐसा सच्चा और जीवंत नमूना थे कि वे जहां भी गये, लोग उनके स्वभाव से प्रभावित होकर इस्लाम के निकट आये । यही कारण है कि ख़ुद अल्लाह ने क़ुरआन में सहाबा (रज़ि॰) की प्रशंसा करते हुए कहा है–

''और मुहाजिरों (मक्का से पलायन कर मदीना आने वालों) और अनसार (मुहाजिरों को शरण देने वालों) में जो लोग सबसे पहले आगे बढ़ने वाले, सबसे पहले ईमान लाने वाले हैं और वे लोग जिन्होंने निष्ठा के साथ उनका अनुसरण किया, तो अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे अल्लाह से प्रसन्न हुए और अल्लाह ने उनके लिए (परलोक में शाश्वत नेमत के) बाग़ तैयार कर दिये जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (और इसलिए वे सूखने वाले नहीं) वे सदैव उस (अनुग्रह और आनन्द के जीवन) में रहेंगे और यह है बहुत बड़ी सफलता ।'' (क़ुरआन, 9:100)

इसका एक दूसरा पहलू यह है कि जो सहाबी आप (सल्ल॰) के जितना निकट था वह उतना ही अधिक आप पर जान निछावर करता था । आमतौर पर किसी महापुरुष के बहुत नज़दीक रहने वाले लोग उसकी महानता को स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि उसके जीवन के नकारात्मक और कमज़ोर पहलूओं से भी वे अवगत होते हैं । लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ थे और मानवता के लिए नमूना थे इसलिए जो सहाबी (रज़ि॰) आपको जितना ज़्यादा जानते थे वे उतना ही ज़्यादा आप पर जान देते थे और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नबी (सल्ल॰) के तरीक़े का पालन करते थे ।

रोमन सेना के साथ युद्ध के अवसर पर जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने घोषणा की कि लोग युद्ध की तैयारी के लिए सहयोग करें तो एक सहाबी (हज़रत उमर रज़ि॰) ने अपनी कुल जमा पूंजी का आधा भाग दान कर दिया, एक-दूसरे सहाबी (हज़रत अबू बक्र रज़ि॰) ने अपने घर का सब कुछ लाकर दे दिया । जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनसे पूछा ऐ अबू बक्र घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा ? तो उन्होंने जवाब दिया कि हां घर वालों के लिए अल्लाह और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को छोड़ा है । एक सहाबी जो ग़रीब थे दिन भर मेहनत-मज़दूरी करके इतना ही कमा पाते थे कि किसी तरह गुज़ारा हो जाए । जब उन्हें युद्ध की सूचना मिली तो तड़प उठे, दिन भर मज़दूरी करने के बावजूद रात भर एक यहूदी के खेत की सिंचाई की और सुबह वहां से जो मज़दूरी मिली वह लाकर अल्लाह के रसूल की सेवा में पेश कर दिया ।

इसी तरह एक सहाबी हज़रत अबू दहदाह (रज़ि॰) की घटना है कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उन्हें क़ुरआन की यह आयत सुनायी–"कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे ताकि अल्लाह उसे कई गुना बढ़ाकर वापस करे और उसे ससम्मान बदला भी दे ।'' (क़ुरआन, 57:11) तो उन्होंने पूछा या नबी (सल्ल॰) क्या अल्लाह हम से क़र्ज़ मांगता है ? नबी (सल्ल॰) ने जवाब दिया हां। इस पर अबू दहदाह ने कहा कि हमने अपना खजूर का बाग़ अल्लाह को क़र्ज़ दे दिया । उस बाग़ में खजूर के 600 पेड़ थे और बाग़ के एक हिस्से में ही उनका घर था, जिसमें वे पत्नी और बच्चों के साथ रहते थे । यह बाग़ अल्लाह को दे देने के बाद वे घर की ओर आये और बाग़ में घुसे बिना ही दूर से पुकारा, ऐ दहदाह की मां बच्चे को लेकर घर से निकल आओ हमने यह बाग़ अल्लाह के नाम दे दिया । उनकी पत्नी ने कहा तुमने बहुत अच्छा सौदा किया और बच्चे को लेकर घर से निकल आयीं । अल्लाह को दे देने का अर्थ यह है कि अब इसका प्रयोग ग़रीबों, अनाथों, विधवाओं और दूसरे अभावग्रस्त लोगों के भरण-पोषण के लिए किया जाएगा ।

सांप्रदायिक सौहार्द के उदाहरण

✍ **ख़ालिदा हुसैन**

सांप्रदायिकता किसी भी देश के विकास में एक बहुत बड़ी बाधा होती है । भारत एक ऐसा देश है जहां एकता और विविधता की एक महान विरासत है, जिसे सद्भाव एवं सांप्रदायिक सौहार्द्र द्वारा ही क़ायम रखा जा सकता है । आज देश में जितनी आवश्यकता नागरिकों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को मज़बूत करने की है उतनी ही तत्काल आवश्यकता उनके बीच शांति बनाए रखने तथा असहिष्णुता की वैचारिकता को ठीक से संबोधित करने की भी है ।

इसके अलावा विभिन्न धर्मों के लोगों को स्वयं भी सांप्रदायिक सौहार्द्र के महत्व तथा आवश्यकता को पहचानना तथा समझना होगा । प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह समाज के सभी धर्मों, भाषाओं, जातीय तथा प्रांतीय समूह के लोगों की धार्मिक भावनाओं, विचारधारा तथा संस्कृति का सम्मान करें । एक दूसरे के साथ घुल-मिलकर रहें और भारत की सदियों से चली आ रही मिश्रित-पड़ोसवाद की परंपरा के धरोहर को संजो कर रखें । परंतु वर्तमान समय में इस विरासत को क्षति पहुंचाने की पूरी कोशिश की जा रही है ।

समाज की शांति एवं धार्मिक सौहार्द्र को बिगाड़ने तथा उसे अपने हित के लिए प्रयोग करने में कोई कमी नहीं छोड़ी जा रही । सत्ता के भोग का लालच तथा राजनीतिक लाभ के लिए देश की शांति तथा विकास दोनों को पूरी तरह बाधित करने के अनेकों प्रयास काफ़ी समय से किये जा रहे हैं । लेकिन फिर भी क्या देश में नफ़रत फैलाने के यह प्रयास पूर्ण रूप से सफल हो रहे हैं ? क्या देश में आज सांप्रदायिक विद्वेष है? क्या मुस्लिम, सिख, हिंदू और ईसाई शांति के साथ एक दूसरे के साथ जीवन बिताने में सक्षम हैं, जैसा कि वह भारत में सदियों से रहते आ रहे हैं ? या फिर वह समाज में मौजूद शरारती और घातक तत्वों द्वारा विभाजित हो रहे हैं या होंगे ? जैसे कि अंग्रेज़ों ने भारत को वर्षों तक विभाजित तथा शासित किया ?

यदि हम सकारात्मक मानसिकता तथा प्रेम की दृष्टि से इन सब प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए अपने समाज में नज़र डालें तो हमें वर्तमान समय में भी देश में धार्मिक सौहार्द्र और सहयोग के ऐसे कई उदाहरण देखने को मिल जाएंगे जहां विभिन्न धर्मों के लोग भारत की विविधता और सहिष्णुता की समृद्ध विरासत का जश्न मनाते हुए नज़र आते हैं । उनके लिए केवल मानवता का संदेश और मानवीय भावना ही सर्वोपरि है । जहां एक ओर लोग समाज में दोस्ती, प्रेम, सहयोग और निस्वार्थता के उदाहरण क़ायम कर रहे हैं वहीं अपने से अलग धर्म, निष्ठा, भाषा और पृष्ठभूमि के लोगों में मानवता तथा विश्वास को फिर से बहाल करने की कोशिशों में भी सफल हो रहे हैं ।

केरल की एक मस्जिद में वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया गया, अग्नि प्रज्वलित हुई और पूरे रीति-रिवाजों से सात फेरे भी लिए गये । दरअस्ल, 19 जनवरी, 2020 को मस्जिद में 22 वर्षीय मंजू की शादी करायी गयी । भाईचारे की मिसाल पेश करते हुए मुस्लिम समुदाय के लोगों ने न केवल मस्जिद में हिंदू रीति-रिवाजों के लिए मंज़ूरी दी बल्कि इस विवाह के लिए आर्थिक सहायता भी की ।

केरल की 'चेरुवल्ली मस्जिद जमाअत कमेटी' के सचिव 'नुजुमुद्दीन अलूम्मोत्तित' ने बताया कि 2018 में अंजू के पिता अशोकन की मृत्यु के बाद से परिवार बहुत कठिन हालात का सामना कर रहा है । छोटे बेटे की शिक्षा के लिए उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मदद की थी लेकिन इस बार अंजू की माता ने बेटी की शादी के लिए मस्जिद कमेटी से अपील की थी क्योंकि ख़र्चा काफ़ी ज़्यादा था । मस्जिद कमेटी ने अंजू की शादी में 2 लाख रुपये और 10 सोने के सिक्के भी उपहार में दिये । एक हज़ार लोगों के भोजन की भी व्यवस्था की गयी थी । शादी का कार्ड सोशल मीडिया में काफ़ी वायरल हुआ जिसमें जमाअत कमेटी की ओर से सभी को आमंत्रित किया गया था । अंजू की मां बिंदु अशोकन ने जमाअत का धन्यवाद किया । सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने वाले कांग्रेस के नेता 'शशि थरूर' ने इस घटना पर एक ट्वीट करते हुए कहा कि केरल में हुई यह शादी सांप्रदायिक सौहार्द्र और सहयोग की एक महान गाथा

है ।

लुधियाना के पास नाथोवाल गांव के सिख और हिंदू समुदाय के लोगों ने एक पुरानी मस्जिद की मरम्मत में मदद की । परियोजना की लागत का ख़र्च 25 लाख रुपये था, इसमें 15 लाख का योगदान सिखों और हिंदुओं ने दिया । तीनों समुदाय इस गांव में शांति से रहते हैं । मुस्लिम और हिंदू समुदाय के लोग भी गुरुद्वारे के कामों में योगदान देते हैं । गांव के निवासियों ने बताया कि वे सभी त्योहार जैसे दिवाली, दशहरा और ईद एक साथ मनाते हैं ।

एक मुस्लिम युवक ने हिंदू प्रार्थना 'हनुमान चालीसा' का उर्दू में अनुवाद इस उम्मीद से किया कि उनका यह क़दम दो समुदायों को एकजुट करेगा । इस प्रकार वे एक दूसरे की संस्कृति और मान्यताओं को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे ।

उत्तर प्रदेश के जौनपुर के निवासी आबिद अल्वी को यह अनुवाद पूरा करने में 3 महीने का समय लगा । उनकी इच्छा है कि दोनों धर्मों की भाषाओं की किताबों का इसी प्रकार अनुवाद किया जाना चाहिए । वहीं एक हिंदू युवक राजीव शर्मा ने पैग़म्बर मुहम्मद साहब के बारे में पढ़ा और उनकी शिक्षाओं से प्रभावित होकर राजस्थान की एक क्षेत्रीय भाषा 'मारवाड़ी' में उनके जीवन पर एक पुस्तक लिखी । 112 पृष्ठ वाली इस पुस्तक को राजीव ने 'पैग़म्बर रो पैग़ाम' का नाम दिया ।

इस प्रकार के कई सकारात्मक उदाहरण हमारे समाज में आये दिन देखने, सुनने और अनुभव करने को मिल जाते हैं जो आपसी प्रेम और भाईचारे को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभा रहे हैं । इस तरह की घटनाएं केवल आम समाज का ही हिस्सा नहीं है, बल्कि समाज का आईना माने जाने वाले फ़िल्मी जगत में भी ऐसी कई मिसालें सामने आती रहती हैं ।

इसी वर्ष बीते नवम्बर में दीवाली के अवसर पर बॉलीवुड एक्टर काशिफ़ अली के परिवार ने अपनी पुश्तैनी ज़मीन का 'शिव मंदिर' के निर्माण के लिए दान करके सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल पेश की है । क्षेत्र के सभी लोग इस परिवार की सराहना कर रहे हैं । काशिफ़ अली ने बताया कि 1976 में उनके दादा क़ासिम अली ने यह ज़मीन इंदिरा नगर में शिव मंदिर के नाम मौखिक रूप से दान कर दी थी जिसे अब उनके चाचा आसिम अली ने परिवार की सहमति से लिखित रूप में मंदिर के नाम कर दिया । मंदिर की एक कमेटी का गठन किया गया है और साथ ही मंदिर में हर संभव योगदान का भी आश्वासन दिया गया है । हाजी आसिम अली का कहना है कि वे समाज को भाईचारे का संदेश देना चाहते हैं ।

देश के कई राज्यों, क्षेत्रों और तबक़ों से आये दिन आने वाले ऐसे उदाहरण देखते हुए यह कहना कि आज देश में आपसी प्रेम, सहयोग, सद्भाव और सांप्रदायिक सौहार्द्र पूरी तरह ख़त्म हो गया है, ग़लत होगा । जहां एक ओर सांप्रदायिक विद्वेष की ख़बरें समाज में भय, अविश्वास और नकारात्मक भावनाओं को जन्म दे रही हैं, वहीं ऐसे उदाहरण हमें अपनी दृष्टि और मानसिकता को बदलने पर मजबूर कर देते हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस बात को स्वीकारा गया है कि भारत जैसे बहु-धार्मिक तथा बहु-सांस्कृतिक देश में, जहां संवेदनशील परिस्थितियां सदैव बने रहने की आशंका रहती है, फिर भी सांप्रदायिक सौहार्द्र को देश की हर गली और मोहल्ले में महसूस किया जा सकता है ।

धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़ी अमेरिकी संस्था (यूएससीआई आरएफ़) 'कमीशन फॉर इंटरनेशनल रिलीजस फ़रीडम' के एक आयुक्त 'तेनजी दोरजी', जो यूएससीआईआरएफ़ के पहले तिब्बती आयुक्त हैं, ने अमेरिका एक स्वतंत्र द्वि-दलीय बैठक में अपने एक बयान में कहा कि 'समूचे भारत में विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच धार्मिक सौहार्द है । कुल मिलाकर मैंने भारत के विभिन्न पंथों के बीच धार्मिक सौहार्द्र देखा और महसूस किया है ।

भारत विश्व की प्राचीन महान सभ्यताओं में से एक है जो हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख जैसे बड़े धर्म का जन्म स्थल है तथा विभिन्न धर्मों के लोगों का घर है ।' यह पहला मौक़ा था जब यूएसीआरआईआरएफ में किसी ने भारत पर इस प्रकार का विपरीत बयान दिया ।

भारत एक विभिन्न पुष्पों से सजे हुए उस गुलदस्ते के समान है जिसकी सुगंध और सुंदरता कभी नष्ट नहीं की जा सकती । हमें संयम और प्रेम से काम लेकर भारतीय संस्कृति के रंगों की चमक और संविधान की गरिमा को बनाए रखना है । हमें ये कभी नहीं भूलना होगा की मानवता ही प्रथम धर्म है और यही हर धर्म और हमारे देश के संविधान का भी संदेश है ।

अपराध मुक्त समाज के लिए इस्लामी जीवन व्यवस्था ज़रूरी

✍ **ज़हीर ललितपुरी**

इन्सानी इतिहास के किसी दौर में, अगर किसी जगह शत-प्रतिशत इस्लामी जीवन व्यवस्था क़ायम रही है तो वो जगह उस दौर में अपराध मुक्त रही है । आज भी अगर दुनिया के लोग चाहते हैं कि दुनिया में अपराध और अपराधियों को जड़ से ख़त्म कर ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जिसमें आम इन्सान निडर और निश्चिंत रहकर चैन के साथ रह सकें, तो उन्हें इस्लामी आस्थाओं, शिक्षाओं और सिद्धांतों पर आधारित जीवन व्यवस्था की अवधारणा पर ग़ौर करना चाहिए । अपराध मुक्त समाज मानवजाति की बहुत बड़ी ज़रूरत है जो इस्लामी जीवन व्यवस्था की स्थापना से ही संभव है ।



हालांकि आज दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं जहां शत-प्रतिशत इस्लामी जीवन व्यवस्था क़ायम हो, लेकिन आज भी जिन मुस्लिम देशों में लोग इस्लामी शिक्षाओं, सिद्धांतों और आस्थाओं के मुताबिक़ जीवन-यापन करते हैं, जिन देशों में हक़ीक़त में इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ फ़ैसले होते हैं, राजनैतिक व्यवस्था अमली तौर पर इस्लामी आदेशों की बुनियाद पर क़ायम है, जहां मुस्लिम परिवार में इस्लामी संस्कार ज़िंदा है, वहां सामाजिक बुराइयों, अनैतिक कामों, अपराध और अपराधियों के लिए कोई जगह नहीं है ।

अपराध मुक्त समाज की ज़रूरत नयी नहीं है । यह ज़रूरत कल भी थी, आज भी है और कल भी रहेगी । हमेशा अपराध और अपराधी मानव समाज के सबसे बड़े दुश्मन रहे हैं । मानव सभ्यता के आरंभ से लेकर अब तक ये सवाल महत्वपूर्ण रहा है कि अपराध और अपराधियों की रोकथाम कैसे हो । हर युग में धर्म, समाज, क़ानून, न्यायालय, राजनीतिक एवं प्रशासनिक संस्थाओं की मंशा भी यही रही है कि ऐसा सामाजिक वातावरण तैयार किया जाए जिसमें न अपराध हों, न अपराधी । आज भी ऐसी कोशिशें लगातार होती रहती हैं कि मानव समाज पूरी तरह से अपराध मुक्त हो जाए और शांतिप्रिय नागरिक चैन से रह सकें ।

दुनिया के कई देशों में अपराध और अपराधी लगातार तेज़ी से बढ़ रहे हैं । मौजूदा दौर की मानव निर्मित जीवन व्यवस्थाएं अपराधियों को और अपराध को रोकने में नाकाम साबित हो रही हैं । वर्तमान काल में दुनिया में बढ़ते हुए अपराध गंभीर चिंता का विषय हैं । भारत में भी आपराधिक घटनाओं का ग्राफ़ बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है । केन्द्र सरकार और किसी भी प्रांत की सरकार अपराधों की रोकथाम नहीं

कर पा रही है । अपराधी स्वच्छन्द घूम रहे हैं और आम लोगों का जीना दूभर व घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है । सभ्य समाज और राजनीतिक व्यवस्था के लिए यह कलंक का विषय है । इसके लिए समाज का हर व्यक्ति ज़िम्मेदार है । इसलिए समाज के हर नागरिक का अपराधों के प्रति जागरूक होना और उनकी रोकथाम के लिए प्रयासरत होना ज़रूरी है ।

अपराध और मानव समाज का चोली-दामन का साथ है । जब से मानव समाज अस्तित्व में आया तभी से अपराधों ने जन्म लिया और अपराधी वजूद में आये । हर युग में अपराध और अपराधियों की रोकथाम के प्रयास भी हुए लेकिन न अपराध ख़त्म हुए और न अपराधी । क़ानून, प्रशासन, न्यायालय, राजनैतिक संस्थाएं, संसद और विधान सभाओं की ओर से हमेशा कोशिशें होती रहीं । धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक संगठनों ने भी अपराधों को रोकने के लिए कई आंदोलन चलाये मगर अपराधों को जड़ से ख़त्म करना मुमकिन नहीं हो सका । आज भी अपराध रहित समाज की कल्पना करना मुमकिन नहीं । इस बात पर चिंतन-मनन की ज़रूरत है कि समाज से अपराध और अपराधियों को कैसे ख़त्म किया जाए ।

अपराध मुक्त समाज बनाने के लिए ज़रूरी है कि क़ानून, न्यायालय, राजनीतिक एवं प्रशासनिक संस्थाएं ईश्वर के आदेशों, ईश्वरीय शिक्षाओं और सिद्धांतों के अधीन रहकर प्रयास करें । विभिन्न धर्मों के आस्था और विश्वास भी अपराधियों को अपराध करने से रोकने के लिए कारगर रोल निभाते रहे हैं । लेकिन हक़ीक़त में अंतिम ईश्वरीय धर्म इस्लाम की आस्थाओं, विश्वासों और सिद्धांतों पर आधारित शिक्षाओं, उपदेशों और आदेशों के ज़रिये अपराधियों का सुधार भी किया जा सकता है, अपराध को ख़त्म भी किया जा सकता है । इस्लाम के क़ानून, परंपराएं और जीवन व्यवस्था ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जिसमें अपराध मुक्त समाज का विकसित होना संभव है ।

इस्लाम धर्म की धारणाएं, आस्था, विश्वास, नीति निर्देशक तत्व, सभी इन्सानों को नियमित, संयमित, अनुशासित और संस्कारित जीवन जीने की राह दिखाते हैं और उस पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं । इस्लाम धर्म जिन धारणाओं और मान्यताओं पर विश्वास करने तथा आस्था रखने का उपदेश देता हैं वह यह है कि दुनिया का मालिक ईश्वर एक है । वह सम्प्रभू, सर्वशक्तिमान और कालजयी है । उसी ने इन्सान और सृष्टि को पैदा किया है । वही इन्सान और सृष्टि का मालिक, स्वामी, संचालक, पालनहार व करता-धरता है । उसने मानव के जीने के लिए नियम क़ानून भी बनाए हैं और उन नियमों के अनुसार जीवन-यापन करना, समाज, सभ्यता और संस्कृति का निर्माण करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है ।

इस्लामी शिक्षा और उपदेश ये भी सिखाते हैं कि ईश्वर इन्सान और सृष्टि का मालिक, स्वामी, संचालक, पालनहार व करता-धरता होने के साथ-साथ न्यायाधीश और दंडाधिकारी भी है । अगर वह इन्सानों के अच्छे कर्मों के बदले में इनाम देता है तो उनके बुरे कर्मों की सज़ा भी देता है । जिस तरह इन्सान को अच्छे कर्मों का इनाम दुनिया में भी मिलता है मरने के बाद स्वर्ग में भी मिलेगा, उसी तरह बुरे कर्मों की सज़ा इन्सानों को दुनिया में भी मिलती है और मरने के बाद नरक में भी भोगनी पड़ेगी । जिन इन्सानों को इन शिक्षाओं और उपदेशों पर विश्वास है वे हमेशा बुराइयों से और अपराध से बचते हैं । ऐसे व्यक्ति ख़ुद भी अपराध से दूर रहते हैं और दूसरों को भी अपराध करने से रोकते हैं ।

आजकल अपराध में बढ़ोत्तरी का एक बड़ा कारण चारित्रिक पतन है । अच्छे चरित्र का निर्माण नैतिक शिक्षाओं पर आधारित उच्चतम मानव मूल्य, संस्कार और मानदंड करते हैं । इस्लामी जीवन व्यवस्था का मुख्य आधार उसकी वे नैतिक शिक्षा है जो व्यक्ति का चरित्र निर्माण करती है । यह इस्लामी नैतिक शिक्षा व्यक्ति को यह सिखाती है कि उसके अस्तित्व का उद्देश्य और ईश्वर से उसका संबंध क्या है, ईश्वर के प्रति, मानव समाज के प्रति, ख़ुद अपने प्रति उसके कर्तव्य और दायित्व क्या हैं, उसे किस तरह से जीवन-यापन करना चाहिए । यह इस्लामी नैतिक शिक्षा यह भी सिखाती है कि इन्सान हमेशा ईश्वर के निगाहों में और निगरानी में है । वह जो भी करता है ईश्वर उसे देखता है । इसलिए ईश्वर को मानने उस पर विश्वास रखने वाला इन्सान हमेशा ईश्वर की ख़ुशी के लिए अच्छे काम करता है और बुरे कामों से बचता है । मनुष्यों के चरित्र निर्माण की यह प्रक्रिया अपराध मुक्त वातावरण को तैयार करने में सहायक होती है ।

इस्लाम धर्म यह भी शिक्षा देता है कि किसी भी व्यक्ति को ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे किसी का

जीवन समाप्त हो जाए या ख़तरे में पड़ जाए, यह बहुत बड़ा गुनाह है । किसी को शारीरिक और मानसिक कष्ट पहुंचाना, अनधिकृत रूप से किसी की सम्पत्ति को छीनना, लूटना और हड़पना, किसी की इज़्ज़त-आबरू को नुक़्सान पहुंचाना, बेईमानी और भ्रष्टाचार, ज़िनाकारी और क़त्लो-ग़ारतगरी, गुंडागर्दी और दहशतगर्दी, ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी आदि इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ बहुत बड़े गुनाह हैं । हर गुनाह की उसके मुताबिक़ सज़ा है । कोई भी गुनहगार इन गुनाहों की नैसर्गिक और प्राकृतिक सज़ा से नहीं बच सकता ।

आस्थाओं और नैतिक शिक्षाओं के अलावा इस्लामी जीवन व्यवस्था में उन सिद्धांतों की बुनियाद पर क़ानून, अदालत और प्रशासनिक संस्थाओं की स्थापना की जाती है जो सारे इन्सानों की हिफ़ाज़त के लिए बनाए गये हैं और सबकी अस्मिता, समानता और स्वतंत्रता की हिफ़ाज़त करते हैं । इस्लामी क़ानून, अदालत और प्रशासनिक व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण मूलभूत सिद्धांत है कि कोई अपराधी क़ानून की नज़र से बच न सके लेकिन किसी निर्दोष के साथ ऐसी नाइन्साफ़ी भी न हो कि उसे उस जुर्म की सज़ा को भुगतना पड़े जो उसने नहीं किया हो ।

इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार क़ातिल, बलात्कारी या कोई भी अपराधी सिर्फ़ अपराधी है और उसके साथ सिर्फ़ अपराधी जैसा व्यवहार होना चाहिए, लेकिन उसे अपराधी तभी माना जाए जब निष्पक्ष क़ानूनी और न्यायिक प्रक्रिया अपनाने के बाद उसके विरुद्ध अपराध साबित हो जाए । उसे सज़ा भी तभी दी जानी चाहिए जब उसके विरुद्ध निष्पक्ष क़ानूनी प्रक्रिया का पालन किया गया हो और उसके मुक़दमे में न्यायालय में निष्पक्ष रूप से कार्यवाही की गयी हो ।

वस्तुतः इस्लामी जीवन व्यवस्था में अपराध मुक्त समाज की स्थापना के अवसर हमेशा उपलब्ध रहते हैं । हालांकि इस दौर में ख़ुद मुसलमानों की उदासीनता और लापरवाही की वजह से इस्लामी जीवन व्यवस्था की अवधारणा लोगों के सामने नहीं है । बल्कि मुसलमानों की ग़लतियों और इन्सान दुश्मन ताक़तों की साज़िशों की वजह से इस्लाम धर्म की छवि ख़राब हो गयी है । लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि तमाम इन्सानों की भलाई इस्लामी जीवन व्यवस्था में है । इसलिए इस दौर में भी अपराध मुक्त समाज बनाने के लिए इस्लामी जीवन व्यवस्था को क़ायम करना ज़रूरी है ।

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, सब्र और नमाज़ से मदद लो । अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है ।''

(क़ुरआन, 2:153)

A WELL WISHER

Md. Musab Malerkotla

اسلامک سینٹر، ویلور

19/4 ،مدار صاحب گلی، آرین پالیم، ویلور۔ 632 001

اپیل برائے تعاون

پچھلے چالیس سال سے نومسلموں کی تعلیم وتربیت کے لئے ایک نئے انداز میں تعلیمی خدمات

سہ ماہی دینیات کورس کی ایک جھلک
فارغ طلباء وطالبات

1978-1990	کے دوران مرد	1942	خواتین	480	کُل	2400
1991-2000	کے دوران مرد	2032	خواتین	1272	کُل	3304
2001-2010	کے دوران مرد	900	خواتین	865	کُل	1765
2011-2018	کے دوران مرد	579	خواتین	762	کُل	1341
	مرد	5453	خواتین	3379	کُل	8832

تین سالہ عالمہ کورس کلیۃ المعارف کی فارغ طالبات

+2 یا 10th کے کامیاب طالبات کے لئے

2001-2008	ایک تا پانچ گروپ	24	لڑکیاں
2005-2013	چھ تا دس واں گروپ	16	لڑکیاں
2011-2018	گیارہ تا پندرہ گروپ	30	لڑکیاں
2016-2019	سولہ تا اٹھارواں گروپ	25	لڑکیاں
	کُل 18 گروپ	95	لڑکیاں

اسلامک اکاڈمی (پوسٹل لائبریری) کے مستفیضین

سال	مسلم	غیر مسلم	تمل کتابوں کی ترسیل	کورس مکمل کرنے والے افراد
2003-10	5032	4477	14777	118
2011-18	5497	2190	11484	269
کُل	10529	6667	26261	387

مدورائی طلباء کے ہاسٹل:

نومسلمین کے بچوں کی اعلیٰ اور فنی تعلیم کے لئے مدورائی میں رہائش وطعام کی سہولت کے ساتھ ہاسٹل قائم کیا گیا۔ پڑھائی کے دوران اُن کے عقائد عبادات اور طور طریق کی نگرانی اور تربیت کی جاتی ہے۔

دیہاتوں میں مساجد:

کل 25 مساجد تمل ناڈو کے جنوبی اضلاع کے دیہاتوں میں بنوائی گئیں۔ اب 18 رمساجد کی دیکھ بھال وانتظام وانصرام اور اماموں کے ذریعہ مکاتب کا قیام اور دیہاتوں کے روزمرہ کے مسائل کے حل اور داعی کی حیثیت سے مسجد کے امام دیہاتوں کے نومسلم خاندان کی خدمت انجام دے رہے ہیں۔

ان تمام خدمات کے مصارف صرف زکوۃ، صدقات اور اعانتوں ہی سے پورے کئے جاتے ہیں۔ آپ سے دامے درمے سخنے تعاون کی درخواست کی جاسکتی ہے۔

Bank:Union Bank of India
Branch :Vellore (IFSC : UBIN053301)
A/c.No.33300-10100-19006

अन्तर्धार्मिक विवाह : धर्म, समाज और क़ानून की दृष्टि में

✍ **गुलज़ार सहराई**



भारतीय समाज में विवाह को लेकर पहले भी दो अतिवादी दृष्टिकोण पाये जाते रहे हैं और आज भी पाये जाते हैं । पहला दृष्टिकोण यह है कि विवाह केवल दो व्यक्तियों (स्त्री-पुरुष) का मिलन ही नहीं है, बल्कि यह दो परिवारों को भी एक दूसरे से जोड़ता है और इस प्रकार पूरे समाज से इसके तार जुड़े होते हैं । ऐसे में दो व्यक्तियों (स्त्री-पुरुष) में यदि धर्म, संस्कृति, परंपराओं, रीति-रिवाजों, खान-पान, रहन-सहन, आर्थिक स्थिति आदि में भिन्नता होगी तो आने वाले जीवन में समस्याएं उत्पन्न होंगी । इसलिए विवाह के समय इन सब मामलों में समरूपता होनी चाहिए । इसके लिए इस विचारधारा के समर्थकों ने कुछ नियम भी गढ़ लिये हैं ।

दूसरी ओर वे लोग हैं, जिनका मानना है–'न उम्र की सीमा हो, न जन्म का हो बंधन । जब प्यार करे कोई, तो देखे केवल मन ।' और 'रस्म क्या रिवाज क्या, धर्म क्या, समाज क्या । दुश्मनों का ख़ौफ़ क्यों, दोस्तों की लाज क्या ।' इन लोगों की दृष्टि में उपर्युक्त भिन्नताएं कोई अर्थ नहीं रखतीं, क्योंकि इनका मानना यह है कि विवाह एक वयस्क स्त्री और एक वयस्क पुरुष का निजी मामला है और किसी अन्य को, यहां तक कि उनके परिवार वालों को भी, इसमें दख़ल देने का कोई अधिकार नहीं है ।

ये दोनों परस्पर विरोधी विचारधाराएं किसी एक धर्म या संप्रदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सभी धर्मों के मानने वालों में पायी जाती हैं । हिन्दुओं में पहली विचारधारा के समर्थक दूसरे धर्म से नाता जोड़ना तो दूर रहा, अपने सहधर्मियों में भी विवाह करने के लिए जाति, गोत्र-वंश, जन्मकुण्डली और न जाने क्या-क्या मिलाने की वकालत करते हैं, वहीं मुस्लिम समाज भी जाति-बिरादरी के अलावा मसलकों के आधार पर बंटा होने के कारण, ख़ुद मुसलमान लड़का और मुसलमान लड़की की शादी को लेकर कई बंधनों में बंधा हुआ है । यहां भी अधिकांश मां-बाप की प्रबल इच्छा यही होती है कि उनके बेटे या बेटी का विवाह उन्हीं के मसलक और बिरादरी में हो । कुछ लोग इसके कट्टर समर्थक होते हैं और अपने विचार मुखर रूप से रखते हैं, वहीं कुछ लोग खुलकर इसका इज़हार तो नहीं करते, परन्तु व्यावहारिक रूप से वे भी बिरादरी और मसलक की बंदिशों में बंधे रहना ही श्रेयस्कर समझते हैं और इससे बाहर

निकलना उचित नहीं समझते । विडंबना यह है कि मुस्लिम समाज के ऐसे लोग अपने विचारों को इस्लाम सम्मत बताते हैं । उनके ये विचार कितने इस्लाम सम्मत हैं, इस पर हम आगे चर्चा करेंगे ।

दूसरी ओर उपर्युक्त दोनों समाजों, बल्कि हर समाज में, ऐसे लोग भी पाये जाते हैं, जो जाति-बिरादरी ही नहीं, धर्म की सीमाओं को भी ग़ैर-ज़रूरी समझते हैं । उनका मानना होता है कि धर्म एक अत्यंत निजी मामला है, इसलिए उन्हें इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि उनका जीवन-साथी किसी और धर्म का मानने वाला हो । ऐसे समाजों से संबंध रखने वाले युवक-युवतियों के लिए अन्तर्धार्मिक विवाह में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती, क्योंकि उनका पूरा समाज उन्हीं के जैसे उन्मुक्त विचारों वाला होता है, जैसा कि अत्याधुनिक परिवारों उदाहरणार्थ फ़िल्मी दुनिया से जुड़े लोगों में हम देखते हैं कि वहां अन्तर्जातीय क्या, अन्तर्धार्मिक विवाह भी कोई समस्या नहीं है । न वहां कोई कथित 'लव जिहाद' के ख़िलाफ़ किसी प्रकार का अभियान चलाता है, न कोई 'ऑनर किलिंग' के बारे में सोचता है । दिक़्क़त तब होती है, जब धर्म, संस्कृति और जाति के बंधनों में जकड़े हुए किसी परिवार का कोई व्यक्ति इन बंधनों को तोड़ने का 'दुस्साहस' करता है ।

विवाह के संबंध में क़ानून का पक्ष

जहां तक भारतीय संविधान और क़ानून का सवाल है, तो इस मामले में उन्मुक्त विचार के लोगों के लिए कोई रुकावट नहीं है । भारतीय संविधान का अनुच्छेद-21 कहता है कि "किसी भी व्यक्ति को विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त उसके जीवन और वैयक्तिक स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता ।" व्यक्तिगत स्वतंत्रता के इस अधिकार के अन्तर्गत विवाह का अधिकार भी शामिल है । जैसा कि 1954 में बने विशेष विवाह अधिनियम से भी साबित होता है । इस अधिनियम के अनुसार विवाह की जो शर्तें हैं, वे ये हैं–

(1) विवाह करने वाले दोनों पक्षों में से किसी का भी कोई जीवित पति/पत्नी नहीं होना चाहिए ।

(2) दोनों पक्षों में कोई भी पक्ष मानसिक असंतुलन के कारण क़ानूनी रूप से सम्मति देने में असमर्थ नहीं होना चाहिए ।

(3) दोनों पक्षों में कोई भी ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह क़ानूनी रूप से वैध सम्मति तो दे सकता/सकती हो, परन्तु मानसिक तौर पर विकार ग्रसित होने के कारण वह विवाह और संतानोत्पति के योग्य न हो ।

(4) दोनों में से किसी भी पक्ष को उन्मत्तता (Mental Insanity) के दौरे न पड़ते हों ।

(5) विवाह कर रहे पुरुष की उम्र 21 वर्ष या उससे अधिक और महिला की उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए । दोनों पक्ष एक-दूसरे के प्रति निषिद्ध संबंध के दायरे (Degree of prohibited relationship) में नहीं आने चाहिएं ।

यह स्पष्ट है कि इन शर्तों में कहीं भी दोनों के सहजाति या सहधर्मी होने की शर्त नहीं लगायी गयी है, न जातियों या धर्मों की भिन्नता को कोई दोष या रुकावट माना गया है । इससे यह साबित हो जाता है कि समाज और धर्मों की मान्यताएं जो भी हों, क़ानूनी रूप से अन्तर्जातीय या अन्तर्धार्मिक विवाह में कोई रुकावट नहीं है ।

विवाह के लिए धर्म परिवर्तन क्यों?

जहां तक धार्मिक स्वतंत्रता का प्रश्न है, तो संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म को मानने की, आचरण करने की तथा धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता है । अगरचे संविधान में 'धर्म परिवर्तन' का शब्द इस्तेमाल नहीं हुआ है, लेकिन वैचारिक स्वतंत्रता के तहत किसी भी धर्म को अंगीकार करने में धर्म परिवर्तन स्वत: ही शामिल हो जाता है ।

लेकिन यहां सवाल यह पैदा होता है कि जो लोग जाति-धर्म आदि की बन्दिशों को नहीं मानते, परिवार के सदस्यों की भी परवाह नहीं करते, उन्हें जब क़ानून भी यह अधिकार देता है कि वे बिना अपना धर्म बदले विवाह कर सकते हैं तो आख़िर ऐसे लोग विवाह करते समय धर्म क्यों बदलते हैं ?

यहां यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि जो लोग मात्र विवाह के लिए धर्म परिवर्तन करते हैं, वे वस्तुत: वही लोग होते हैं, जिन्हें वास्तव में धर्म से कोई लेना-देना नहीं होता । वरना जहां तक स्वाभाविक धर्म परिवर्तन का सवाल है, तो यह स्पष्ट रूप से विचारधारा के परिवर्तन का मामला है, और विचारधारा न किसी से जबरन बदलवायी जा सकती है, न किसी को ख़ुश करने के लिए बदली जा सकती है । ऐसे में यह समझना ज़रा भी मुश्किल नहीं कि विवाह के लिए

धर्म परिवर्तन करने वाले केवल अपनी मुश्किलों को कम करने के लिए यह रास्ता अपनाते हैं ।

सबसे पहली मुश्किल परिवार और समाज की तरफ़ से होती है, जो इस बात को सहजता से स्वीकार नहीं करता कि कोई विधर्मी उसके परिवार और समाज का अंग बने । अगरचे ऐसी ही रुकावटें अन्तर्जातीय विवाह करने वालों के सामने भी आती हैं, परन्तु अन्तर्धार्मिक विवाहों में इनकी गंभीरता और संवेदनशीलता बहुत बढ़ जाती है । ऐसे में प्रेमी-प्रेमिका दोनों के पास एक ही रास्ता बचता है कि दोनों में से कोई एक अपने कथित धर्म का 'बलिदान' कर दे । इस 'बलिदान' से कम से कम उसे इतना लाभ तो अवश्य मिलता है कि उसके जीवन साथी का परिवार और समाज उसे न चाहते हुए भी स्वीकार कर लेता है, जबकि धर्म परिवर्तन न करने की स्थिति में नव दंपत्ति को दोनों समाजों का बायकाट बरदाश्त करना पड़ता है ।

धर्म परिवर्तन की आवश्यकता उन पुरुषों को भी पड़ती है, जो एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना चाहते हैं, जबकि उनका धर्म इसकी अनुमति न देता हो । जैसा कि ऊपर उल्लिखित हुआ है कि 1954 में बने विशेष विवाह अधिनियम की पहली शर्त है कि 'विवाह करने वाले दोनों पक्षों में से किसी का भी कोई जीवित पति/पत्नी नहीं होना चाहिए ।' ऐसी स्थिति में अपने दूसरे विवाह को वैध ठहराने के लिए उनके पास एकमात्र रास्ता यही बचता है कि कथित रूप से कोई ऐसा धर्म अपना लिया जाए, जिसमें बहुपत्नीत्व को वैध माना जाता हो ।

विवाह के लिए धर्म परिवर्तन का एक कारण और भी है । चूंकि अन्तर्धार्मिक विवाहों को परिवार एवं समाज की स्वीकृति प्राप्त नहीं होती, इसके विपरीत उनकी ओर से इसका मुखर विरोध होता है, जो कई बार उग्र रूप भी धारण कर लेता है, जिसमें जान से मार देने तक की नौबत आ जाती है । दूसरी ओर क़ानून भी उन्हें तुरत-फुरत हरी झंडी नहीं दे देता, बल्कि इसके लिए एक महीने का अग्रिम नोटिस देना होता है । इस बीच क्या कुछ घटेगा, लड़का और लड़की दोनों इस भय से आतंकित होते हैं । एक तो विवाह की वैसे ही जल्दी होती है, उस पर से समाज का डर, ऐसे में उन्हें एक ही उपाय सूझता है कि उनमें से कोई एक कथित रूप से धर्म परिवर्तन कर ले और फिर उसी धर्म के अनुसार विवाह कर लिया जाए ।

समाज का दृष्टिकोण

जहां तक समाज का संबंध है, हर धर्म के अत्याधुनिक विचारों वाले उच्च वर्ग के लिए यह कोई समस्या नहीं है, क्योंकि इस वर्ग के लिए धर्म कोई मायने ही नहीं रखता और अगर रखता भी है तो मात्र फ़ैशन के तौर पर, जो कुछ रस्मों तक सीमित होता है । इसलिए उन्हें इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि उनके बीच कोई ज़रा भिन्न प्रकार की रस्में निभाने वाला आ जाए । धर्म के बारे में इस वर्ग की सोच यह होती है–'यह मस्जिद है वह बुतख़ाना, चाहे यह मानो चाहे वह मानो । मक़सद तो है दिल को समझाना, चाहे यह मानो चाहे वह मानो ।'

रहा पिछड़ा और निम्न वर्ग, तो इस वर्ग के लोग प्रायः अपने-अपने दायरे में सिमटे रहते हैं । अन्य धर्म के लोगों से उनका संबंध अव्वल तो होता ही नहीं है, और अगर होता भी है तो बस औपचारिक सा । यह वर्ग अपने धर्म और संस्कृति की मान्यताओं के प्रति अगाध श्रद्धा रखता है, जिसके कारण भी यह अन्य धर्म वालों से दूर रहता है । कुछ ऐसा ही हाल मध्यम वर्ग का भी है ।

अब बचते हैं वे उच्च मध्यम वर्ग वाले लोग, जो न तो अत्याधुनिक उच्च वर्ग की तरह इतने 'प्रगतिशील' विचारों के होते हैं कि धर्म उनके लिए निरर्थक हो जाए और न इतने कट्टर धार्मिक होते हैं कि अपने ही समाज तक सीमित रहें । आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने के कारण ये अपने बच्चों को उच्च शिक्षा तो दिलाते ही हैं, उन्हें भरपूर आज़ादी भी देते हैं । उनके लिए न तो सहशिक्षा कोई समस्या होती है, और न पुरुष और महिलाओं का साथ-साथ काम करना उन्हें आपत्तिजनक लगता है, जो इस प्रकार के विवाहों का मूल प्रेरक बनता है ।

हां, इन आज़ादियों के बावजूद उनके लिए धर्म और जाति इतना महत्व ज़रूर रखते हैं कि वे इनकी परिधि से बाहर रिश्ते करना उचित नहीं समझते । दिक़्क़त तब आती है जब उनकी यह 'सीमित आज़ादी' उनकी नयी नस्ल की 'पूर्ण आज़ादी' से टकराती है । धर्म, और उससे बढ़कर समाज का डर उन्हें अपनी नयी नस्ल की 'पूर्ण आज़ादी' को स्वीकार करने से रोकता है, तो दूसरी तरफ़ उन्हीं की प्रगतिशीलता से शह पाकर आगे बढ़ने वाली नयी नस्ल बग़ावत पर आमादा दिखायी देती है । ऐसे में कुछ लोग इस 'पूर्ण आज़ादी' को पचा नहीं पाते और नयी नस्ल का पूर्ण

बहिष्कार कर देते हैं, दूसरे प्रकार के लोग बीच का रास्ता अपनाते हुए, धर्म परिवर्तन की शर्त के साथ नये सदस्य को स्वीकार करने पर आमादगी जता देते हैं । ऐसी स्थिति में प्राय: लड़की ही को धर्म परिवर्तन करना पड़ता है, इसलिए कि उसी को दूसरे परिवार और समाज में जाकर 'एडजस्ट' होना होता है ।

ज्ञात रहे कि यह सब सर्वसहमित से होता है । विवाह के लिए बलात् धर्म परिवर्तन का प्रोपेगंडा करने वाले और इसके लिए 'लव जिहाद' जैसी हास्यास्पद शब्दावली का प्रयोग करने वाले आज तक ऐसा कोई प्रमाण पेश नहीं कर सके जब शादी के लिए किसी युवती का जबरन धर्म परिवर्तन कराया गया हो । दिलचस्प बात यह है कि जो लोग विवाह के लिए होने वाले इस धर्म परिवर्तन को क़ानून द्वारा रोकना चाहते हैं, वे इस मामले में दोहरा मापदंड रखते हैं । उन्हें इस बात पर तो बहुत आपत्ति होती है कि कोई हिन्दू युवती किसी मुस्लिम युवक से विवाह कर ले, परन्तु यदि इसके उलट होता है, तो इस पर उन्हें न केवल कोई आपत्ति नहीं होती, बल्कि वे ऐसे विवाहों को प्रोत्साहित करते हैं । यही दोहरी नीति है जिसके चलते वे हिन्दू युवती और मुस्लिम युवक की शादी को तो 'लव जिहाद' का नाम देकर और उसे जबरिया या धोखाधड़ी से की गयी शादी ठहराकर ग़ैर-क़ानूनी घोषित कराना चाहते हैं, जबकि मुस्लिम युवती और हिन्दू युवक के बीच हुई शादी में उन्हें न कोई साज़िश नज़र आती है, न कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती । उसे वे दोनों की सहमति से हुआ विवाह मानते हैं । ऐसे लोगों को अस्ल दिक़्क़त धर्म परिवर्तन से है जिसे वे किसी न किसी तरह रोकना चाहते हैं और अब उसके लिए क़ानून को ढाल बना रहे हैं ।

इस्लाम का दृष्टिकोण

विवाह, अन्तर्धार्मिक विवाह और धर्म परिवर्तन के संबंध में अन्य धर्मों का दृष्टिकोण क्या है और वे इसे किस प्रकार देखते हैं, इस विषय पर चर्चा करना संबंधित धर्म के विशेषज्ञों का कार्य है । यहां हम केवल इस्लाम का दृष्टिकोण जानने की कोशिश करेंगे ।

जहां तक अन्तर्जातीय विवाहों का सवाल है, इस्लाम में इस संबंध में कोई रुकावट नहीं है, इसलिए कि इस्लाम में जाति प्रथा या वर्ण-व्यवस्था जैसा कोई सिद्धांत नहीं पाया जाता । इस्लाम की नज़र में जाति या क़बीले की हैसियत बस ऐसी ही है कि जैसे हर व्यक्ति का नाम अलग-अलग होता है, ताकि उस नाम से उसे पहचाना जा सके । इसी तरह व्यक्तियों के समूहों को भी अलग-अलग नामों से परिभाषित किया जा सकता है । इस आधार पर किसी को श्रेष्ठ या तुच्छ नहीं समझा जा सकता । इस मामले में क़ुरआन का स्पष्ट आदेश है–

"ऐ लोगो ! हमने तुमको एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और फिर तुम्हारी जातियां और बिरादरियां बना दीं, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो । वास्तव में अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक ईशपरायण है ।" (क़ुरआन, 49:13)

अर्थात् जो जितना अल्लाह से डरकर और उसके आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है, वह उसकी दृष्टि में उतना ही श्रेष्ठ होगा, फिर चाहे भौतिक दृष्टि से उसकी स्थिति कैसी भी हो ।

विवाह के विषय में इस्लाम ने कुछ बहुत ही निकट रिश्तों को निषिद्ध किया है जिनका विस्तृत विवरण क़ुरआन में मौजूद है । उन रिश्तों को निषिद्ध घोषित करने के बाद क़ुरआन कहता है–

"इनके अतिरिक्त शेष स्त्रियां तुम्हारे लिए वैध हैं कि तुम अपने माल के द्वारा उन्हें प्राप्त करो उनकी शुद्धता की रक्षा के लिए, न कि यह काम स्वच्छंद काम-तृप्ति के लिए हो ।" (क़ुरआन, 4:24)

इन 'शेष स्त्रियों' में बिना जाति-बिरादरी का भेद किये सभी मुस्लिम स्त्रियां आ जाती हैं । क़ुरआन के इतने स्पष्ट आदेश के बावजूद जो मुसलमान रिश्ता जोड़ने के लिए जाति-बिरादरी की समानता को अनिवार्य ठहराते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि इस्लाम ने न केवल तमाम मुस्लिम स्त्रियों से निकाह को वैध कर दिया है, बल्कि अहले-किताब (ईसाई और यहूदी) स्त्रियों से भी उनका धर्म परिवर्तन किये बिना विवाह को जायज़ ठहराया है । इस्लाम की इतनी उदारता के बावजूद जाति-बिरादरी की स्वरचित बेड़ियों में जकड़े लोगों का तर्क यह होता है कि रिश्ते के लिए रंग-रूप, शिक्षा, आर्थिक स्थिति आदि में समानता ज़रूरी है, वरना आगे मुश्किलें खड़ी होती हैं । इस तर्क में दम है और रिश्ता करते समय इन बातों का ध्यान रखना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन यहां सवाल यह पैदा होता है कि ये चीज़ें बिरादरियों में कब बंटी हैं ? क्या शिक्षा किसी एक बिरादरी

तक सीमित है, या अमीर केवल किसी एक बिरादरी के लोग होते हैं ? इसी तरह क्या सुन्दरता आदि गुण किसी विशेष जाति तक सीमित हैं ? विवाह में सबसे अधिक वैचारकि समन्वय का महत्व होता है और यह समन्वय भी किसी पूरी जाति के बीच तो क्या एक पूरे परिवार के बीच भी पूरी तरह मौजूद नहीं होता । दो सगे भाइयों और दो सगी बहनों के विचार बिल्कुल एक-दूसरे से भिन्न हो सकते हैं और होते हैं, ऐसे में जाति या बिरादरी के आधार पर लोगों को रिश्ता जोड़ने के अनुकूल या प्रतिकूल ठहराना किसी भी तरह दुरुस्त नहीं ?

इस्लाम के निकट जिस चीज़ को प्राथमिकता देना चाहिए, वह केवल दीनदारी अर्थात् इस्लाम के प्रति वैचारिक एवं व्यावहारिक लगाव है । जैसा कि इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया है–

"किसी स्त्री से चार बातों को सामने रखते हुए निकाह (विवाह) किया जाता है–उसके धन को देखते हुए, उसके ख़ानदान को देखते हुए, उसकी सुन्दरता के कारण और उसकी दीनदारी (धर्मपरायणता) के कारण । तुम्हें तो दीनदारी को प्राथमिकता देनी चाहिए ।" (हदीस : बुख़ारी)

क़ुरआन और हदीस के इतने स्पष्ट आदेशों के बावजूद भारतीय मुस्लिम समाज में जाति-बिरादरी को लेकर जो मानसिकता पायी जाती है, इसके लिए भारतीय संस्कृति का प्रभाव तो ज़िम्मेदार है ही, वे इस्लामी धर्मशास्त्री भी किसी हद तक दोषी हैं, जिन्होंने रिश्ता जोड़ने में 'कुफ़ू' (बराबरी) के महत्व को देखते हुए समाज को विभिन्न बिरादरियों में विभक्त कर दिया, और फिर इस संबंध में कुछ नियम भी गढ़ लिये । यही कारण है कि मुसलमानों में बहुत से लोग बिरादरीवाद को (विशेषकर रिश्ता जोड़ने में) इस्लाम सम्मत समझते हैं ।

अन्तर्धार्मिक विवाह और इस्लाम

जैसा कि ऊपर बताया गया कि विवाह के मामले में इस्लाम जाति-बिरादरी के बंधनों को महत्व नहीं देता, बल्कि वह उदारता का परिचय देते हुए अहले-किताब की स्त्रियों से भी विवाह की अनुमति देता है (देखें क़ुरआन, 5:6)। यहां कोई यह एतिराज़ कर सकता है कि इस मामले में इस्लाम के सिद्धांतों में भेदभाव पाया जाता है कि उसने अहले-किताब की स्त्रियों से मुस्लिम पुरुषों के विवाह की अनुमति दी, परन्तु अहले-किताब के पुरुषों से मुस्लिम महिलाओं को विवाह की अनुमति नहीं दी । इसका कारण भी स्पष्ट है और वह यह कि मुसलमान अहले-किताब (यहूदी एवं ईसाई) के महापुरुषों हज़रत मूसा (अलैहि॰) और हज़रत ईसा (अलैहि॰) को भी अल्लाह का पैग़म्बर मानते हुए उनका पूरा आदर-सम्मान करते हैं, जबकि ईसाई और यहूदी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के प्रति ऐसा आदरभाव नहीं रखते । ऐसी स्थिति में यदि कोई ईसाई या यहूदी युवती मुस्लिम परिवार में आएगी तो उसकी धार्मिक भावनाएं आहत नहीं होंगी, जबकि इसके विपरीत अहले-किताब परिवार में मुस्लिम युवती की धार्मिक भावनाएं आहत होंगी ।

यहां यह भी ध्यान रहे कि इस्लाम ने अहले-किताब की स्त्रियों से विवाह की केवल अनुमति दी है, उसके लिए प्रेरित नहीं किया । जहां तक प्राथमिकता का सवाल है, तो इस मामले में (जैसा कि उपर्युक्त हदीस में बयान हुआ) इस्लाम मुसलमानों में भी उन लोगों से रिश्ता जोड़ने को श्रेयस्कर बताता है, जो दीनदार हों, अर्थात् इस्लाम का अधिक से अधिक अनुपालन करते हों । ऐसे में अहले-किताब से विवाह की अनुमति को आधार बनाकर अन्तर्धार्मिक विवाहों को प्राथमिकता देना किसी भी तरह उचित नहीं कहा जा सकता, न इस्लाम पर यह आरोप लगाया जा सकता है कि वह इस प्रकार के विवाहों की प्रेरणा देता है ।

जहां तक बहुदेववादी धर्मों से रिश्ता जोड़ने का संबंध है, इस्लाम इस प्रकार के विवाहों को पूरी तरह निषिद्ध घोषित करता है । क़ुरआन में स्पष्ट रूप से कहा गया है–

"और मुशरिक (बहुदेववादी) स्त्रियों से विवाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाएं । एक ईमान वाली बांदी (दासी), मुशरिक स्त्री से कहीं उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों ने लगे । और न (ईमान वाली स्त्रियों का) मुशरिक पुरुषों से विवाह करो, जब तक कि वे ईमान न लाएं । एक ईमान वाला ग़ुलाम आज़ाद मुशरिक से कहीं उत्तम है, चाहे वह तुम्हें कितना ही अच्छा क्यों न लगे ।"
(क़ुरआन, 2:221)

क़ुरआन की यह आयत स्पष्ट रूप से बता देती है कि इस्लाम की दृष्टि में ऐसा कोई विवाह मान्य ही नहीं होगा जिसमें एक व्यक्ति मुस्लिम हो जबकि दूसरा पक्ष बहुदेववादी धर्म से संबंध रखता हो । उन दोनों में विवाह तभी हो सकता है, जब बहुदेववादी व्यक्ति इस्लाम स्वीकार कर ले ।

इसका अर्थ यह हरगिज़ नहीं है (जैसा कि प्राय:

अन्तर्धार्मिक विवाह करने वाले जोड़े समझते हैं) कि बस वस्त्रों की तरह इस्लाम धारण कर लेने और मुस्लिम नाम रख लेने से इस्लाम का उद्देश्य पूरा हो जाता है, बल्कि सच तो यह है कि इस प्रकार का धर्मान्तरण इस्लाम के प्रति एक प्रकार का कपटाचार है जिसमें न इस्लाम के प्रति श्रद्धा होती है, न तार्किक रूप से उसके सिद्धांतों को स्वीकार किया गया होता है, बल्कि मात्र आडम्बर होता है । ऐसे आडम्बरयुक्त ढंग से किसी विधर्मी को अपने में समाहित करने पर किसी अन्य धर्म के अनुयायियों को ख़ुशी होती हो तो हो, इस्लाम का कोई सच्चा अनुयायी इसे कभी स्वीकार नहीं कर सकता ।

धर्म परिवर्तन और इस्लाम

धर्म परिवर्तन के मामले में अगर कोई धर्म सबसे ज़्यादा बदनाम है तो वह इस्लाम धर्म है । भारत के मुस्लिम बादशाहों पर भी इस मामले में दोषारोपण किया जाता रहा है कि उन्होंने तलवार के बल पर बहुसंख्या में हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया और अब ऐसे ही लोगों की ओर से यह प्रोपेगंडा किया जाता है कि मुस्लिम युवक हिन्दू युवतियों को अपने प्रेमजाल में फंसाते हैं और उनसे विवाह करके जबरन उनका धर्मान्तरण करा देते हैं । इसे वे 'लव जिहाद' का नाम देते हैं ।

लेकिन सच तो यह है कि जिस प्रकार मुस्लिम बादशाहों पर लगाया जाने वाला बलात् धर्म परिवर्तन का आरोप आज तक सिद्ध नहीं किया जा सका, उसी प्रकार कथित 'लव जिहाद' का आरोप भी आज तक सिद्ध नहीं किया जा सका है । ऐसी शादियों का मूल कारण क्या होता है, इस पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं ।

रही बात 'लव जिहाद' की तो ऐसा इलज़ाम केवल वही लोग लगा सकते हैं जिनके निकट धर्म विचारधारा का नहीं, बल्कि दमनकारी प्रणाली का नाम हो । जो लोग राम के प्रति मन में श्रद्धाभाव न रखने वालों से भी जबरन 'जय श्री राम' बुलवाकर समझते हों कि उन्होंने बहुत बड़ा धार्मिक कार्य किया है, जो सरस्वती देवी में आस्था न रखने वालों से भी 'सरस्वती वंदना' करने और भारत को देवी न मानने वालों से 'वंदे मातरम' कहलाने का आग्रह करते हों, वे अगर इस्लाम के मानने वालों को भी अपने जैसा समझते हुए 'लव जिहाद' जैसी हास्यास्पद परिभाषाएं गढ़ते हैं तो यह उनके स्वभाव के अनुरूप ही है, इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए ।

जहां तक इस्लाम का संबंध है, उसके मुताबिक़ वही धर्मान्तरण मान्य है, जो बिना किसी जब्र और बिना किसी मजबूरी के, मनो-मस्तिष्क की पूरी स्वीकृति से किया गया हो । इसलिए कि यह अल्लाह और बन्दे के बीच का मामला है और अल्लाह से दिलों का हाल छिपा नहीं है । किसी को दिखाने या किसी को ख़ुश करने के लिए किया गया धर्म परिवर्तन समाज में भले ही स्वीकार हो जाए, अल्लाह के नज़दीक स्वीकार्य नहीं हो सकता ।

समाज की ज़िम्मेदारी

जो लोग विवाह के लिए होने वाले कथित बलात् धर्म परिवर्तन (विशेषकर इस्लाम में हुए धर्म परिवर्तन) को अपने धर्म के लिए ख़तरा मानते हैं, वे इसे क़ानून द्वारा अपराध घोषित कर रोकना चाहते हैं । दूसरी ओर आधुनिक विचार धारा रखने वाला वर्ग ही नहीं, बल्कि सभी निष्पक्ष लोग इस तरह के प्रतिबंध को वैचारिक स्वतंत्रता का हनन मान रहे हैं। महिलाओं के अधिकारों के लिए काम करने वाले लोग इसे महिला विरोधी भी मान रहे हैं, उनका तर्क यह है कि कोई महिला किससे विवाह करे, यह तय करना उसका निजी मामला है, सरकार और क़ानून यह तय करने का अधिकार नहीं रखते । ऐसे में क़ानून द्वारा इस पर प्रतिबंध लगाना किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह ख़ुद संविधान द्वारा दिये गये व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के विरुद्ध होगा ।

इस बारे में इस्लाम का नज़रिया बिल्कुल स्पष्ट है कि वह दिखावे के लिए किये गये धर्म परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता । इसलिए मुस्लिम अभिभावकों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे आधुनिक शिक्षा देने के साथ अपने बच्चों को इस्लामी शिक्षाओं से भी अवगत कराएं, उन्हें इस्लामी सिद्धांतों पर चलने का पाबन्द बनाएं, और उनका ऐसा प्रशिक्षण करें जिससे वे वास्तविक धर्म परिवर्तन और औपचारिक धर्म परिवर्तन के अन्तर को समझ सकें । क़ानूनी तौर पर ऐसे विवाहों को अमान्य या अपराध घोषित करने से यह समस्या समाप्त तो न होगी, हां उन लोगों के लिए एक बड़ी बाधा ज़रूर उत्पन्न हो जाएगी जो वास्तव में किसी धर्म के मूल सिद्धांतों से प्रभावित होकर उसे अपनाना चाहते हैं। प्रतिबंध के समर्थकों का मूल उद्देश्य भी इस बहाने हर प्रकार के धर्म परिवर्तन को रोकना है ।

कहानी

पिता का आशीर्वाद

✍ **प्रवीण कुमार सहगल**

जब मृत्यु का समय सन्निकट आया तो पिता ने अपने एकमात्र पुत्र धर्मपाल को बुलाकर कहा–''बेटा, तुमने हमेशा मेरा कहा माना है और मेरी बहुत सेवा की है । मेरे पास धन संपत्ति नहीं है कि मैं तुम्हें विरासत में दूं, पर मैंने जीवन भर सच्चाई और ईमानदारी से काम किया है तो मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि तुम जीवन में बहुत सुखी रहोगे और धूल को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जाएगी । इस पिता का आशीर्वाद कभी ख़ाली नहीं जाएगा ।'' बेटे ने सिर झुकाकर पिताजी के पैर छुए । पिता ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और संतोष से अपने प्राण त्याग दिये ।

अब घर का ख़र्च बेटे धर्मपाल को संभालना था । उसने एक छोटी-सी ठेला गाड़ी पर अपना व्यापार शुरू किया । धीरे-धीरे व्यापार बढ़ने लगा । एक छोटी-सी दुकान ले ली। व्यापार और बढ़ा । अब नगर के संपन्न लोगों में उसकी गिनती होने लगी । उसको विश्वास था कि यह सब मेरे पिता के आशीर्वाद का ही फल है, क्योंकि उन्होंने जीवन में दुख उठाया, पर कभी धैर्य नहीं छोड़ा, श्रद्धा नहीं छोड़ी, ईमानदारी नहीं छोड़ी । उनकी वाणी में बल था और उनके आशीर्वाद फलीभूत हुए, जिस कारण मैं सुखी हुआ । उसके मुंह से बार-बार यह बात निकलती थी ।



एक दिन एक मित्र ने पूछा कि तुम्हारे पिता में इतना बल था तो वह स्वयं संपन्न क्यों नहीं हुए ? सुखी क्यों नहीं हुए ? धर्मपाल ने कहा कि मैं पिता की ताक़त की बात नहीं कर रहा हूं, मैं उनके आशीर्वाद की ताक़त की बात कर रहा हूं ।

इस प्रकार वह बार-बार अपने पिता के आशीर्वाद की बात करता तो लोगों ने उसका नाम ही रख दिया ''बाप का आशीर्वाद''। धर्मपाल को इससे बुरा नहीं लगता । वह कहता कि मैं अपने पिता के आशीर्वाद के क़ाबिल निकलूं, यही चाहता हूं ।

ऐसा करते हुए कई साल बीत गये । वह विदेशों में व्यापार करने लगा । जहां भी व्यापार करता, उसे बहुत लाभ होता । एक बार उसके मन में आया कि मुझे लाभ ही लाभ होता है तो मैं एक बार नुक़सान का अनुभव करूं । तो उसने अपने एक मित्र से पूछा कि ऐसा व्यापार बताओ कि जिसमें मुझे नुक़सान हो । मित्र को लगा कि इसको अपनी सफलता का और पैसों का घमंड आ गया है । इसका घमंड दूर करने के लिए इसको ऐसा धंधा बताऊं कि इसको नुक़सान ही नुक़सान हो । दोस्त ने सलाह दी कि तुम भारत में लौंग ख़रीदो और जहाज़ में भरकर अफ़्रीक़ा के जंजीबार में जाकर बेचो । धर्मपाल को यह बात ठीक लगी । जंजीबार तो लौंग का देश है । वहां से लौंग भारत में आते हैं और यहां 10-12 गुना भाव पर बिकते हैं । भारत में ख़रीदकर जंजीबार में बेचे तो साफ़ नुक़सान सामने दिख रहा है । परंतु धर्मपाल ने तय किया कि मैं भारत में लौंग ख़रीदकर, जंजीबार ख़ुद लेकर जाऊंगा । देखूं कि पिता का आशीर्वाद कितना साथ देता है ।

नुक़सान का अनुभव लेने के लिए उसने भारत में लौंग ख़रीदे और जहाज़ में भरकर ख़ुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुंचा । जंजीबार में सुल्तान का राज्य था । धर्मपाल जहाज़ से उतरकर लंबे रेतीले रास्ते पर वहां के व्यापारियों से मिलने जा रहा था । उसे सामने से सुल्तान जैसा व्यक्ति पैदल

सिपाहियों के साथ आता हुआ दिखायी दिया । उसने किसी से पूछा कि यह कौन है ? पता चला कि ये यहां के सुल्तान हैं । सुल्तान ने उसको सामने देखकर उसका परिचय पूछा । उसने कहा कि मैं भारत के गुजरात के खंभात का व्यापारी हूं और यहां पर व्यापार करने आया हूं । सुल्तान ने उसको व्यापारी समझकर उसका आदर किया और उससे बात करने लगा ।

धर्मपाल ने देखा कि सुल्तान के साथ सैकड़ों सिपाही हैं, परंतु उनके हाथ में तलवार, बंदूक़ आदि कुछ भी न होकर बड़ी-बड़ी छलनियां है । उसको आश्चर्य हुआ । उसने विनम्रतापूर्वक सुल्तान से पूछा कि आपके सैनिक इतनी छलनी लेकर के क्यों जा रहे हैं ? सुल्तान ने हंसकर कहा कि बात यह है कि आज सवेरे मैं समुद्र तट पर घूमने आया था । तब मेरी उंगली में से एक अंगूठी यहां कहीं निकल कर गिर गयी । अब रेत में अंगूठी कहां गिरी पता नहीं । इसलिए मैं इन सैनिकों को साथ लेकर आया हूं । ये रेत छानकर मेरी अंगूठी उसमें से तलाश करेंगे ।

धर्मपाल ने पूछा–''अंगूठी बहुत महंगी होगी ?''

सुल्तान ने कहा–''नहीं, उससे बहुत अधिक क़ीमत वाली अनगिनत अंगूठी मेरे पास हैं, पर वह अंगूठी एक फ़क़ीर का आशीर्वाद है । मैं मानता हूं कि मेरी सल्तनत इतनी मज़बूत और सुखी उस फ़क़ीर के आशीर्वाद से है । इसलिए मेरे मन में उस अंगूठी का मूल्य सल्तनत से भी ज़्यादा है ।'' इतना कहकर सुल्तान ने फिर पूछा, ''बोलो सेठ, ''इस बार आप क्या माल लेकर आये हो ?''

धर्मपाल ने कहा–''लौंग ।''

''लौंग ?'' सुल्तान के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। ''यह तो लौंग का ही देश है सेठ । यहां लौंग बेचने आये हो ? किसने आपको ऐसी सलाह दी ? ज़रूर वह कोई आपका दुश्मन होगा । यहां तो एक पैसे में मुट्ठी भर लौंग मिलते हैं । यहां लौंग कौन ख़रीदेगा ? और तुम क्या कमाओगे ?''

धर्मपाल ने कहा कि मुझे यही देखना है कि यहां भी मुनाफ़ा होता है या नहीं । मेरे पिता के आशीर्वाद से आज तक मैंने जो धंधा किया, उसमें मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा हुआ । तो अब मैं देखना चाहता हूं कि उनका आशीर्वाद यहां भी फलता है या नहीं ।

सुल्तान ने पूछा–''पिता का आशीर्वाद...? इसका क्या मतलब...?''

धर्मपाल ने कहा कि मेरे पिता जीवन भर ईमानदारी और प्रामाणिकता से काम करते रहे, परंतु धन नहीं कमा सके । उन्होंने मरते समय मुझे भगवान का नाम लेकर मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया था कि तेरे हाथ में धूल भी सोना बन जाएगी । ऐसा बोलते-बोलते धर्मपाल नीचे झुका और ज़मीन की रेत से एक मुट्ठी भरी और सम्राट सुल्तान के सामने मुट्ठी खोलकर उंगलियों के बीच में से रेत नीचे गिरायी तो....धर्मपाल और सुल्तान दोनों का आश्चर्य का पार नहीं रहा । उसके हाथ में एक हीरे जड़ित अंगूठी थी । यह वही सुल्तान की गुम हुई अंगूठी थी ।

अंगूठी देखकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हो गया । बोला, ''वाह ख़ुदा, आपकी करामात का पार नहीं । आप पिता के आशीर्वाद को सच्चा करते हो ।''

धर्मपाल ने कहा कि फ़क़ीर के आशीर्वाद को भी वही परमात्मा सच्चा करता है ।

सुल्तान और ख़ुश हुआ । धर्मपाल को गले लगाया और कहा कि मांग सेठ, आज तू जो मांगेगा मैं दूंगा ।

धर्मपाल ने कहा कि आप 100 वर्ष तक जीवित रहो और प्रजा का अच्छी तरह से पालन करो । प्रजा सुखी रहे । इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए । सुल्तान और अधिक प्रसन्न हो गया । उसने कहा कि सेठ तुम्हारा सारा माल आज मैं ख़रीदता हूं और तुम्हारी मुंहमांगी क़ीमत दूंगा ।

सच ही है कि पिता का आशीर्वाद हो तो दुनिया की कोई ताक़त कहीं भी तुम्हें पराजित नहीं होने देगी । माता और पिता की सेवा का फल निश्चित रूप से मिलता है । आशीर्वाद जैसी और कोई संपत्ति नहीं । ईश्वर का आशीर्वाद फलित होने में वक़्त लग सकता है, लेकिन माता-पिता का आशीर्वाद तुरंत असर दिखाता है । माता-पिता संस्कार देकर संतान को शिष्ट बनाते हैं, उसके लिए अपना सुख-चैन सब लुटा देते हैं । जिन्होंने जिगर का ख़ून देकर पाला, बाहों के झूले में झुलाया, ख़ुद गीले में सोकर बच्चे को सूखे बिस्तर में सुलाया, अपने कंधे पर बिठाया, दुनिया को देखने की व्यवस्था की, वे साधारण नहीं होते । मां-बाप की दुआएं आपको अन्त तक पालती हैं । बालक के मन को जानने वाली मां और भविष्य को संवारने वाले पिता यही दुनिया के दो महान ज्योतिषी हैं, बस इनका सम्मान करो तो तुमको भगवान के पास भी कुछ मांगना नहीं पड़ेगा ।

कहानी

गिरगिट का सपना

✍ **मोहन राकेश**

एक गिरगिट था । अच्छा, मोटा-ताज़ा । काफ़ी हरे जंगल में रहता था । रहने के लिए एक घने पेड़ के नीचे अच्छी-सी जगह बना रखी थी उसने । खाने-पीने की कोई तकलीफ़ नहीं थी । आसपास जीव-जन्तु बहुत मिल जाते थे । फिर भी वह उदास रहता था ।

उसका ख़याल था कि उसे कुछ और होना चाहिए था । और हर चीज़, हर जीव का अपना एक रंग था । पर उसका अपना कोई एक रंग था ही नहीं । थोड़ी देर पहले नीले थे, अब हरे हो गये । हरे से बैंगनी । बैंगनी से कत्थई । कत्थई से स्याह । यह भी कोई ज़िन्दगी थी !

यह ठीक था कि इससे बचाव बहुत होता था । हर देखने वाले को धोखा दिया जा सकता था । ख़तरे के वक़्त जान बचाई जा सकती थी । शिकार की सुविधा भी इसी से थी । पर यह भी क्या कि अपनी कोई एक पहचान ही नहीं ! सुबह उठे, तो कच्चे भुट्टे की तरह पीले और रात को सोये तो भुने शकरकन्द की तरह काले ! हर दो घंटे में ख़ुद अपने ही लिए अजनबी !

उसे अपने सिवा हर एक से ईर्ष्या होती थी । पास के बिल में एक सांप था । ऐसा बढ़िया लहरिया था उसकी खाल पर कि देखकर मज़ा आ जाता था ! आसपास के सब चूहे-चमगादड़ उससे ख़ौफ़ खाते थे । वह ख़ुद भी उसे देखते ही दुम दबाकर भागता था । या मिट्टी के रंग में मिट्टी होकर पड़ रहता था । उसका ज़्यादातर मन यही करता था कि वह गिरगिट न होकर सांप होता, तो कितना अच्छा था ! जब मन आया, पेट के बल रेंग लिए । जब मन आया, कुंडली मारी और फन उठाकर सीधे हो गये ।

एक रात जब वह सोया, तो उसे ठीक से नींद नहीं आयी । दो-चार कीड़े ज़्यादा निगल लेने से बदहज़मी हो गयी थी । नींद लाने के लिए वह कई तरह से सीधा-उलटा हुआ, पर नींद नहीं आयी । आंखों को धोखा देने के लिए उसने रंग भी कई बदल लिए, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ । हलकी-सी ऊंघ आती, पर फिर वही बेचैनी । आख़िर वह पास की झाड़ी में जाकर नींद लाने की एक पत्ती निगल आया । उस पत्ती की सिफ़ारिश उसके एक और गिरगिट दोस्त ने की थी । पत्ती खाने की देर थी कि उसका सिर भारी होने लगा । लगने लगा कि उसका शरीर ज़मीन के अन्दर धंसता जा रहा है । थोड़ी ही देर में उसे महसूस हुआ जैसे किसी ने उसे ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ दिया हो । वह बहुत घबराया । यह उसने क्या किया कि दूसरे गिरगिट के कहने में आकर ख़ाह-मख़ाह वह पत्ती खा ली । अब अगर वह ज़िन्दगी-भर ज़मीन के अन्दर ही दफ़्न रहा तो ?

वह अपने को झटक्कर बाहर निकलने के लिए ज़ोर लगाने लगा । पहले तो उसे कामयाबी हासिल नहीं हुई । पर फिर लगा कि ऊपर ज़मीन पोली हो गयी है और वह बाहर निकल आया है । ज्यों ही उसका सिर बाहर निकला और बाहर की हवा अन्दर गयी, उसने एक और ही अजूबा देखा । उसका सिर गिरगिट के सिर जैसा न होकर सांप के सिर जैसा था । वह पूरा ज़मीन से बाहर आ गया, पर सांप की तरह बल खाकर चलता हुआ । अपने शरीर पर नज़र डाली, तो वही लहरिया नज़र आया जो उसे पास वाले सांप के बदन पर था । उसने कुंडली मारने की कोशिश की, तो कुंडली लग गयी । फ़न उठाना चाहा तो, फ़न उठ गया । वह हैरान भी हुआ और ख़ुश भी । उसकी कामना पूरी हो गयी थी । वह सांप बन गया था ।

सांप बने हुए उसने आसपास के माहौल को देखा । सब चूहे-चमगादड़ उससे खौफ़ खाए हुए थे । यहां तक कि सामने के पेड़ का गिरगिट भी डर के मारे जल्दी-जल्दी रंग बदल रहा था । वह रेंगता हुआ उस इलाक़े से दूसरे इलाक़े की तरफ़ बढ़ गया । नीचे से जो पत्थर-कांटे चुभे, उनकी उसने परवाह नहीं की । नया-नया सांप बना था, सो इन सब चीज़ों को नज़र-अन्दाज़ किया जा सकता था । पर थोड़ी दूर जाते-जाते सामने से एक नेवला उसे दबोचने के लिए लपका, तो उसने सतर्क होकर फन उठा लिया ।

उस नेवले की शायद पड़ोस के सांप से पुरानी लड़ाई थी । सांप बने गिरगिट का मन हुआ कि वह जल्दी से रंग

बदल ले, पर अब रंग कैसे बदल सकता था ? अपनी लहरिया खाल की सारी ख़ूबसूरती उस वक़्त उसे एक शिकंजे की तरह लगी । नेवला फुदकता हुआ बहुत पास आ गया था । उसकी आंखें एक चुनौती के साथ चमक रही थीं । गिरगिट आख़िर था तो गिरगिट ही । वह सामना करने की जगह एक पेड़ के पीछे जा छिपा । उसकी आंखों में नेवले का रंग और आकार बसा था । कितना अच्छा होता अगर वह सांप न बनकर नेवला बन गया होता !

तभी उसका सिर फिर भारी होने लगा । नींद की पत्ती अपना रंग दिखा रही थी । थोड़ी देर में उसने पाया कि जिस्म में हवा भर जाने से वह काफ़ी फूल गया है । ऊपर तो गरदन निकल आयी है और पीछे को झबरैली पूंछ । जब वह अपने को झटक्कर आगे बढ़ा, तो लहरिया सांप एक नेवले में बदल चुका था ।

उसने आसपास नज़र दौड़ाना शुरू किया कि अब कोई सांप नज़र आये, तो उसे वह लपक ले । पर सांप वहां कोई था ही नहीं । कोई सांप निकलकर आये, इसके लिए उसने ऐसे ही उछलना-कूदना शूरू किया । कभी झाड़ियों में जाता, कभी बाहर आता । कभी सिर से ज़मीन को खोदने की कोशिश करता । एक बार जो वह ज़ोर-से उछला तो पेड़ की टहनी पर टंग गया । टहनी का कांटा जिस्म में ऐसे गड़ गया कि न अब उछलते बने, न नीचे आते । आख़िर जब बहुत परेशान हो गया, तो वह मनाने लगा कि क्यों उसने नेवला बनना चाहा । इससे तो अच्छा था कि पेड़ की टहनी बन गया होता । तब न रेंगने की ज़रूरत पड़ती, न उछलने-कूदने की । बस अपनी जगह उगे हैं और आराम से हवा में हिल रहे हैं ।

नींद का एक और झोंका आया और उसने पाया कि सचमुच अब वह नेवला नहीं रहा, पेड़ की टहनी बन गया है । उसका मन मस्ती से भर गया । नीचे की ज़मीन से अब उसे कोई वास्ता नहीं था । वह ज़िन्दगी भर ऊपर ही ऊपर झूलता रह सकता था । उसे यह भी लगा जैसे उसके अन्दर से कुछ पत्तियां फूटने वाली हों । उसने सोचा कि अगर उसमें फूल भी निकलेगा, तो उसका क्या रंग होता ? और क्या वह अपनी मर्ज़ी से फूल का रंग बदल सकेगा ?

पर तभी दो-तीन कौवे उस पर आ बैठे । एक ने उस पर बीट कर दी, दूसरे ने उसे चोंच से कुरेदना शुरू किया । उसे बहुत तकलीफ़ हुई । उसे फिर अपनी ग़लती के लिए पश्चाताप हुआ । अगर वह टहनी की जगह कौवा बना होता तो कितना अच्छा था ! जब चाहो, जिस टहनी पर जा बैठो, और जब चाहो, हवा में उड़ान भरने लगो !

अभी वह सोच ही रहा था कि कौवे उड़ खड़े हुए । पर उसने हैरान होकर देखा कि कौवों के साथ वह भी उसी तरह उड़ खड़ा हुआ है । अब ज़मीन के साथ-साथ आसमान भी उसके नीचे था और वह ऊपर-ऊपर उड़ा जा रहा था । उसके पंख बहुत चमकीले थे । जब चाहो उन्हें झपकाने लगो, जब चाहे सीधे कर लो । उसने आसमान में कई चक्कर लगाए और ख़ूब कांय-कांय की । पर तभी नज़र पड़ी, नीचे खड़े कुछ लड़कों पर जो गुलेल हाथ में लिए उसे निशाना बना रहे थे । पास उड़ता हुआ एक कौवा निशाना बनकर नीचे गिर चुका था । उसने डरकर आंखें मूंद लीं । मन ही मन सोचा कि कितना अच्छा होता अगर वह कौवा न बनकर गिरगिट ही बना रहता ।

पर जब काफ़ी देर बाद भी गुलेल का पत्थर उसे नहीं लगा, तो उसने आंखें खोल लीं । वह अपनी उसी जगह पर था जहां सोया था । पंख-वंख अब ग़ायब हो गये थे और वह वही गिरगिट का गिरगिट था । वहीं चूहे-चमगादड़ आसपास मंडरा रहे थे और सांप अपने बिल से बाहर आ रहा था । उसने जल्दी से रंग बदला और दौड़कर उस गिरगिट की तलाश में हो लिया जिसने उसे नींद की पत्ती खाने की सलाह दी थी । मन में शुक्र भी मनाया कि अच्छा है वह गिरगिट की जगह और कुछ नहीं हुआ, वरना कैसे उस ग़लत सलाह देने वाले गिरगिट को गिरगिटी भाषा में मज़ा चखा पाता !



ईसाइयत : क्या सचमुच ईसा (अलैहि॰) का धर्म है ?

✍ **मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी**

मसीही दुनिया चार शताब्दी पूर्व ज्ञान-विज्ञान से अनभिज्ञ, अज्ञानकाल में डूबी रही होगी । अब वह ज्ञान-विज्ञान के अत्यंत तेज़ प्रकाश में दुनिया का नेतृत्व कर रही है, लेकिन धर्म के मामले में अत्यंत अंधकारमय दौर में है ।

● यह जानती है कि बाइबल मानव वाणी है (ईशवाणी को इसने नष्ट-विनष्ट कर दिया है) फिर भी बाइबल को ईशवाणी (Word of God) समझती है ।

● यह जानती है कि उसका धर्म सेंट पॉल और चर्च का दिया हुआ और बनाया हुआ धर्म है, फिर भी यह उसे ईश्वर प्रदत्त धर्म मानती है ।

● यह जानती है कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) हज़रत मूसा (अलैहि॰) के ईश्वरीय धर्म के पुनर्रोत्थान के लिए आये थे, फिर भी यह हज़रत ईसा (अलैहि॰) को मसीही धर्म का संस्थापक (Founder) मानती है ।

● यह जानती है कि स्वयं बाइबल के अनुसार हज़रत ईसा (अलैहि॰) उपास्य नहीं थे, फिर भी यह उनकी पूजा करती है ।

● यह जानती है कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) बहुदेववाद का खंडन करते थे, फिर भी यह हज़रत मरयम (अलैहि॰) और हज़रत ईसा (अलैहि॰) को अल्लाह का साझी ठहराती है ।

● यह जानती है कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने मूर्ति पूजा की शिक्षा नहीं दी फिर भी यह हज़रत मरयम (अलैहि॰) और हज़रत ईसा (अलैहि॰) की प्रतिमाएं बनाती और उनकी पूजा करती है (इस लेख के साथ संलग्न दो तस्वीरों को देखिये । यहां पॉप फ़्रांसेस हैं और हज़रत ईसा की मूर्ति है)

● इसका जी हज़रत ईसा (अलैहि॰) की मूर्ति से नहीं भरा, तो इसने उनके बचपन की प्रतिमा भी बना ली ।

● यह जानती है कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) इन्सानों के न बनाने वाले थे, न मालिक थे, न पालनहार और आवश्यकताएं पूरी करने वाले, फिर भी यह न केवल हज़रत ईसा (अलैहि॰) से बल्कि बाल मसीह (Infant Jesus) से अपनी आकांक्षाएं और भाग्य का अच्छा-बुरा जोड़ती है । 'बाल मसीह' को शुक्राना पेश करती है कि उन्होंने अपनी सहायता एवं कृपा प्रदान की ।

● यह 'बाल मसीह' से उनकी कृपाएं जारी रखने की दुआएं करती है ।

● यह बाइबल को अपनी किताब मानती है, लेकिन स्वयं बाइबल के विरुद्ध कार्य करती है और ऐसे कृत्यों को ईसा (अलैहि॰) की प्रसन्नता और कृपाओं की प्राप्ति का साधन मानती है ।

● यह हज़रत ईसा (अलैहि॰) से अनुचित एवं अतार्किक अवधारणाएं एवं विचार जोड़ लेती है और फिर कहती है कि इन अवधारणाओं और बातों का संबंध बुद्धि से नहीं, बल्कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) के जीवन के रहस्यों से है ।

● यह शराब पीती, समलैंगिक संबंध रखती, सूअर का मांस खाती और व्यभिचार करती है, फिर भी कहती है कि स्वर्ग ही उसका वास्तविक घर है, क्योंकि उसकी ओर से सूली पर चढ़कर, हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने हमेशा के लिए हर गुनाह और दुष्कर्म का ऐसा प्रायश्चित कर दिया कि अब क़ियामत तक ईसाइयों के लिए कोई भी गुनाह, गुनाह न रह गया ।

निस्संदेह यह ईसाइयत है, लेकिन क्या सचमुच यह ईसा (अलैहि॰) का धर्म है ? और क्या सचमुच ईसा (अलैहि॰) ने इसी की शिक्षा देने धरती पर जन्म लिया था ?



ادارہ دعوۃ القرآن کی اردو کتابیں

''تفسیر دعوۃ القرآن'' تالیف : مولانا شمس پیرزادہؒ

جلد اوّل سورہ فاتحہ تا سورۂ عنکبوت پارہ ۱ تا ۲۰	750/-	جلد دوم سورۂ روم تا سورۂ ناس پارہ ۲۱ تا ۳۰	450/-
ترجمۂ قرآن مجید (دعوۃ القرآن کا اردو ترجمہ مع عربی متن)	300/-	پارۂ عم علیحدہ ۱۶ x ۳۶ x ۲۳ صفحات ۲۸۸	70/-
تفسیر سورہ فاتحہ	8/-		

اس تفسیر کے مراٹھی، گجراتی، ہندی اور انگریزی تراجم بھی دستیاب ہیں۔

دیگر اردو کتابیں

☆ تنویر الحدیث	80/-	☆ جواہر الحدیث	60/-
☆ ابھرتے معاشرتی مسائل	25/-	☆ شادی کے شرعی اور غیر شرعی طریقے	18/-
☆ طلاق کب اور کیسے؟	6/-	☆ اکٹھی تین طلاقیں	10/-
☆ یہ کیسا بگاڑ ہے؟	12/-	☆ یہ کیسی دینداری ہے؟	18/-
☆ کیا قرآن کو سمجھ کر پڑھنا ضروری نہیں؟	6/-	☆ قرآن کا انداز بیان	6/-
☆ موضوع اور ضعیف حدیثوں کا چلن	9/-	☆ حجیت حدیث اور ------	10/-
☆ سنو اپنے رب کی	10/-	☆ رویت ہلال کا مسئلہ	8/-

مولانا ریاض احمد کی تالیفات

☆ اتحاد ملت ضرورت اہمیت اور طریقہ	35/-	☆ محمد ﷺ مشن اور کردار	10/-
☆ اولاد کی تربیت	10/-	☆ بدعت، مبالغہ اور تشدد کا مقام (اللہ۔رسول۔۔۔۔	14/-
☆ فضائل اعمال میں ضعیف احادیث پر عمل کا شرعی حکم	12/-	☆ بدعت کے حق میں مولانا نعمانیؒ کے دلائل کا جائزہ	12/-
☆ دین اسلام میں بدعت اور اجتہاد کا حقیقی محل	15/-	☆ فضائل اعمال (تبلیغی نصاب) ایک جائزہ	16/-
☆ مسنون اذکار و نوافل میں بدعت کی پہچان	12/-	☆ مطالعۂ قرآن کی ضرورت و اہمیت	12/-
☆ اسوۂ رسول اور تزکیۂ نفس	100/-	☆ جادو عقیدہ و عمل کا امتحان	20/-
☆ کفو، برادری واد اور اسلام	8/-	☆ سیاسی و اجتہادی امور اور مولانا مودودی	12/-
☆ تبلیغی اصول، قرآن و حدیث کی روشنی میں	10/-		
☆ فقه الزکوٰۃ تالیف: ڈاکٹر یوسف القرضاوی اردو ترجمہ و تلخیص: شمس پیرزادہؒ	180/-		
☆ عربی ، وجوب تطبیق الشریعة الاسلامیة فی کل زمان و مکان	2/-		

چند کتابوں کے مراٹھی ، گجراتی ،ہندی اور انگریزی تراجم بھی دستیاب ہیں ۔

ادارہ دعوۃ القرآن

۵۹۔ محمد علی روڈ ممبئی ۴۰۰۰۰۳ ☆ فون : ۲۳۴۶۵۰۰۵

Email. dawatulquran@rediffmail.com

अंतरिक्ष से चोरी

दुनिया में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहां कभी चोरी की घटना न हुई हो, लेकिन अब यह जगह भी सुरक्षित नहीं है और यहां भी चोरी की पहली घटना को अंजाम देकर इन्सान ने एक नया इतिहास रचा है । अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा इतिहास के इस पहले अपराध की जांच कर रही है, जिसमें एक महिला अंतरिक्ष यात्री ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से अपने जीवन-साथी की जानकारी चुरा ली और उनके बैंक खाते का विवरण प्राप्त किया । यह धरती के बाहर कहीं भी किया जाने वाला अपनी तरह का पहला अपराध है । अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के अनुसार, एन मैकलीन और समर वार्डन के बीच तलाक़ हो चुकी है और समर वार्डन ने इस घटना के बारे में संघीय व्यापार आयोग में शिकायत दर्ज करायी है, जबकि अंतरिक्ष यात्री एन मैकलीन



ने स्वीकार किया है कि उसने अपने साथी समर वार्डन के बैंक खातों को हैक किया है । मैकलीन का कहना है कि उन्होंने जानकारी प्राप्त कर कुछ भी ग़लत नहीं किया है, जबकि नासा इतिहास में पहले अपराध की जांच कर रहा है ।

छह महीने के बाद अंतरिक्ष से धरती पर लौटीं मैकलीन ने माना है कि अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर सवार होने के दौरान उन्हें वास्तव में खातों तक पहुंच प्राप्त हुई ।

मनुष्य से छिपने वाला पौधा

दक्षिण-पश्चिमी चीन में हिमालय की चोटियों और हैंगडुआन पर्वत के बीच पाए जाने वाले फ्रिटिलारिया नामक पौधों को खोजना बेहद मुश्किल है, जो चट्टानी ज़मीन में छिपे हुए हैं । वे ऐसे दिखते हैं मानो वे मनुष्यों से छिप रहे हों । इस शाकाहारी पौधे की स्थानीय लोगों द्वारा किसी भी अन्य पौधों की तुलना में बड़े पैमाने पर कटाई होती है । विशेषज्ञों का मानना है कि मनुष्यों द्वारा बड़े पैमाने पर इस पौधे की कटाई ने फ्रिटिलारिया को अपने वातावरण में छिपने के लिए अपनी आकृति में परिवर्तन लाने पर मजबूर कर दिया है ।



फ्रेंच नेशनल सेंटर फ़ॉर साइंटिफ़िक रिसर्च के एक विकासवादी जीव विज्ञानी का कहना है कि इस पौधे के विकासवादी चरणों को मनुष्यों द्वारा बदला जा रहा है, जो कि बहुत दिलचस्प है ।

25 साल बाद मिला बटुआ

ऑस्ट्रेलियाई नागरिक, पॉल डेविस ने 25 साल पहले समुद्र तट पर एक पार्टी के दौरान अपना बटुआ खो दिया था जो 25 साल बाद उन्हें वापस मिल गया । जोसेफ़ बीविस नामक एक शख़्स को यह बटुआ समुद्र तट पर मिला । उन्होंने कहा कि वह इस सप्ताह न्यू साउथ वेल्स में समुद्र तट पर थे जब उन्हें एक बटुआ पड़ा हुआ मिला । बटुए की स्थिति को देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे उस पर दशकों बीत गये हों । उन्होंने बटुए की तस्वीर खींचकर सोशल मीडिया पर शेयर की जिसे डेविस की भाभी ने पहचान लिया और अपने देवर को सूचना दी । डेविस का कहना था कि उनके बटुए में बैंक कार्ड मौजूद थे जो एक्सपायर हो चुके थे, लेकिन 55 डॉलर अब भी मौजूद थे ।



ऑक्टोपस मानव के अलावा निस्संदेह दुनिया में सबसे बुद्धिमान और स्मार्ट प्राणियों में से एक है, जबकि ऑक्टोपस के बारे में यह नयी बात पता चली है कि वह अपने आठ भुजाओं से अपने शिकार को चाट कर उसका स्वाद महसूस करता है और इस प्रकार विषाक्त भोजन खाने से बचा रहता है । विशेषज्ञों का कहना है कि समुद्र के विचित्र जीव, ऑक्टोपस के बारे में पता चला है कि यह अपनी भुजाओं से शिकार या भोजन को छूकर उसका स्वाद लेता है, मानो ऑक्टोपस की भुजाएं मानव जीभ की तरह काम आती हैं और वे भोजन को चाटती हैं और भोजन के स्वाद को महसूस करती हैं, जबकि उनकी भुजाओं के अंदर की ओर नर्म उभार होते हैं जो चिपकने का काम करते हैं ।

ऑक्टोपस की भुजाओं के अंदर बड़ी मात्रा में तंत्रिका कोशिकाएं होती हैं और एक ओर ये ख़ुद उस प्राणी को आभास कराती हैं और दूसरी ओर यह बताती हैं कि भोजन उसके लिए अच्छा है या हानिकारक या ज़हरीला । हार्वर्ड विश्वविद्यालय के निकोलस बेलोनो का कहना था कि ऑक्टोपस बिना देखे ही शिकार करते हैं और चट्टानों के छेदों के अंदर अपनी भुजाएं डालकर शिकार को पकड़ लेते हैं ।

निकोलस और उनके शोध सहयोगियों ने सूक्ष्म और आणविक स्तरों के तहत कैलिफ़ोर्निया के दो-स्पॉट ऑक्टोपस की जांच की है और वे कहते हैं कि पहला विचार यह था कि उसके मुंह में जीभ जैसा अंग, रेडियोला, यह काम करता है, लेकिन यह पता चलता है कि रेडियोला दांतों का काम करता है यह भोजन को तोड़ने में भी मदद करता है । याद रहे कि ऑक्टोपस सहित कई समुद्री जानवरों में पानी के भीतर सूंघने वाले अंग होते हैं, जबकि विशेषज्ञों का मानना है कि ऑक्टोपस भी अपनी भुजाओं के अंदर के उभारों के माध्यम से अपने भोजन को महसूस करते हैं और उसका स्वाद लेते हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

Chhattisgarh Leading Tailors & Clothiers




N.Y
KING OF SUITINGS
NU-YORK

Ashirwad Towers, Beside Raj Talkies,
G.E. Road, Raipur-C.G.
Ph. : 2226924 (O), Mumtaz Bhai, Atif : 9685784144

جمال ٹورس اینڈ ٹراویلس

ہندوستان و سعودی حکومت سے منظور شدہ حج و عمرہ ٹور

عمرہ

حج

JAMAL

TOURS & TRAVELS

October Umrah Package

Lucknow - Jeddah - Lucknow

By Saudi Airline

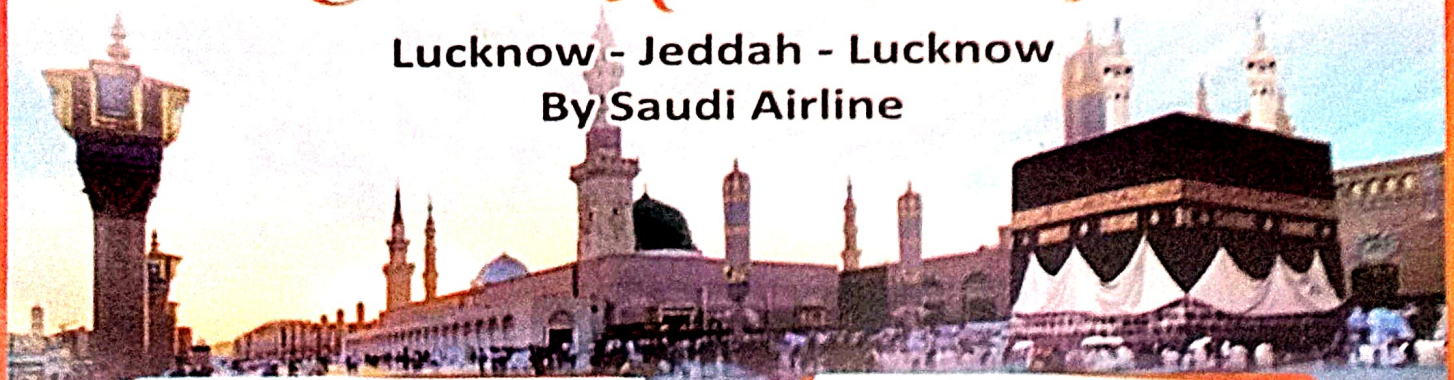

2021 حج

Hotel in Makkah

Distance from Haram - 600 Mtrs.

Hotel in Madinah

Distance from Haram - 250 Mtrs.

Branch Off.: Sarai Meer, Azamgarh, Mau, Shahganj, Sultanpur

Head off.: 108/109, New Poonam Plaza, Naya Nagar,

Mira Road (E) Thane (Maharashtra)-401107

Contact: 9554853186, 9892766882, 7718869778

E-mail: jamaltours@yahoo.com, Website: www.jamaltoursandtravels.com/in

Posted on 20-21 December 2020
January 2021
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.12.2020
Total pages 52 with Cover

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

MUSLIM MATERNITY & CHILDREN'S HOSPIT!L

Hospital is recognized for Post Graduate Courses in DNB Obstetric/Gynec & Paediatrics, Fellowship in Neonatology by IAP, B.Sc Nursing College, MRCOG, MRC PCH, M.D Texila American University .

Osmanpura, Hyderabad-24 Ph:No.040-24522005,24522006,24522008
Hospital with Values, Vision & Mission.

Website: www.muslimmaternityhospital.in E-mail:muslimmaternityhospital@gmail.com

DEPARTMENT OF GYNECOLOGY & OBSTETRICS

SERVICES
•Gynecology •Obstetric •Infertility Clinics

INSTITUTE OF CHILD HEALTH

SERVICES: •NICU •PICU •Kangaroo Mother Care (KMC) for low birth & Premature Babies •Super Speciality Pediatric Services (Pediatric Surgery, Pediatric Cardiology & Pediatric Endocrinology) •Immunization and Circumcision Facilities •Our 40 bedded NICU is well Equipped with infant warmers •Phototherapy Units, Portable X Ray and Ultrasound Machines •HFO Ventilators and CP!P Machines, Laminar Flow work stations •Hepafilters in NICU.

MUSLIM DIAGNOSTIC & RESEARCH LABORATORY

SERVICES:
•Biochemistry •Clinical Pathology •Immunology, Serolog y •Cytopathology • Histopathology •Hormonal Studies by !dvia Centuer CLI!, etc.

Emergency Services: •!ntenatal Scan •Whole !bdo men Scan •Female Pelvic Scan •High Resolution Scan •Colour Doppler Study •Ultra Sound Guided Procedures •Digital X-Ray Facility •TIFF! •Growth Scan.

CIRCUMCISION FACILITY

Monday to Saturday Timings: 2 PM to 5 PM

POLY CLINIC SERVICES

•General Medicine •General Surgery •Orthopedics •Dental Service •Dermatology & Cosmetology •Endocrinology , Pediatric Surgery •Laproscopy •Physiotherapy •Diet & Nutrition

Dr. M.Elias Ali Khan – M.D.
Chief Executive Officer

Under the Management of Islamic Social Society (ISSS)
Regd.No.565/70), Hyderabad

A CHARITABLE INSTITUTION

President	Vice President	Secretrary	Joint Secretary
Hamed Md. Khan	Dr. M.K.M Zafer	Md. Rashad Uddin	Md. Zia Ur Rahman Siddique